सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 157, नई दिल्ली, शुक्रवार 15 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 बहुआयामी है भगवान श्रीकृष्ण का चरित्र.......
06 स्वतंत्रता के बाद से भारत के पुस्तकालय सुधार की महत्वपूर्ण यात्रा
08 झारखंड के 17 पुलिस विभिन्न मेडल से नवाजे जायेंगे स्वतंत्रता दिवस के मौके पर

भारत देश में कार बैटरी और इसीयू यूनिट की बढ़ती चोरियों के मद्देनजर कार निर्माताओं से मांग और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय से अनुरोध

कारों के इंजन बोनट में चोरी-रोधी प्रावधान के साथ इंजन बोनट लॉक की अनिवार्यता

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। भारतीय नागरिकों द्वारा बढ़ती हुई कार बैटरियों और इंजन कंट्रोल यूनिट की चोरियों को मद्देनजर रखते हुए कार निर्माताओं से अनुरोध किया है की वह अपने द्वार निर्मित कारों में चोरी-रोधी प्रावधान वाला इंजन बोनट लॉक लगाने पर विचार करे। यह सुविधा इंजन कम्पार्टमेंट में अनधिकृत पहुँच को रोककर कारों की सुरक्षा को काफ़ी बढ़ा देगी।

मौजूदा डिज़ाइन बोनट को आसानी से खोलने की सुविधा देता है, जिसका फायदा चोर बैटरियाँ और ECU (इंजन कंट्रोल यूनिट) चुराने के लिए उठा रहे हैं। चोरी-रोधी प्रावधान वाला बोनट लॉक लगाकर कार निर्माता ऐसी चोरी के जोखिम को कम करवा सकते हैं और अपने ग्राहकों के वाहनों को सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत प्रदान कर सकते हैं।

यह सुविधा न केवल चोरी रोकेगी, बल्कि कार मालिकों को मानसिक शांति भी प्रदान करेगी। यह आपके द्वारा निर्मित कार को एक मूल्यवान अतिरिक्त सुरक्षा कवच से परिपूर्ण भी करेगा और आपके ब्रांड को उद्योग में दूसरों से अलग बनाएगा।

भारतीय नागरिक इसकी सराहना करेंगे अगर आप अनुरोध पर विचार कर सकें और अपने भविष्य के मॉडलों में इस सुविधा को लागू करने की संभावना के बारे में प्रतिक्रिया दे सकें।

भारतीय नागरिक सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय से भी अनुरोध करते है की सुरक्षा मानक के तहत चोरी-रोधी प्रावधान वाला इंजन बोनट लॉक लगाने के नियमों में ही प्रावधान अनिवार्य करवाकर गैजेट नोटिफिकेशन जारी करे।

जसपाल सिंह, रोहिणी दिल्ली

अपंजीकृत संस्थाओं जिसमे ट्रक चालकों, मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और संबंधित संस्थाओं द्वारा की जा रही अवैध वसूली और कानून-व्यवस्था से खिलवाड़ की सख्त निंदा: "उफ्ततसा" - "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा "ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी" द्वारा जांच व कार्रवाई की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

रायपुर। देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले परिवहन क्षेत्र में अपंजीकृत ट्रक चालक, मालिक, ट्रांसपोर्टर्स और उनसे जुड़ी व प्रतिनिधित्व करती विभिन्न संस्थाएं लगातार कानून-व्यवस्था को चुनौती दे रही हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे एक्स (पूर्व ट्विटर) व्हाट्सअप, फेसबुक, यूट्यूब व अन्य पर कुछ गैर-जिम्मेदार तत्व बिना किसी वैध आधार व बिना सुचना व चेतावनी के हड़तालों की घोषणाएं करके आम जनजीवन को लगातार प्रभावित कर रहे हैं, जो न केवल निंदनीय है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता के लिए पूर्णतः खतरा भी है। कई अपंजीकृत संस्थाओं को जोड़कर देखा जाए तो इनके माध्यम से करोड़ों रुपये की अनाधिकृत और अवैध वसूली का एक बड़ा नेटवर्क उजागर होता है, जो भोले भाले व पीड़ति परिवहन व्यवसाय के विभिन्न धड़ों (ट्रक चालक, ट्रक मालिक व ट्रांसपोर्टर्स) से हजारों नहीं बल्कि लाखों व करोड़ों में कैश, पेटीएम, फोनपे जैसे माध्यमों बिना ऑडिट एकाउन्ट के ही वसुली की है1 जिसकी गहन जांच की तत्काल आवश्यकता है।

यह प्रेस नोट इन संस्थाओं की गतिविधियों पर गहराई से प्रकाश डालता है, जहां ट्रकर्स की वास्तविक समस्याओं (जैसे बकाया भुगतान, खराब सड़कें और ओवरलोडिंग नियम व अन्य) की आड़ में अवैध वसूली और हड़तालों का दुरुपयोग किया जा रहा है। हाल के उदाहरणों से स्पष्ट है कि ये संस्थाएं परिवहन उद्योग की ₹कमजोर आवाज₹ को मजबूत बनाने के नाम पर ईमानदार चालक बंधु (ड्राइवर) ट्रक मालिकों व ट्रांसपोर्टरों को प्रताड़ित कर रही हैं और चंद निचली सरकारी विभागों से मिलीभगत करके अवैध लाभ उठा रही हैं।

प्रमुख मुद्दे और ब्योरे: अपंजीकृत संस्थाओं का प्रसार: देशभर में हजारों अपंजीकृत संस्थाएं सोशियल मिडिया द्वारा संचालित हो रहे हैं उनपर पूर्णतः लगाम लगे व जिम्मेदारी लेने पर ही ग्रुप चलाने की इजाजत हो1

अवैध वसूली का नेटवर्क: करोड़ों की वसूली का पैटर्न स्पष्ट है। उत्तर प्रदेश-बिहार बॉर्डर पर पुलिस स्टेशन द्वारा प्रति ट्रक 500 रुपये वसूले जा रहे हैं, जो मासिक 1.5 करोड़ बनता है। यहाँ अधिकांशतः संस्थाएं अपनी अपनी एंट्री चलाने में व्यस्त हैं न की पूर्णतः बंद कराने में 1 महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में अधिकतर अपंजीकृत संस्थाएं एंट्री पासिंग का खेल खेल रहीं हैं ऐसा लगातार आरोप लगते रहे हैं।

राष्ट्रीय प्रभाव: ये गतिविधियां अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, ओड़िशा और मिजोरम में हाल की हड़तालों ने ईंधन कमी और अनाज डिलीवरी बाधित हुई और संस्थाओं के बंटे होने व अधिकांशतः अपंजीकृत होने के कारण उनकी मांगो को ओउचीत्य नहीं दिया गया1

मांगें:

CBI, ED और स्थानीय पुलिस द्वारा ऐसी संस्थाओं पर उचित निगरानी1

बिना उचित संवेधानिक प्रणाली के ही सोशल मीडिया पर हड़ताल घोषणाओं की मॉनिटरिंग और साइबर सेल द्वारा कार्रवाई "

यह उचित समय है कि सरकार इन माफिया नेटवर्क को तोड़े और परिवहन क्षेत्र को पारदर्शी बनाए। कानून सबके लिए बराबर है – अवैध वसूली रुकनी चाहिए!

जारीकर्ता – उफ्ततसा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा "ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी"

प्रधान सिपाही हरिन्द्र सिंह द्वारा दिल्ली परिवहन विभाग की प्रवर्तन शाखा में गलत तरीके से पदोन्नति देने की शिकायत कराई गई दर्ज

- शिकायतकर्ता ने विभाग के आला अधिकारियों पर भी आरोप लगाए तथा सर्विस बुक के नियमों की अवहेलना का जिक्र भी किया।

- शिकायतकर्ता द्वारा आरटीआई का भी प्रयोग किया गया और सही जवाब नहीं मिलने पर अपील भी दायर की गई है।

परिवहन विशेष न्यूज

निष्कर्ष में प्रधान सिपाही हरिन्द्र सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री टोडा राम, मेरी उपरोक्त शिकायतों पर आज तक कोई जबाब नहीं दिया गया है और आज तक आर आर आर संशोधन नहीं किया गया है और ना ही पे फिक्सिंग की गई है और कोई प्रमोशन नहीं किया गया है, आज तक मेरे को सिपाही पद का वेतन दिया जा रहा हैं। सिपाही चतुर्थ श्रेणी पे ग्रेड 1650 रुपए का कर्मचारी हूं और आर आर संशोधन नहीं किया गया है इस लिए जानबुझकर फर्जीवाड़ा को छिपाने के लिए कोई कारवाई और जांच नहीं कि गई है।

में प्रधान सिपाही मेरा वेतनमान निर्धारित पे फिक्सिंग करके पे ग्रेड 2400 रुपए कर दिया है लिखित रूप में जबाब अवगत करायें और आर आर संशोधन करके वेतनमान निर्धारित करके पे ग्रेड 2400 रुपए आज तक क्यों नहीं किया गया स्पष्ट बताये और लिखित रूप में जबाब से अवगत करायें और आरक्षण ओबीसी और 10 - 20- 30 के अनुसार मेरा प्रमोशन सब इंस्पेक्टर ग्रेड पे 4600 सातवें वेतन कमीशन के अनुसार आज तक मेरा प्रमोशन और पे फिक्सिंग क्यों नहीं कि गई है स्पष्ट बताये और लिखित रूप में जबाब अवगत करायें में हरिन्द्र सिंह आज दिनांक 23/07/2025 को प्रथम अपील वाद दायर कर रहा हूं। अपील का निपटारा जल्द से जल्द करें और आर आर संशोधन करके वेतनमान निर्धारित समय में सब इंस्पेक्टर का प्रमोशन और पे फिक्सिंग सातवें वेतन कमीशन के अनुसार करें और आज तक रुके एरियर का भुगतान करें और निर्धारित समय में अपील का निपटारा करें। और अपील कर्ता के अधिवक्ता की फिस और खर्चा हर्जाना का मुआवजा विभाग द्वारा दिलबाएं यह जबाब देही विभाग के अधिकारियों की थी आर आर संशोधन ग्रुप डी से ग्रुप सी विभागये पदोन्नति और पे फिक्सिंग आज तक नही करना संज्ञेय अपराध है। जांच पड़ताल करके निर्धारित समय में कानूनी कार्यवाही करें और अपील का निपटारा किया जाये।

मेट्रो परियोजना पर बड़ा अपडेट, भुवनेश्वर में बनेगा नया मेट्रो कॉरिडोर

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : भुवनेश्वर मेट्रो परियोजना पर बड़ा अपडेट। मेट्रो कॉरिडोर नए ढाँचे में बनाया जाएगा। इसके लिए एक विशेष तकनीकी समिति का गठन किया जाएगा। यह समिति भारत के विभिन्न शहरों का दौरा कर स्थिति का आकलन करेगी। उनकी रिपोर्ट के आधार पर एक नई परियोजना तैयार की जाएगी। केंद्र को एक औपचारिक प्रस्ताव दिया जाएगा। मेट्रो परियोजना केंद्र सरकार की मदद से बनाई जाएगी। इसमें केंद्रीय तकनीकी टीम की मदद ली जाएगी। शहरी विकास मंत्री कृष्ण चंद्र महापात्र ने इस संबंध में जानकारी दी।

भुवनेश्वर मेट्रो परियोजना पर मंत्रिस्तरीय उप-समिति की दूसरी बैठक हुई। इस बैठक में लिए गए निर्णयों के आधार पर एक व्यापक गतिशीलता योजना तैयार की गई है। किस लाइन पर ट्रैक होगा और पार्किंग क्षेत्र कहाँ होगा, इस पर तकनीकी समिति अपनी रिपोर्ट देगी। आम लोगों की राय भी ली जाएगी।

स्वतंत्रता दिवस को देखते आज सुबह 4 बजे से चलेगी मेट्रो, सुरक्षा कारणों के चलते कई रास्ते भी डायवर्ट

स्वतंत्रता दिवस पर दिल्ली मेट्रो सुबह 4 बजे से शुरू होगी ताकि लोगों को लाल किला और इंडिया गेट पर आयोजित समारोहों में भाग लेने में सुविधा हो। सुरक्षा कारणों से कई रास्तों पर डायवर्जन रहेगा। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी निमंत्रण पत्र धारकों के लिए विशेष क्यूआर टिकट उपलब्ध होंगे। यह सुविधा दिल्ली-एनसीआर के लोगों को स्वतंत्रता दिवस समारोह में आसानी से पहुंचने में मदद करेगी।

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस पर डीएमआरसी अपनी सभी लाइनों पर सुबह चार बजे से ही मेट्रो का परिचालन शुरू करेगा।

सुरक्षा के मद्देनजर इंडिया गेट और लाल किला के आयोजन को लेकर आसपास की कई सड़कों पर डायवर्जन लागू रहेगा।

ऐसे में दिल्ली-एनसीआर के अलग-अलग हिस्सों से कार्यक्रम में शामिल होने वाले अतिथियों, नागरिकों को गंतव्य तक पहुंचने में आसानी होगी। डीएमआरसी के मुताबिक सभी लाइनों पर सभी टर्मिनल स्टेशनों से सुबह चार बजे मेट्रो सेवा शुरू होगी।

वहीं सुबह छह बजे तक सभी लाइनों पर 30 मिनट के अंतराल पर मेट्रो सेवा उपलब्ध रहेंगी। इसके बाद शेष दिन नियमित समय सारिणी के अनुसार सभी रूट पर मेट्रो का परिचालन होगा। इसके अतिरिक्त, जिन लोगों के पास स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किया गया निमंत्रण पत्र होगा।

उन्हें डीएमआरसी द्वारा उपलब्ध कराए गए विशेष क्यूआर टिकटों का उपयोग करके समारोह स्थल तक आने-जाने की सुविधा प्रदान की जाएगी। लाल किला, जामा मस्जिद और दिल्ली गेट मेट्रो स्टेशन समारोह स्थल के सबसे नजदीक हैं।

सीएम रेखा गुप्ता ने की हेलमेट अभियान की शुरुआत, कहा - ट्रैफिक नियम का पालन भी देशभक्ति का अहम हिस्सा

दिल्ली में सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने हेलमेट पहनने के परिणाम अभियान की शुरुआत की। उन्होंने हेलमेट पहनने और यातायात नियमों का पालन करने को देशभक्ति बताया। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को हेलमेट के महत्व को समझाना और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। सरकार सड़क सुरक्षा नियमों को सख्ती से लागू करने के लिए प्रयासरत है।

नई दिल्ली। टू-व्हीलर चलाते समय हेलमेट पहनने की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कनॉट प्लेस से 'हेलमेट पहनने के परिणाम' अभियान का शुभारंभ किया।

इस अभियान के शुभारंभ के अवसर पर परिवहन मंत्री डॉक्टर पंकज कुमार सिंह और सांसद बांसुरी स्वराज समेत कई विशेष अतिथि उपस्थित रहे।

अभियान की शुरुआत के बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सड़क सुरक्षा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हेलमेट पहनने की छोटी सी आदत और ट्रैफिक नियम का कड़ाई से पालन करना भी देशभक्ति का एक अहम हिस्सा है।

उन्होंने कहा कि वाहन चलाते समय सड़क दुर्घटनाएं अचानक होती हैं, लेकिन दोपहिया वाहन चलाते वक्त सिर पर हेलमेट पहनना और उसका स्ट्रैप ठीक से बांधना हमेशा हमारे और आपके हाथ में ही होता है। हेमलेट से गंभीर सड़क दुर्घटना होने पर भी कई बार लोगों की जान बच सकती है।

'हेलमेट पहनने के परिणाम' अभियान शुरू करने का मुख्य उद्देश्य दोपहिया वाहन चलाते वक्त हेलमेट पहनने के महत्व को प्रत्येक नागरिकों को समझाने के साथ ही यह बताना है कि हेलमेट नहीं पहनने की छोटी सी लापरवाही से सड़क दुर्घटना में लगातार वृद्धि हो रही है।

उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल एक आदमी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामूहिक सामाजिक कर्तव्य है। वाहन चलाते वक्त हेलमेट पहनना भले ही एक छोटा-सा कदम है, लेकिन सड़क दुर्घटना के बाद यह जीवन बचाने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

जिसके लिए हमारी सरकार सड़क सुरक्षा नियमों को राजधानी में सख्ती से लागू करने के साथ-साथ जागरूकता फैलाने के लिए भी निरंतर प्रयास करने में जुटी है।

नित्य पाठ के लिए भगवान शिव का नामावली अष्टक

संसार में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जो स्तुति से प्रसन्न न हो जाता हो। भगवान शिव आशुतोष (शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले) हैं। अतः यदि उनके विभिन्न नामों के साथ उनकी आराधना की जाए तो वे शीघ्र ही प्रसन्न होकर आराधक को सांसारिक पीड़ाओं से मुक्त कर मनवांछित वस्तु प्रदान कर देते हैं। भगवान शिव का नामावल्यष्टक (नामावली का अष्टक) श्रीशंकराचार्यजी द्वारा रचित एक ऐसा ही सुन्दर स्तोत्र है जिसके आठ पदों में भगवान शिव के विभिन्न नामों का गान कर सांसारिक दुःखों से रक्षा की प्रार्थना की गई है और नवें पद में उन्हें वंदन किया गया है। श्रद्धा भक्ति से किए गए इस स्तोत्र के नित्य पाठ से भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होकर आराधक का कल्याण कर देते हैं।

सांसारिक दुःखों से मुक्ति के लिए भगवान शिव का नामावली अष्टक

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।१।।

हे चन्द्रचूड! (चन्द्रमा को सिर पर धारण करने वाले), हे मदनान्तक! (कामदेव को भस्म कर देने वाले), हे शूलपाणे! हे स्थाणो! (सदा स्थिर रहने वाले), हे गिरीश तथा गिरिजापते, हे महेश, हे शम्भो, हे भूतेश, जरा, मृत्यु आदि से भयभीत की रक्षा करने वाले, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।२।।

हे माता पार्वती के हृदयेश्वर! हे चन्द्रमौले! हे भूताधिप! हे प्रमथ (रुण्ड-मुण्ड-तुण्ड) गणों के स्वामिन्! गिरिजा का पालन करने वाले, हे वामदेव, हे भव, हे रुद्र, हे पिनाकपाणे, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पंचवक्त्र
लोकेश शेषवलयं प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।। ।।

हे नीलकण्ठ, हे वृषकेतु, हे पंचमुख, हे लोकेश, शेष का कंगण धारण करने वाले! हे प्रमथगणों के स्वामी, हे शर्व, हे धूर्जटे, हे पशुपते, हे गिरिजापते, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

हे विश्वनाथ शिव शंकर देवदेव
गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।४।।

हे विश्वनाथ, हे शिव, हे शंकर, हे देवाधिदेव, हे गंगा को धारण करने वाले, हे प्रमथगणों के स्वामी, हे नन्दीश्वर, हे बाणेश्वर, हे अन्धकासुर के विनाशक, हे हर, हे लोकनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।५।।

हे वाराणसी नगरी के स्वामिन्, हे मणिकर्णिकेश, हे वीरेश, हे दक्षयज्ञ के विध्वंसक, हे विभो, हे गणेश, हे सर्वज्ञ, हे सर्वान्तरात्मन्, हे नाथ! हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्मांगराग नृकपालकलापमाल
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।६।।

हे श्रीमान्महेश्वर, हे कृपामय, हे दयालो, हे व्योमकेश (आकाश ही है केश जिनका), हे नीलकण्ठ, हे गणाधिनाथ, हे भस्म को अंगराग बनाने वाले, मनुष्यों के कपालसमूह की माला धारण करने वाले, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युंजय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।७।।

हे कैलासशैल पर निवास करने वाले, हे वृषाकपे, हे मृत्युंजय, हे त्रिनयन, हे तीनों लोकों में निवास करने वाले, हे नारायणप्रिय, हे अहंकार को नष्ट करने वाले, हे शक्तिनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

विश्वेश विश्वभवनाशक विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।
हे विश्वबन्धु करुणामय दीनबन्धो
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष।।८।।

हे विश्वेश, हे संसार के जन्म-मरण के चक्र को दूर करने वाले, हे विश्वरूप, हे विश्वात्मन्, हे त्रिभुवन के समस्त गुणों से परिपूर्ण, हे विश्वबन्धो, हे करुणामय, हे दीनबन्धो! हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दुःखों से मेरी रक्षा कीजिए।

गौरीविलासभवनाय महेश्वराय
पंचाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय।।९।।

भगवती पार्वती के विलास के आधार महेश्वर के लिए, पंचानन के लिए, शरणागतों के रक्षक के लिए, शर्व–शम्भु के लिए, सम्पूर्ण जगत्पति के लिए एवं दारिद्रय तथा दुःख को भस्म करने वाले भगवान शिव के लिए मेरा नमस्कार है।

।। इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं शिवनामावल्यष्टकं सम्पूर्णम् ।।

जीवनदायिनी सांस्कृतिक शक्ति

गाय को 'माता' क्यों कहा गया है? यह प्रश्न केवल धार्मिक नहीं, सांस्कृतिक और भावनात्मक भी है। भारतीय संस्कृति में गाय को माता इसलिए माना गया क्योंकि वह न केवल दूध देती है, बल्कि गोबर, गौमूत्र, और अपने वात्सल्य से पूरे परिवार को पोषित करती है। जैसे माँ अपने बच्चे को बिना स्वार्थ के देती है, वैसे ही गाय भी मानव जाति को देती है — अन्न के लिए खेत में खाद, स्वास्थ्य के लिए औषध, पर्यावरण के लिए शुद्धता और संस्कृति के लिए श्रद्धा। वेदों में भी गौ माता को ₹धेनुः₹ अर्थात संपदा की जननी कहा गया है। पूजा, यज्ञ, संस्कार — सभी में गाय का महत्त्व सर्वोच्च है। यही कारण है कि भारतवर्ष में गाय को 'माता' का स्थान दिया गया है — एक ऐसी माता जो मानवता को आधार देती है। सनातन संस्कृति की आधारशिला।

नंदी के कान में क्यों बोली जाती है मनोकामना? जानिए इसके पीछे का रहस्य

जब भी हम किसी शिव मंदिर जाते हैं तो अक्सर देखते हैं कि कुछ लोग शिवलिंग के सामने बैठे नंदी के कान में अपनी मनोकामना कहते हैं।

यह एक परंपरा बन गई है इस परंपरा के पीछे की वजह एक मान्यता है आज हम आपको उसी के बारे में बता रहे है,

मान्यता है की जहां भी शिव मंदिर होता है, वहां नंदी की स्थापना जरूर की जाती है क्योंकि नंदी भगवान शिव के परम भक्त हैं। जब भी कोई व्यक्ति शिव मंदिर में आता है तो वह नंदी के कान में अपनी मनोकामना कहता है।

इसके पीछे की मान्यता है भगवान शिव तपस्वी हैं और वे हमेशा समाधि में रहते हैं। ऐसे में उनकी समाधि और तपस्या में कोई विघ्न ना आए इसलिए नंदी से अपनी

मनोकामना कही जाती है ताकि समाधि से उठने पर नन्दी ही हमारी मनोकामना शिवजी तक पहुंचा सकें।

इसी मान्यता के चलते लोग नंदी के कान में अपनी मनोकामना कहते हैं।

शिव के ही अवतार हैं नंदी;
शिलाद नाम के एक मुनि थे,
जो ब्रह्मचारी थे। वंश समाप्त होता देख उनके पितरों ने उनसे संतान उत्पन्न करने को कहा।

शिलाद मुनि ने संतान भगवान शिव की भक्ति कर प्रसन्न करके अयोनिज और मृत्युहीन पुत्र मांगा। भगवान शिव ने शिलाद मुनि को ये वरदान दे दिया। एक दिन जब शिलाद मुनि भूमि जोत रहे थे उन्हें एक बालक मिला। शिलाद ने उसका नाम नंदी रखा। एक दिन मित्र और वरुण नाम के दो मुनि शिलाद के आश्रम आए उन्होंने बताया कि नंदी अल्पायु हैं। यह सुनकर नंदी महादेव की आराधना करने लगे प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और कहा कि तुम मेरे ही अंश हो इसलिए तुम्हें मृत्यु से भय कैसे हो सकता है?

ऐसा कहकर भगवान शिव ने नंदी का अपना गणाध्यक्ष भी बनाया।

हर हर महादेव
ॐ नन्दीश्वराय नमः

मणिकर्णिका घाट की परंपरा और शतपथ जीवन की अवधारणा

क्यों लिखते हैं चिता भस्म पर 94

काशी में मणिकर्णिका घाट पर चिता जब शांत हो जाती है तब मुखाग्नि देने वाला व्यक्ति चिता भस्म पर 94 लिखता है। यह सभी को नहीं मालूम है। खांटी बनारसी लोग या अगल बगल के लोग ही इस परम्परा को जानते हैं। बाहर से आये शवदाहक जन इस बात को नहीं जानते।

जीवन के शतपथ होते हैं। 100 शुभ कर्मों को करने वाला व्यक्ति मरने के बाद उसी के आधार पर अगला जीवन शुभ या अशुभ प्राप्त करता है। 94 कर्म मनुष्य के अधीन हैं। वह इन्हें करने में समर्थ है पर 6 कर्म का परिणाम ब्रह्मा जी के अधीन होता है।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश- अपयश ये 6 कर्म विधि के नियंत्रण में होते हैं। अतः आज चिता के साथ ही तुम्हारे 94 कर्म भस्म हो गये। आगे के 6 कर्म अब तुम्हारे लिए नया जीवन सृजित करेंगे।

अतः 100 - 6 = 94 लिखा जाता है।

गीता में भी प्रतिपादित है कि मृत्यु के बाद मन अपने साथ 5 ज्ञानेन्द्रियों को लेकर जाता है। यह संख्या 6 होती है।मन और पांच ज्ञान इन्द्रियाँ।

अगला जन्म किस देश में कहाँ और किन लोगों के बीच होगा यह प्रकृति के अतिरिक्त किसी को ज्ञात नहीं होता है। अतः 94 कर्म भस्म हुए 6 साथ जा रहे हैं।

विदा यात्री तुम्हारे 6 कर्म तुम्हारे साथ हैं।

आपके लिए इन 100 शुभ कर्मों का विस्तृत विवरण दिया जा रहा है ', जो जीवन को धर्म और सत्कर्म की ओर ले जाते हैं एवं यह सूची आपके जीवन को सत्कर्म करने की प्रेरणा देगी।)

100 शुभ कर्मों की गणना

धर्म और नैतिकता के कर्म (1-20)

1.सत्य बोलना
2.अहिंसा का पालन
3.चोरी न करना
4.लोभ से बचना
5.क्रोध पर नियंत्रण
6.क्षमा करना
7.दया भाव रखना
8.दूसरों की सहायता करना
9.दान देना (अन्न, वस्त्र, धन)
10.गुरु की सेवा
11.माता-पिता का सम्मान
12.अतिथि सत्कार
13.धर्मग्रंथों का अध्ययन
14.वेदों और शास्त्रों का पाठ
15.तीर्थ यात्रा करना
16.यज्ञ और हवन करना
17.मंदिर में पूजा-अर्चना
18.पवित्र नदियों में स्नान
19.संयम और ब्रह्मचर्य का पालन
20.नियमित ध्यान और योग

सामाजिक और पारिवारिक कर्म (21-40)

21.परिवार का पालन-पोषण
22.बच्चों को अच्छी शिक्षा देना
23.गरीबों को भोजन देना
24.रोगियों की सेवा
25.अनाथों की सहायता
26.वृद्धों का सम्मान
27.समाज में शांति स्थापना
28.झूठे वाद-विवाद से बचना
29.दूसरों की निंदा न करना
30.सत्य और न्याय का समर्थन
31.परोपकार करना
32.सामाजिक कार्यों में भाग लेना
33.पर्यावरण की रक्षा
34.वृक्षारोपण करना
35.जल संरक्षण
36.पशु-पक्षियों की रक्षा
37.सामाजिक एकता को बढ़ावा देना
38.दूसरों को प्रेरित करना
39.समाज में कमजोर वर्गों का उत्थान
40.धर्म के प्रचार में सहयोग

आध्यात्मिक और व्यक्तिगत कर्म (41-60)

41.नियमित जप करना
42.भगवान का स्मरण
43.प्राणायाम करना
44.आत्मचिंतन
45.मन की शुद्धि
46.इंद्रियों पर नियंत्रण
47.लालच से मुक्ति
48.मोह-माया से दूरी
49.सादा जीवन जीना
50.स्वाध्याय (आत्म-अध्ययन)
51.संतों का सान्निध्य
52.सत्संग में भाग लेना
53.भक्ति में लीन होना
54.कर्मफल भगवान को समर्पित करना
55.तृष्णा का त्याग
56.ईर्ष्या से बचना
57.शांति का प्रसार
58.आत्मविश्वास बनाए रखना
59.दूसरों के प्रति उदारता
60.सकारात्मक सोच रखना

सेवा और दान के कर्म (61-80)

61.भूखों को भोजन देना
62.नग्न को वस्त्र देना
63.बेघर को आश्रय देना
64.शिक्षा के लिए दान
65.चिकित्सा के लिए सहायता
66.धार्मिक स्थानों का निर्माण
67.गौ सेवा
68.पशुओं को चारा देना
69.जलाशयों की सफाई
70.रास्तों का निर्माण
71.यात्री निवास बनवाना
72.स्कूलों को सहायता
73.पुस्तकालय स्थापना
74.धार्मिक उत्सवों में सहयोग
75.गरीबों के लिए निःशुल्क भोजन
76.वस्त्र दान
77.औषधि दान
78.विद्या दान
79.कन्या दान
80.भूमि दान

नैतिक और मानवीय कर्म (81-94)

81.विश्वासघात न करना
82.वचन का पालन
83.कर्तव्यनिष्ठा
84.समय की प्रतिबद्धता
85.धैर्य रखना
86.दूसरों की भावनाओं का सम्मान
87.सत्य के लिए संघर्ष
88.अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना
89.दुखियों के आँसू पोंछना
90.बच्चों को नैतिक शिक्षा
91.प्रकृति के प्रति कृतज्ञता
92.दूसरों को प्रोत्साहन
93.मन, वचन, कर्म से शुद्धता
94.जीवन में संतुलन बनाए रखना

विधि के अधीन 6 कर्म (95-100)

95.हानि
96.लाभ
97.जीवन
98.मरण
99.यश
100.अपयश

94 कर्म मनुष्य के नियंत्रण में:- ₹ उपरोक्त सूची में 1 से 94 तक के कर्म वे हैं, जो मनुष्य अपने विवेक, इच्छाशक्ति, और प्रयास से कर सकता है। ये कर्म धर्म, सत्य, और नैतिकता पर आधारित हैं, जो जीवन को सार्थक बनाते हैं।

6 कर्म विधि के अधीनः अंतिम 6 कर्म (हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश) मनुष्य के नियंत्रण से बाहर हैं। इन्हें भाग्य, प्रकृति, या ईश्वर की इच्छा के अधीन माना जाता है।

।। श्रीहरिविष्णु- स्तोत्र ।। (हिंदीअर्थ सहित)

जगत के पालनहार भगवान श्रीहरिविष्णु को समर्पित इस स्तोत्र की रचना श्री आचार्य ब्रह्मानंद के द्वारा की गई है।

इस स्तोत्र को भगवान श्रीहरि विष्णु की उपासना के लिए सबसे शक्तिशाली मंत्र कहा गया है। श्री हरि स्तोत्र के नियमित पाठ करने से भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी का भी आशीर्वाद मिल जाता है।

श्रीहरि स्तोत्र भगवान विष्णु के बारे में बताता है, उनके आकार, प्रकार, उनके स्वरूप, उनके पालक गुण और रक्षात्मक रूप को सामने रखता है। भगवान हरि का यह अष्टक जो कि मुरारी के कंठ की माला के समान है, जो भी इसे सच्चे मन से पढ़ता है वह वैकुण्ठ लोक को प्राप्त होता है। वह दुख, शोक, जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है।

।। श्रीहरिविष्णुस्तोत्र ।।
(हिंदीअर्थ सहित)

जगज्जाल-पालं चलत्कण्ठ-मालं, शरच्चन्द्रभालं महादैत्य-कालं।
नभो-नीलकायं दुरावार-मायं, सुपद्मा-सहायम् भजेऽहं भजेऽहं।।
सदाम्भोधि-वासं गलत्पुष्प-हासं, जगत्सन्निवासं शतादित्य-भासं।
गदाचक्र-शस्त्रं लसत्पीत-वस्त्रं, हसच्चारु-वक्त्रं भजेऽहं भजेऽहं।।
रमाकण्ठ-हारं श्रुतिव्रात-सारं, जलान्त-र्विहारं धराभार-हारं।
चिदानन्द-रूपं मनोज्ञ-स्वरूपं, ध्रुतानेक-रूपं भजेऽहं भजेऽहं।।
जराजन्म-हीनं परानन्द-पीनं, समाधान-लीनं सदैवा-नवीनं।
जगज्जन्म-हेतुं सुरानीक-केतुं, त्रिलोकै-कसेतुं भजेऽहं भजेऽहं।।
कृताम्नाय-गानं खगाधीश-यानं, विमुक्ते-र्निदानं हराराति-मानं।
स्वभक्तानु-कूलं जगद्वृरुक्ष-मूलं, निरस्तार्त-शूलं भजेऽहं भजेऽहं।।
समस्ताम-रेशं द्विरेफाभ-केशं, जगद्बिम्ब-लेशं हृदाकाश-देशं।
सदा दिव्य-देहं विमुक्ता-खिलेहं, सुवैकुण्ठ-गेहं भजेऽहं भजेऽहं।।
सुरालि-बलिष्ठं त्रिलोकी-वरिष्ठं, गुरूणां गरिष्ठं स्वरूपै-कनिष्ठं।
सदा युद्ध-धीरं महावीर-वीरं, महाम्भोधि-तीरं भजेऽहं भजेऽहं।।
रमावाम-भागं तलानग्र-नागं, कृताधीन-यागं गताराग-रागं।
मुनीन्द्रैः सुगीतं सुरैः संपरीतं, गुणौधैर-तीतं भजेऽहं भजेऽहं।।

फलश्रुति-

इदं यस्तु नित्यं समाधाय चित्तं, पठेदष्टकं कण्ठ-हारम् मुरारेः।
स विष्णोर्वि-शोकं ध्रुवं याति लोकं, जराजन्म-शोकं पुनर्विन्दते नो।।

भावार्थ-

जो समस्त जगत के रक्षक हैं, जो गले में चमकता हार पहने हुए है, जिनका मस्तक शरद ऋतु में चमकते चन्द्रमा की तरह है और जो महादैत्यों के काल हैं। आकाश के समान जिनका रंग नीला है, जो अजय मायावी शक्तियों के स्वामी हैं, देवी लक्ष्मी जिनकी साथी हैं उन भगवान विष्णु को मैं बारंबार भजता हूँ।

जो सदा समुद्र में वास करते हैं, जिनकी मुस्कान खिले हुए पुष्प की भांति है, जिनका वास पूरे जगत में है, जो सौ सूर्यों के समान प्रतीत होते हैं। जो गदा, चक्र और शस्त्र अपने हाथों में धारण करते हैं, जो पीले वस्त्रों में सुशोभित हैं और जिनके सुंदर चेहरे पर प्यारी मुस्कान हैं, उन भगवान विष्णु को मैं बारंबार भजता हूँ।

जिनके गले के हार में देवी लक्ष्मी का चिन्ह बना हुआ है, जो वेद वाणी के सार हैं, जो जल में विहार करते हैं और पृथ्वी के भार को धारण करते हैं। जिनका सदा आनंदमय रूप रहता है और मन को आकर्षित करता है, जिन्होंने अनेकों रूप धारण किये हैं, उन भगवान विष्णु को मैं बारम्बार भजता हूँ।

जो जन्म और मृत्यु से मुक्त हैं, जो परमानन्द से भरे हुए हैं, जिनका मन हमेशा स्थिर और शांत रहता है, जो हमेशा नूतन प्रतीत होते हैं। जो इस जगत के जन्म के कारक हैं। जो देवताओं की सेना के रक्षक हैं और जो तीनों लोकों के बीच सेतु हैं। उन भगवान विष्णु को मैं बारंबार भजता हूँ।

जो वेदों के गायक हैं। पक्षीराज गरुड़ की जो सवारी करते हैं। जो मुक्तिदाता हैं और शत्रुओं का जो मान हरते हैं। जो भक्तों के प्रिय हैं, जो जगत रूपी वृक्ष की जड़ हैं और जो सभी दुखों को निरस्त कर देते हैं। मैं उन भगवान विष्णु को बारम्बार भजता हूँ।

जो सभी देवताओं के स्वामी हैं, काली मधुमक्खी के समान जिनके केश का रंग है, पृथ्वी जिनके शरीर का हिस्सा है और जिनका शरीर आकाश के समान स्पष्ट है। जिनका शरीर सदा दिव्य है, जो संसार के बंधनों से मुक्त हैं, बैकुंठ जिनका निवास है, मैं उन भगवान विष्णु को बारम्बार भजता हूँ।।

जो देवताओं में सबसे बलशाली हैं, त्रिलोकों में सबसे श्रेष्ठ हैं, जिनका एक ही स्वरूप है, जो युद्ध में सदा विजय हैं, जो वीरों में वीर हैं, जो सागर के किनारे पर वास करते हैं, उन भगवान विष्णु को मैं बारंबार भजता हूँ।

जिनके बाईं ओर लक्ष्मी विराजित होती हैं। जो शेषनाग पर विराजित हैं। जो राग-रंग से मुक्त हैं। ऋषि-मुनि जिनके गीत गाते हैं। देवता जिनकी सेवा करते हैं और जो गुणों से परे हैं। मैं उन भगवान विष्णु को बारम्बार भजता हूँ।

भगवान हरि का यह अष्टक जो कि मुरारी के कंठ की माला के समान है,जो भी इसे सच्चे मन से पढ़ता है वह वैकुण्ठ लोक को प्राप्त होता है। वह दुख, शोक, जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है।

पित्ताशय पथरी में दर्द की स्थिति

पित्त की थैली में पथरी (Gallstone) होने पर यदि दर्द की स्थिति उत्पन्न हो (विशेषकर दाईं पसली के नीचे, पीठ/कंधे में फैलता हुआ, भोजन के बाद अधिक), तो आयुर्वेद में दर्द निवारण (Shoolprashaman) हेतु तत्काल व सौम्य उपाय उपलब्ध हैं — विशेषकर बच्चों के लिए।

1- दर्द की स्थिति (Gallstone Colic) में, प्रथम उपचार लक्ष्य -------

(1) पित्त का तेज स्राव शांत करना।

(2) यकृत व पित्ताशय पर दबाव कम करना।

(3) दर्दनाशक, शूलहर औषधियों का उपयोग।

(4) संभावित वमन, अपच या पसीने को ध्यान में रखकर, सहायक औषधियाँ।

2- 11 वर्षीय बच्चे हेतु सुरक्षित व प्रभावी आयुर्वेदिक दर्द निवारक उपचार -------

(1) शूलवरजिनी वटी/ 1 गोली/ गर्म जल के साथ, आवश्यकता अनुसार, दिन में 2 बार।

कार्य ---- तीव्र शूल (दर्द), पेट की ऐंठन और पित्तजन्य उदर पीड़ा में शीघ्र आराम मिलता है।

(2) अजमोदा-अर्जुनादि काढ़ा या सौंफ-पिप्पली क्वाथ (समान भाग)/ 20 ml काढ़ा + 20 ml गर्म पानी के साथ/ भोजन के बाद, दिन में 2 बार/

कार्य ----- आँतों की ऐंठन, पाचन विकृति और दर्द को शांत करता है।

(3) हल्का तिल तैल + हींग + अजवाइन का उदर मालिश तैल।

विधि -------

* 2 चम्मच तिल तेल गरम करें।

* उसमें 1 चुटकी हींग और ½ चम्मच अजवाइन डालें।

* थोड़ा ठंडा करके, नाभि के आसपास और दाएं पसली क्षेत्र पर हल्के हाथ से मालिश करें।

कार्य ------ पित्त के प्रवाह को सहज करता है, शूल कम करता है।

(4) गर्म पानी की बोतल से सिंकाई ------

* 5–10 मिनट तक दाएं ऊपरी पेट पर।

* त्वरित शांति और स्नायु शिथिलता।

(5) सहायक उपाय (दर्द अधिक हो तो) ------

उपाय/ विधि------

(1) नींबू रस + शहद (1:1)/ सुबह-शाम/ 1 चम्मच – पित्त को शांत करता है।

(2) त्रिफला क्वाथ (गुनगुना)/ रात्रि में/ 20 ml — मल को शिथिल करता है, आंतों में दबाव कम करता है।

3- दर्द में वर्जित बातें ------

(1) पूर्ण उपवास नहीं (हल्का भोजन देना आवश्यक)।

(2) फ्रिज का पानी, ठंडी छाछ, तले-भुने पदार्थ।

(3) घबराना या अचानक लेट जाना।

4- यदि दर्द बार-बार हो रहा हो या बढ़ता जाए तो ---

(1) तत्काल अल्ट्रासाउंड / चिकित्सकीय सलाह लें — संभवतः पथरी पित्त नली में आकर अटक रही हो।

(2) भोजन में, एकदम वसा न दें — पित्त का बहाव तेज होता है, जिससे दर्द और बढ़ सकता है।

गुर्दे की पथरी

शरीर का शोधन समय-समय पर न करने, कुपथ्य और कफवर्धक आहार का सेवन करने, मूत्र के वेगों को रोकने से गुर्दे में पथरी उत्पन्न होती है। जब यह पथरी टूटकर मूत्रवह स्रोतस् में अटकती है तब मूत्रावरोध में रुकावट होने के साथ-साथ भयंकर पीड़ा होती है।

सरल उपचार.

1. गोखरू 10 ग्राम, ककड़ी के बीज ३ ग्राम पीसकर सुबह-शाम पीने से २१ दिन में पथरी गलकर निकल जायेगी।

२. २० ग्राम कुल्थी को २५० मि.लि. पानी में औटायें, जब 80 मि.लि. पानी रह जाय तो उतारकर छानकर ठण्डा कर आधा-आधा सुबह-शाम 40 दिन लगातार पीने से पथरी टूट-टूटकर निकल जाती है।

३. पपीते की जड़, 10 ग्राम पानी के साथ पीसकर सुबह-शाम पियें कुछ दिन लगातार सेवन करने से पथरी टूट-टूटकर निकल जाती है।

भारत भर में 12 ज्योतिर्लिंग मंदिर जहां हर हिंदू को जीवन में एक बार अवश्य जाना चाहिए

भारत भर में 12 ज्योतिर्लिंग मंदिर जहां हर हिंदू को जीवन में एक बार अवश्य जाना चाहिए

1.Shree Somnath Jyotirling Temple, Gujarat.

सोमनाथ — जहां से शिव भक्ति की शुरुआत होती है, वहीं से सृष्टि को दिशा मिलती है।

2. Sri Bhramaramba Mallikarjuna Temple at Srisailam, Andhra Pradesh.

मल्लिकार्जुन — माँ-पिता के दर्शन को आए शिव, हर संतति के लिए आदर्श।

3. Mahakaleshwar Jyotirlinga in Ujjain Madhya Pradesh.

महाकाल — जो मृत्यु को भी जीत जाए, वही असली काल है।

4. Shri Omkareshwar Jyotirlinga in Khandwa, Madhya Pradesh.

ओंकारेश्वर — ओम् से उत्पन्न, शिव का अद्भुत अखंड रूप।

5. Shree Kedarnath Mahadev Mandir, Uttarakhand.

केदारनाथ — हिमालय में तपस्वी, जहां हर साँस शिव से मिलती है।

6. Bhimashankar Jyotirlinga in Maharashtra.

भीमाशंकर — जहां शिव ने त्रिपुरासुर का अंत किया, वहीं से धर्म की विजय हुई।

7. Kashi Vishwanath Mandir, Uttar Pradesh.

काशी विश्वनाथ — मृत्यु भी जिसे मोक्ष बना दे, वह शिव ही हो सकते हैं।

8. Trimbakeshwar Jyotirlinga Mandir in Nasik, Maharashtra.

त्र्यंबकेश्वर — गंगा की उत्पत्ति भी जहां शिव की कृपा से हुई।

9. Baidyanath Jyotirlinga in Deoghar, Jharkhand.

वैद्यनाथ — जहां शिव स्वयं वैद्य बनकर पीड़ा हर लेते हैं।

10. Nageshwar Jyotirlinga in Dwarka, Gujarat.

नागेश्वर — सर्पों के स्वामी, जहाँ भय भी पूजनीय हो गया।

11.Ramanathaswamy Jyotirlinga in Rameshwaram, Tamil Nadu.

रामेश्वरम — श्रीराम द्वारा पूजित शिव, आस्था और शक्ति का संगम।

12.Grishneswar Jyotirlinga Temple, Chhatrapati Sambhajinagar, Maharashtra.

घृष्णेश्वर — सबसे अंतिम ज्योतिर्लिंग, पर भक्ति में सबसे पहला।

12 Jyotirlingas of Lord Shiva Divine lights that illuminate the soul.

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्मरण के लिए स्तोत्र

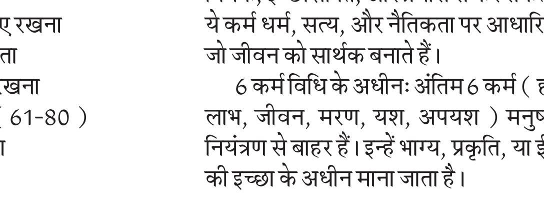

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारं ममलेश्वरम्॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

अर्थः
सौराष्ट्र में सोमनाथ
श्रीशैल में मल्लिकार्जुन
उज्जैन में महाकाल
ओंकारेश्वर साथ मै ममलेश्वर
परली में वैद्यनाथ
डाकिनी में भीमशंकर
सेतुबंध में रामेश्वर
दारुकावन में नागेश्वर
वाराणसी में विश्वेश्वर
गौतमी तट पर त्र्यंबकेश्वर
हिमालय में केदार
शिवालय में घुश्मेश्वर
जो मनुष्य सुबह और शाम इन द्वादश ज्योतिर्लिंगों का स्मरण करता है, उसके सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं.

श्री शिवाय नमः
हर हर महादेव
नमः पार्वतीपति
हर हर महादेव

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (16 अगस्त 2025) पर विशेष : बहुआयामी है भगवान श्रीकृष्ण का चरित्र

-डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

द्वापर युग में मथुरा के राजा उग्रसेन के पुत्र कंस के अत्याचारों से त्रस्त भक्तजनों की पुकार पर सप्तपुरियों में श्रेष्ठ मधुपुरी अर्थात मथुरा की दिव्य भूमि पर जन्म लेने वाले षोडस कलायुक्त भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्रीकृष्ण को पूर्णावतार माना गया है। क्योंकि उन्होंने स्थितप्रज्ञ होकर जीवन के समस्त आयामों को पूर्णरूपेण स्वीकार किया। भारतीय संस्कृति में पूजित दशावतारों में आठवें अवतार भगवान श्रीकृष्ण ही एकमात्र ऐसे अवतार हैं जिनका जन्मोत्सव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विश्व के प्रत्येक कोने में हिन्दू धर्मावलंबी अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। उनका जन्म मथुरा अत्यंत क्रूर व अत्याचारी राजा कंस के कारागार में सम्वत 3168 की भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में रात्रि के ठीक 12 बजे अपनी माता देवकी के गर्भ से हुआ था।उनके अवतार का प्रमुख कारण कंस के अत्याचारों से पृथ्वी को मुक्त कराना था। भगवान श्रीकृष्ण ने मथुरा में जन्म लेने के पश्चात अपनी तिरोधान लीला से पूर्व के 120 वर्षों में अनेकानेक लीलाएं कीं। उन्होंने अपने सम्पूर्ण लीला काल में समाज को विभिन्न रीति-नीति, कला, ज्ञान, व्यवहार आदि की जानकारी दी।भगवान श्रीकृष्ण का चरित्र बहुआयामी है। कभी वह बालरूप में नन्दरानी को मातृत्व सुख प्रदान करते हैं, तो कभी ग्वाल-वालों के साथ उनके सखा के रूप में लीला करते हुए राक्षसों का वध करते हैं। कभी वह यमुना में स्नान करती गोपियों को शिक्षा देते हैं तो कभी कुरुक्षेत्र में वीर अर्जुन को उपदेश देकर उसके परिवार मोह को भंग करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा की गई महारास लीला उनके कृष्णावतार की श्रेष्ठतम लीला है। उन्होंने इस लीला के माध्यम से गोपियों के अहंकार और काम के घमण्ड को समाप्त कर निष्काम प्रेम को परिभाषित किया। साथ ही उन्होंने कौरवों व पांडवों के मध्य हुए धर्म-अधर्म रूपी 18 दिवसीय महासंग्राम में अर्जुन का रथ खींचकर अर्जुन का साथ दिया। वस्तुतः भगवान श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण जन कल्याण के लिए हुआ था। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य पृथ्वी पर हो रहे अत्याचारों को मिटाना था। उन्होंने अपने युग को नवसृजन की दिशा में मोड़ा। जो कि उनकी भारतीय वैदिक संस्कृति को अनुपम देन है। शास्त्रों में ₹कृष्णावतार₹ को पूर्णावतार माना गया है। इसीलिए वे जगद्गुरु के रूप में सारे संसार के प्रदर्शक हैं। उन्होंने सारी दुनिया को कर्मयोग का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्राणी मात्र को यह संदेश दिया कि केवल कर्म करना व्यक्ति का अधिकार है। फल की इच्छा रखना उसका अधिकार नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण का स्वयं का भी जीवन उतार-चढ़ाव से ओत-प्रोत है। वे जेल में पैदा हुए, महल में जिये और जंगल से विदा हुए। उनका यह मानना था कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। उनके द्वारा कुरुक्षेत्र के मैदान में गीता-ज्ञान का ऐसा उपदेश दिया गया जो कर्तव्य से विमुख हो रहे हर व्यक्ति को दिशा व उर्जा प्रदान करने वाला है। वस्तुतः ₹श्रीमद्भगवद्गीता₹ उनके उपदेश का एक ऐसा दर्शन है जो हमें नश्वर जगत में अपना कर्तव्य निस्पृह भाव से निभाने के लिए प्रेरित करता है। यह ग्रंथ हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों को एक सूत्र में बाँधने वाला ग्रंथ है। गीता के इस अपूर्व उपदेश की ही कारण वे न केवल अपने समय के अपितु भविष्य में चिरकाल के लिए सारे संसार के गुरु बन गए। उनका पृथ्वी पर प्राकट्य सनातन मूल्यों की रक्षा के लिए हुआ था। इसीलिए वे लोक नायक व राष्ट्र नायक दौनों ही हैं। वह लीला पुरुषोत्तम हैं। जन-जन के आराध्य हैं। इसीलिए उनका चरित्र लोक रंजक है। उनका कोई भी कार्य कौतुक या निरर्थक नही है। उनमें वैराग्य योग, ज्ञान योग, ऐश्वर्य योग, धर्म योग और कर्म योग आदि समाहित हैं। उनकी प्रासंगिकता आज भी है। विद्वानों ने उन्हें महान नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, कुशल योद्धा, गौपालक, अहिंसा धर्मी, निर्भीक, ईश्वर भक्त, राजनीतिज्ञ, सहनशील, लोक हित चिंतक, सामाजिक न्याय धर्मी, वैदिक धर्म का पुनरोद्धारक, निर्लोभी, विनयशील, महामानव, संगठन कर्ता, दार्शनिक, वैज्ञानिक, अनुसन्धानक, गणितज्ञ, व्यूह रचना धर्मी, सच्चा मित्र, समाजशास्त्री, अध्यात्मवेत्ता, सर्वपालक राजा, आर्यधर्मी और आप्त पुरुष आदि माना है। भगवान श्रीकृष्ण ने समस्त विश्व को प्रेम व सहिष्णुता का संदेश दिया। उनकी लीलाओं में सर्वत्र प्रेम ही प्रेम दृष्टिगत होता है।

ब्रज श्रीकृष्णोपासना का प्रमुख केंद्र है। यहां श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व अन्य स्थानों की अपेक्षा अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ मनाया जाता है। ब्रज में इस पर्व की धूम अद्भुत व अनूठी होती है। जो कि श्रीकृष्ण की छठी पुजने तक निरन्तर जारी रहती है। इस दौरान यहां के प्रायः सभी मंदिरों में विशेष मनोरथों के आयोजन होते हैं। साथ ही यहां कृष्ण भक्ति का रस सर्वत्र बरसता है। साथ ही यहां के सभी देवालय कृष्णमय हो जाते हैं। ब्रज में इस पर्व पर जो वात्सल्यमय वातावरण दिखाई देता है उसकी अन्यत्र कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मथुरा के प्रायः प्रत्येक मन्दिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से एक दिन पूर्व भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को सांय काल यशोदा महारानी का सीरा-पूड़ी व रसीले पदार्थों से भोग लगाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की ख़ुशी में घर-आंगन से लेकर गली-मौहल्लों तक को दुल्हन की भांति सजाया जाता है। घर-घर में अनेकानेक व्यंजन व पकवान बनते हैं।

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को प्रातः से ही अधिकांश घरों में व्रत रखा जाता है। घर-घर में धनियां की पंजीरी व पंचामृत बनाया जाता है। सारे दिन भजन-कीर्तन के कार्यक्रम चलते हैं। रात्रि को जैसे ही 12 बजते हैं ब्रज के प्रायः प्रत्येक मन्दिर व घर से शंख, घण्टा-घड़ियाल आदि की आवाज गूंज उठती है। सभी अपने-अपने ठाकुर विग्रहों का पंचामृत से अभिषेक करते हैं। श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव का प्रमुख उत्सव मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि में होता है। लोग-बाग यह कह-कहकर नाच उठते हैं - नंद के आनन्द भयौ जय कन्हैया लाल की, ज्वानन को हाथी घोड़ा बूढ़ेंन को पालकी।

इसके अलावा ब्रज के सभी मंदिरों में ठाकुर जी के नयनाभिराम श्रंगार होते हैं। साथ ही उनके जन्म की खुशी में नौबत बजाई जताई है। वृन्दावन के ठाकुर श्री बाँके बिहारी मंदिर में वर्ष भर में केवल इसी दिन प्रातः काल अन्य मंदिरों की तरह मंगला आरती होती है। समूचे ब्रज में दीपावली जैसी धूम रहती है। गोवर्धन में असंख्य भक्त श्रद्धालु अति उत्साह के साथ गिर्राज पर्वत की परिक्रमा लगाते हैं। जगह-जगह श्रीमद्भागवत के दशम अध्याय की कथा होती है जिसमे कि श्रीकृष्ण के जन्म एवं लीलाओं का वर्णन है। विभिन्न रास मंडलियां भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की लीला का मंचन अत्यंत धूमधाम के साथ करती हैं।

नंदगांव में श्रीकृष्ण जन्म बधाई उत्सव रक्षा बंधन से ही शुरू हो जाता है। जिसमें बधाइयाँ, गायन व नृत्य आदि होते हैं।

वृन्दावन स्थित सप्त देवालयों में से तीन देवालयों- ठाकुर राधादामोदर मन्दिर, ठाकुर राधारमण मंदिर एवं ठाकुर राधागोकुलानंद मन्दिर में जन्माष्टमी दिन में भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है। इस सम्बंध में इन मंदिरों के सेवायतों का यह तर्क है कि उनके ठाकुर अत्यंत सुकोमल हैं अतैव उन्हें रात्रि में जगाकर उनका जन्मदिन मनाना उचित नहीं है। राधादामोदर मन्दिर में प्रातः काल ठाकुर जी का एवं वहां विराजित गिरिराज शिला का पंचामृत से अत्यंत धूमधाम के साथ अभिषेक किया जाता है। ठाकुर राधारमण मंदिर में ठाकुर जी का अभिषेक रात्रि के 12 बजे के स्थान पर दोपहर 12 बजे होता है। साथ ही उन्हें नवीन पीत वस्त्र धारण कराकर स्वर्ण सिंघासन पर विराजमान किया जाता है। इस दिन इस मंदिर में तिल-पंजीरी-पाग का विशेष भोग लगाया जाता है। साथ ही विशेष उत्सव आरती भी होती है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अगले दिन समूचे ब्रज में नंदोत्सव की धूम रहती है। हर एक घर व मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा को पालने में झुलाया जाता है और बधाइयां गायी जाती हैं। जगह-जगह दधिकांदा होता है। लोग-वाग यत्र-तत्र फल, मेवा, मिष्ठान, वस्त्र आदि लुटाते हैं। प्रत्येक इसे कान्हा के प्रसाद समझकर लूटता है।

नंदोत्सव का मुख्य आयोजन गोकुल स्थित गोकुलनाथ मन्दिर में होता है। यहाँ प्रातः काल भगवान श्रीकृष्ण की झांकी अत्यंत धूमधाम के साथ निकाली जाती है। साथ ही भगवान श्रीकृष्ण के पालने के भी शुभ दर्शन होते हैं।

मथुरा के द्वारिकाधीश मन्दिर में नंदोत्सव के दिन भगवान श्रीकृष्ण के विग्रह को चांदी के पालने में झुलाया जाता है।

नंदोत्सव पर नंदगांव के नंदभवन में भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा के स्वर्ण पालने में दर्शन होते हैं। बरसाना वासी, नंदगाँव वासियों को श्रीकृष्ण के जन्म की बधाई देने नंदगांव आते हैं। साथ ही यहां स्थित नंदकुण्ड नामक सरोवर पर मल्लयुद्ध प्रिय श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम की स्मृति में विशाल दंगल का आयोजन होता है। जिसमें देश के अनेक नामीगिरामी पहलवान भाग लेते हैं।

वृन्दावन के ठाकुर राधादामोदर मन्दिर में नंदोत्सव आनन्द महोत्सव के रूप में अति हर्षोल्लास के साथमनाया जाता है। ब्रजवासी बालक मन्दिर प्रांगण में होने वाली मटकी फोड़ लीला में भाग लेकर नाना प्रकार की अठखेलियाँ करते हैं। मन्दिर के सेवायतों द्वारा यहां उपस्थित अपार जन समूह में फल, मिष्ठान, कपड़े व बर्तन आदि लुटाये जाते हैं। लड्डू गोपाल स्वरूप ठाकुर जी को झूले पर झुलाया जाता है। इस फिन यहां खीर का विशेष प्रसाद भी बंटता है।

वृन्दावन के दक्षिण भारतीय रंगलक्ष्मी मन्दिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी नंदोत्सव के अगले दिन अत्यंत धूमधाम के साथ मनाई जाती है। इसका कारण यह है कि उत्तर भारत में त्योहारों को चंद्र मास के अनुसार मनाया जाता है जबकि दक्षिण भारत में त्योहार सौर मास के अनुसार मनाए जाते हैं।

वस्तुतः श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व प्रतिवर्ष हमें भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को मनाया जाना तभी सार्थक है जब हमारे हृदय में भगवान श्रीकृष्ण का उदय हो। इस पर्व के दिन हम सभी को गौरक्षा का संकल्प लेना चाहिए, सुदामा चरित्र का गायन करना चाहिए, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों को दिए गए सन्देश को आत्मसात करना चाहिए, श्रीमद्भवद्गीता के रहस्य को समझना चाहिए। साथ ही ₹श्रीकृष्णः शरणम मम₹ मन्त्र को अपने जीवन का मूल आधार बनाना चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार व आध्यात्मिक पत्रकार हैं)

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी
छटीकरा-रोड़, वृन्दावन-281121(मथुरा)

होम्बल फिल्म्स और PVR INOX ने स्वतंत्रता दिवस वीकेंड पर कंतारा का जश्न मनाते हुए पेश किया खास फायर थीम लोगो

स्वतंत्रता दिवस वीकेंड पर होम्बल फिल्म्स और PVR INOX ने कंतारा के लिए जलाया खास फायर-थीम वाला लोगो

परिवहन विशेष न्यूज

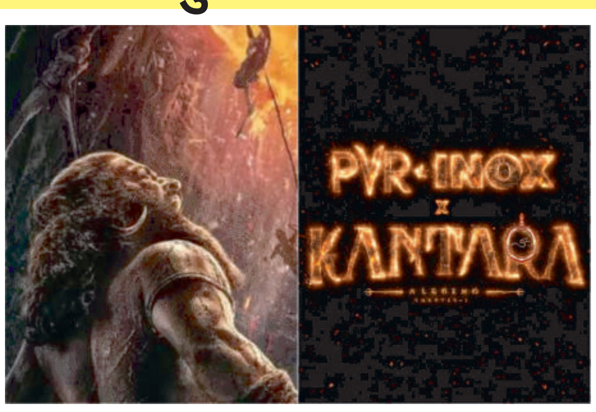

इस स्वतंत्रता दिवस के वीकेंड पर, PVR INOX अपने लोगो में कंतारा के मशहूर फायर एलिमेंट्स को जोड़ रहा है, जो कंताराः चैप्टर 1 के लिए एक जबरदस्त शुरुआत है।

PVR INOX, भारत का सबसे बड़ा और प्रीमियम सिनेमा चैनल, होम्बले फिल्म्स के साथ मिलकर मूवी देखने के अनुभव को नए तरीके और बड़े स्तर पर पेश कर रहा है। इस स्वतंत्रता दिवस के वीकेंड पर, PVR INOX अपने लोगो में कंतारा की आइकॉनिक फायर (आग) एलिमेंट्स जोड़ रहा है, जो साल की सबसे ज्यादा इंतेज़ार की जाने वाली रिलीज़ में से एक, कंताराः चैप्टर 1, के लिए शानदार शुरुआत बनेगा। यह फिल्म 2 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

आज से, कुली और वॉर 2 देखने वाले दर्शक PVR INOX के लोगो को फायर वाले खास एनीमेशन के रूप में सभी सिनेमाघरों में देख सकेंगे। नए प्रोजेक्शन सिस्टम और डिजिटल तकनीक की मदद से यह विजुअल कंतारा की ताकत और संस्कृति को दिखाता है, और साथ ही यह बताता है कि नई सिनेमा तकनीक किसी भी ब्रांड को एक मज़ेदार और असरदार कहानी में बदल सकती है। यह लोगो सभी PVR INOX थिएटर्स में बड़े पर्दे पर दिखेगा, दर्शकों को साल के सबसे बड़े सिनेमाई इवेंट में देखने से पहले रोमांचित करेगा और आने वाली फिल्म का माहौल बनाएगा।

इस कैंपेन के बारे में बोलते हुए, PVR INOX LTD. के CEO – रेवेन्यू एंड ऑपरेशंस, गौतम दत्ता ने कहाः "सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं है, यह एक भावना है जो पूरे देश को जोड़ती है। PVR INOX में हम हमेशा बड़े और खास अनुभव बनाने की कोशिश करते हैं जो स्क्रीन से आगे जाते हैं। कंतारा की ऊर्जा को अपने आइकॉनिक लोगो में शामिल करके, हम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक कहानियों का सम्मान कर रहे हैं और यह दिखा रहे हैं कि फिल्मों का जश्न कैसे मनाया जा सकता है। यह सिर्फ लोगो बदलना नहीं है; यह दर्शकों को एक यादगार कहानी के अनुभव में कदम रखने का न्योता है।"

विजय किरागंदुर, प्रोड्यूसर और फाउंडर, होम्बले फिल्म्स, ने कहाः "हमें गर्व है कि भारत की सबसे बड़ी मल्टीप्लेक्स चेन, जिसका दुनिया भर में सबसे बड़ा दर्शक जुड़ाव है, ने कंतारा को इस खास तरीके से सेलिब्रेट करने का फैसला किया। यह सच में एक खास आइडिया है और भारत की समृद्ध संस्कृति का जश्न है, खासकर इस स्वतंत्रता दिवस पर। यह बहुत गर्व की बात है जब आप उन कहानियों का जश्न मना सकते हैं जिन पर आप सच में विश्वास करते हैं, और वो भी PVR INOX जैसे बड़े पार्टनर के साथ। इसके साथ, दुनिया उन कहानियों को अपनाएगी जो हमारी संस्कृति में गहराई से जुड़ी हैं।"

PVR INOX और होम्बले फिल्म्स आने वाले हफ्तों में और भी नए आइडियाज़ पेश करते रहेंगे, ताकि दर्शकों में उत्साह बना रहे और उन्हें कंतारा की दुनिया का उसकी रिलीज से पहले अनुभव कराया जा सके।

ऐसे कदमों के साथ, PVR INOX होम्बले फिल्म्स के साथ मिलकर भारत में सिनेमा का भविष्य नए अंदाज़ में बनाने में अपनी लीडरशिप दिखा रहा है, और दर्शकों को शानदार, मज़ेदार और दिल को छू लेने वाला अनुभव दे रहा है, जो लाखों लोगों को जोड़ता और अपनी तरफ खींचता है।

फन वे लर्निंग एनजीओ में बच्चों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और सिटी एड फाउंडेशन वालों ने एजुकेशन लंगर, समोसा, फ्रूटी और केक वितरित किए। साथ ही उन्होंने शब्द कीर्तन भी किया।

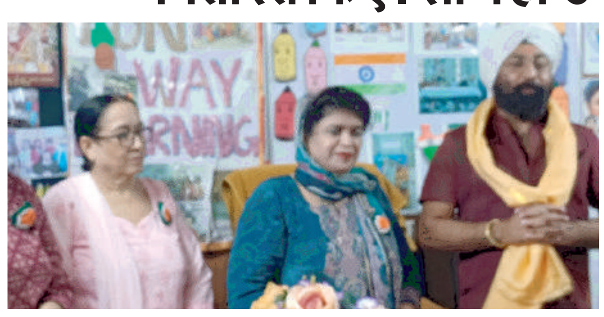

प्यार पच्चीसा (भाग 3)

रोहन, एक उभरता हुआ कवि, अपनी गहरी भावनाओं और संवेदनशील कविताओं के लिए जाना जाता था। उसकी दुनिया शब्दों, भावनाओं और सपनों से बुनी हुई थी, लेकिन बिछड़ने के बाद भी उसका दिल दीपा के इर्द-गिर्द घूमता था। दीपा, एक आकर्षक और महत्वाकांक्षी लड़की, जिसके सपने बड़े थे और जिसका प्यार हमेशा शर्तों के साथ आता था। रोहन की कविताएँ दीपा के लिए लिखी जाती थीं, लेकिन दीपा की नज़रें रोहन की सादगी और उसकी कविताओं की गहराई से ज्यादा उसकी बढ़ती प्रसिद्धि और संभावनाओं पर थीं।

इधर दीपा का पति रमेश भी दीपा से ज़्यादा अपनी बिसनेस पर ध्यान देता है। दीपा शादी के पहले ही सरकारी सेवा से इस्तीफ़ा दे चुकी थी। एक दिन उसने बड़े अरमान से रोहन को कॉल किया ।हाल चाल पूछने के बाद अपने जीवन का सच बताया और बोली मुझे माफ़ कर दो,, मैं भटक गई थी,, रमेश के साथ नहीं रह सकती। रोहन ने समझाया अब आप रमेश की पत्नी हैं,,, मुझे माफ़ करें,, बोलकर कॉल काट दिया।

रोहन को साहित्य जगत में पहचान मिलने लगी, समाचार पत्रों और टीवी चेनल पर रोहन की शोहरत बढ़ रही थी। दीपा की अपेक्षाएँ बढ़ने लगीं। वह चाहती थी कि रोहन अपनी कविताओं को और व्यावसायिक बनाए, बड़े प्रकाशकों के साथ सौदे करे, और अपनी एक ऐसी जिंदगी बनाए जो चमक-दमक से भरी हो। लेकिन रोहन का दिल कविता की आत्मा को बेचने को तैयार नहीं था। उसने दीपा से फोन कह दिया था, ₹मेरी कविताएँ मेरा सच हैं, दीपा। इन्हें मैं बाज़ार का माल नहीं बना सकता।"

एक शाम फिर कॉल करती है दीपा उसकी बात सुनकर रोहन अपनी डायरी खोलकर पढ़ता है, ₹दीपा, तुम मेरी कविता थीं, लेकिन तुमने मेरे शब्दों को कभी नहीं समझा। मेरी भावनाओं का सम्मान तो दूर ग़रीबी के कारण छोड़कर गई थी। अब मुझे माफ़ करो, रमेश जी के साथ रहो,, उनके बराबरी का धनी आदमी मैं नहीं हूं,, इतना कहकर फिर से कॉल काट दिया।

कुछ दिन बाद प्रांतीय साहित्य समारोह में रोहन को अपनी नई किताब खुला-आकाश के विमोचन के लिए राजधानी में बुलाया गया। वहाँ उसकी मुलाकात एक युवा लेखिका, माया से हुई। माया की बातों में वही संवेदनशीलता थी जो रोहन की कविताओं में झलकती थी। माया ने रोहन की कविताएँ पढ़ी थीं और कहा, ₹आपकी कविताएँ मेरे दिल को छूती हैं, रोहन जी। इनमें एक ऐसी छुपी उदासी है जो खुलकर बोलती है।₹ रोहन मुस्कुराया, लेकिन उसका मन दीपा की पुरानी यादों में खो गया।

कहानी यहाँ एक मोड़ लेती है। क्या रोहन माया के साथ एक नई शुरुआत करेगा, जो उसकी कविताओं को समझती है, या वह दीपा की यादों में डूबा रहेगा? क्या दीपा कभी लौटेगी, और अगर लौटेगी, तो क्या रोहन उसे फिर से अपनाएगा?

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त केंद्रीय जेल अधीक्षक

अमेजन MGM स्टूडियोज इंडिया ने निशानची के फर्स्ट सॉन्ग 'डियर कंट्री' को किया रिलीज!

परिवहन विशेष न्यूज

अमेजन MGM स्टूडियोज इंडिया और ज़ी म्यूजिक ने आज अपनी आने वाली फिल्म निशानची का पहला गाना ₹डियर कंट्री₹ रिलीज कर दिया है। इस गाने को ध्रुव घाणेकर ने बनाया है, विजय लाल यादव ने गाया है, और प्यारे लाल देवनाथ यादव ने लिखा है। यह गाना उत्तर भारत के लोक संगीत के साथ मज़ेदार अंग्रेज़ी बोलों को जोड़ता है, जिसमें तबले की धुन, हारमोनियम की आवाज़ और एक आसान, पैर थिरकाने वाला रिदम है। निशानची की असली देसी मस्ती को दिखाता यह रंगीन गाना खत्म होने के बाद भी दिल में रहता है और हर ताल को महसूस कराता है।

इस गाने के मज़ेदार बोलों और तेज़ धुन के साथ, म्यूजिक वीडियो भी जल्दी-जल्दी बदलते नए-नए नज़ारों का एक अच्छा मेल है। इसमें फिल्म के अलग-अलग हिस्से दिखाए गए हैं, जिनमें जोश भरे एहसास, थोड़ी मस्ती, और बच्चों का माँ के लिए प्यार साफ़ दिखता है। खुशहाल और दिल से भरा यह वीडियो देश की मिट्टी और देसी रंगों से भरा एक प्यारा संगीत भरा संदेश है। चाहे आप पैर थिरका रहे हों या गाने की कहानी सुन रहे हों, ₹डियर कंट्री₹ निशानची की असली भावना और जान को अच्छी तरह दिखाता है।

"डियर कंट्री" गाना बनाने के अपने अनुभव को बताते हुए, ध्रुव घाणेकर ने कहा, "हमारा सोच आसान था, जैसे ही आप इसे सुनो, गाँव की बात समझ आ जाए। हमने पुरानी धुन से शुरुआत की, फिर उसमें देसी और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी वाले बोल जोड़े, जो छोटे शहरों की बातों जैसे सीधे दिल से निकलते हैं। मुझे पूरी आज़ादी मिली कि मैं निशानची की कहानी की मस्ती और दिल को मिलाकर गाना बना सकूं। अनुराग की फिल्मों का हमेशा अलग सा संगीत होता है, इसलिए मैं कुछ नया और अलग करना चाहता था। 'डियर कंट्री' मज़ेदार, थोड़ा हटकर, जड़ों से जुड़ा और बिलकुल असली लगता है।"

अनुराग कश्यप ने निशानची फिल्म बनाई है, जिसे अजाय राय और रंजन सिंह ने जार पिक्चर्स और फ्लिप फिल्म्स के साथ मिलकर प्रोड्यूस किया है। इस फिल्म की कहानी प्रसून मिश्रा, रंजन चंदेल और अनुराग कश्यप ने लिखी है। यह फिल्म दो भाइयों के मुश्किल रिश्ते की कहानी है, जो अलग-अलग रास्ते चलते हैं और उनके फैसले उनकी ज़िंदगी कैसे बदलते हैं, यह दिखाती है। फिल्म में नए कलाकार ऐश्वर्य ठाकरे दो अहम रोल में हैं, साथ ही वेदिका पिंटो, मोनिका पंवार, मोहम्मद ज़ीशान अय्यूब और कुमुद मिश्रा भी मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

फिल्म 19 सितंबर को पूरे देश के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

विवेक रंजन अग्निहोत्री कोलकाता में 16 अगस्त को लॉन्च करेंगे 'द बंगाल फाइल्स' ट्रेलर, कालीघाट में लेंगे आशीर्वाद

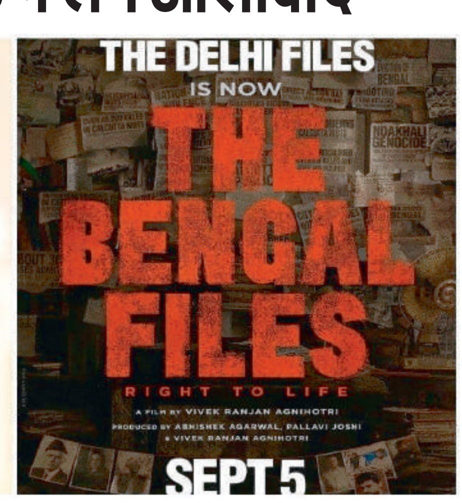

'द बंगाल फाइल्स' ट्रेलर कोलकाता में 16 अगस्त को होगा लॉन्च, विवेक रंजन अग्निहोत्री करेंगे इन खास जगहों का दौरा

फिल्ममेकर विवेक रंजन अग्निहोत्री कोलकाता में द बंगाल फाइल्स का ट्रेलर 16 अगस्त को लॉन्च करने जा रहे हैं। इस मौके पर वह सबसे पहले कालीघाट में आशीर्वाद लेंगे, जिसके बाद ट्रेलर लॉन्च होगा। इसके साथ ही वह शहीद मीनार भी जाएंगे, जहां श्रद्धांजलि देंगे। फिल्ममेकर को सुप्रीम कोर्ट से स्टे ऑर्डर भी मिला है!

फिल्ममेकर विवेक रंजन अग्निहोत्री की द बंगाल फाइल्स इस साल की सबसे चर्चित फिल्मों में से एक है। फिल्ममेकर की सच उजागर करने वाली फाइल्स ट्रिलॉजी का यह तीसरा पार्ट है, इससे पहले द कश्मीर फाइल्स और द ताशकंद फाइल्स आ चुकी हैं। यह फिल्म बंगाल के डायरेक्ट एक्शन डे और 1946 के कलकत्ता किलिंग्स की दर्दनाक घटनाओं को दिखाती है। रोमांचक टीज़र के बाद अब इसके ट्रेलर का इंतज़ार भी खत्म होने वाला है, क्योंकि फिल्ममेकर इसे कलकत्ता में 16 अगस्त को लॉन्च करने वाले हैं।

फिल्ममेकर विवेक रंजन अग्निहोत्री की द बंगाल फाइल्स का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर कलकत्ता में रिलीज़ किया जाएगा। यह एक यादगार पल होने वाला है, इसलिए फिल्ममेकर कालीघाट जाकर आशीर्वाद लेंगे और फिर ट्रेलर लॉन्च करेंगे। ट्रेलर लॉन्च के बाद वे शहीद मीनार जाकर श्रद्धांजलि देंगे।

फिल्म का पहला टीज़र, जो जून में रिलीज़ हुआ था, ने अपने डरावने दृश्यों और गहरे माहौल से हलचल मचा दी थी। इसमें खून से सने विज़ुअल्स, एक कश्मीरी पंडित का चेतावनी भरा बयान ₹बंगाल दूसरा कश्मीर बनता जा रहा है₹ और जलती हुई मां दुर्गा की प्रतिमा शामिल थी।

द बंगाल फाइल्स को लिखा और डायरेक्ट किया है विवेक रंजन अग्निहोत्री ने, और इसे अभिषेक अग्रवाल और पल्लवी जोशी ने प्रोड्यूस किया है। इसमें मिथुन चक्रवर्ती, पल्लवी जोशी, अनुपम खेर और दर्शन कुमार नज़र आएंगे। तेज नारायण अग्रवाल और आई एम बुद्धा द्वारा प्रस्तुत यह फिल्म, विवेक की फाइल्स ट्रिलॉजी का हिस्सा है, जिसमें द कश्मीर फाइल्स और द ताशकंद फाइल्स भी शामिल हैं। यह फिल्म 5 सितंबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

वीरांगना झलकारी बाई: झांसी की शेरनी का अद्भुत साहस

शम्भू शरण सत्यार्थी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कई ऐसे नाम हैं जो वीरता, साहस और बलिदान के पर्याय बन गए। इनमें से कुछ नाम इतिहास के पन्नों पर चमकते रहे, तो कुछ धुंधले हो गए। वीरांगना झलकारी बाई का नाम उन गिने-चुने योद्धाओं में है, जिन्होंने अपने साहस से ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी। वे रानी लक्ष्मीबाई की सेना की एक महत्वपूर्ण योद्धा थीं और 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने जो अद्भुत भूमिका निभाई, वह आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को उत्तर प्रदेश के झांसी के पास भोजला गाँव में एक गरीब कोरी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सडलामल और माता का नाम जमुना देवी था। बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया जिससे वे पिता के सानिध्य में पली-बढ़ीं। बचपन से ही झलकारी बाई में असाधारण साहस और जिजीविषा थी। वे ग्रामीण जीवन के कठिन कार्यों में निपुण थीं—खेतों में काम करना, पशुओं की देखभाल करना, और साथ ही घुड़सवारी तथा हथियार चलाना सीखना ।ग्रामीण वातावरण और पिता की प्रेरणा ने उनके भीतर एक योद्धा-स्वभाव का निर्माण किया। कहा जाता है कि बचपन में ही उन्होंने जंगल में शेर का सामना किया था और बिना भय के उसे खदेड़ दिया था।

झलकारी बाई का विवाह झांसी की सेना में कार्यरत एक बहादुर सैनिक पूरन कोरी से हुआ। विवाह के बाद वे झांसी आ गईं। पूरन कोरी के माध्यम से झलकारी बाई का परिचय रानी लक्ष्मीबाई से हुआ। रानी ने जब उनकी घुड़सवारी, तलवारबाजी और अदम्य साहस देखा, तो वे अत्यंत प्रभावित हुईं।

रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई में एक अद्भुत समानता थी—दोनों ही अत्याचार के खिलाफ बगावत का जज्बा रखती थीं और दोनों ही युद्ध कौशल में निपुण थीं। इसी कारण रानी ने उन्हें अपनी सेना में एक प्रमुख स्थान दिया।

झलकारी बाई केवल एक सैनिक नहीं, बल्कि दुर्गा दल नामक महिला सेना की कमांडर बनीं। यह दल पूरी तरह से महिलाओं से बना था और किले की सुरक्षा से लेकर युद्ध के मोर्चे तक, हर जगह सक्रिय रहता था।

झलकारी बाई की विशेषता यह थी कि वे रानी लक्ष्मीबाई की तरह दिखती थीं—चेहरे की बनावट, कद-काठी, और पहनावे में काफी समानता थी। यह समानता आगे चलकर ब्रिटिश सेना को चकमा देने में निर्णायक साबित हुई।

1857 में भारत के कई हिस्सों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की लपटें उठीं। झांसी में भी स्थिति तनावपूर्ण थी। रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी की सुरक्षा के लिए मोर्चा संभाला। अंग्रेजों ने जब झांसी को घेर लिया, तो किला चारों ओर से संकट में आ गया।

युद्ध भयंकर था। ब्रिटिश सेना के पास आधुनिक हथियार और तोपखाने थे, जबकि झांसी की सेना मुख्यतः परंपरागत हथियारों से लड़ रही थी। ऐसे समय में झलकारी बाई और उनके दल ने अद्भुत साहस दिखाया।

जब अंग्रेजों का दबाव बढ़ा और रानी लक्ष्मीबाई को किले से बाहर निकलकर अन्य क्रांतिकारियों के साथ जुड़ने की आवश्यकता हुई, तब झलकारी बाई ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया। उन्होंने रानी के वेश में युद्ध के मैदान में उतरकर अंग्रेजों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

ब्रिटिश सेना यह समझने लगी कि वे रानी लक्ष्मीबाई को पकड़ चुके हैं। इस दौरान असली रानी सुरक्षित रूप से किले से बाहर निकल गईं। झलकारी बाई ने अपनी पहचान छुपाए रखते हुए तब तक युद्ध किया, जब तक कि रानी पूरी तरह सुरक्षित न हो गईं।

कुछ ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि झलकारी बाई अंततः अंग्रेजों के हाथों गिरफ्तार हुईं। जब उनकी असली पहचान सामने आई, तो अंग्रेज हैरान रह गए। माना जाता है कि उन्होंने यातनाओं के बावजूद रानी का ठिकाना नहीं बताया। कई विवरणों में यह भी उल्लेख है कि उन्होंने युद्ध में ही प्राण न्योछावर कर दिए जबकि कुछ कथाओं में कहा गया है कि बाद में वे गाँव लौट गईं और शांत जीवन बिताया।

झलकारी बाई का साहस केवल युद्ध कौशल तक सीमित नहीं था, बल्कि वह एक रणनीतिक बलिदान का उदाहरण था। रानी के स्थान पर स्वयं को प्रस्तुत करना, यह जानकर कि यह मृत्यु को आमंत्रण है, अद्वितीय वीरता की मिसाल है।

दुर्भाग्यवश, भारतीय इतिहास में झलकारी बाई जैसी वीरांगनाओं का नाम उतनी प्रमुखता से नहीं लिया गया, जितना लिया जाना चाहिए था। अधिकतर इतिहास पुस्तकों में उनका उल्लेख संक्षेप में मिलता है हालांकि, दलित और महिला इतिहासकारों ने उनके योगदान को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज झलकारी बाई का नाम दलित और महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। उनकी जयंती पर कई राज्यों में कार्यक्रम होते हैं, और झांसी में उनकी प्रतिमा स्थापित है।

झलकारी बाई का जीवन हमें यह सिखाता है कि साहस, त्याग और नेतृत्व केवल राजा-रानियों तक सीमित नहीं है। कोई भी व्यक्ति, चाहे उसका जन्म किसी भी वर्ग या परिस्थिति में हुआ हो, राष्ट्र और समाज के लिए महान योगदान दे सकता है।

आज के समय में जब महिलाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ रही है, झलकारी बाई का उदाहरण यह याद दिलाता है कि भारतीय महिलाओं का संघर्ष और नेतृत्व का इतिहास बहुत पुराना और गौरवशाली है।

वीरांगना झलकारी बाई न केवल झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सहयोगी थीं, बल्कि वे स्वयं में एक संपूर्ण योद्धा और रणनीतिकार थीं। उनका बलिदान 1857 के संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज है।

आज आवश्यकता है कि उनके योगदान को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाए, ताकि नई पीढ़ी उनके साहस से प्रेरणा लेकर अन्याय और दमन के खिलाफ खड़ी हो सके।

79वां स्वतंत्रता दिवस आज

भारत में स्वतंत्रता दिवस केवल एक तिथि या औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह उस संघर्ष, बलिदान और एकता का प्रतीक है जिसने हमें एक आज़ाद और संप्रभु राष्ट्र बनाया। 15 अगस्त 1947 को मिली आज़ादी के बाद से हर साल यह दिन हमें न केवल अंग्रेजी हुकूमत के अंत की याद दिलाता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि स्वतंत्रता की रक्षा और उसका सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है।

स्वतंत्रता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

==============================

15 अगस्त 1947 को भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य की 200 से अधिक वर्षों की गुलामी से मुक्ति पाई। यह केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं था, बल्कि करोड़ों भारतीयों के त्याग, संघर्ष और अदम्य साहस का परिणाम था। स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों, नेताओं और आम नागरिकों ने कठिनाइयों का सामना करते हुए देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर किया।

78 साल पूरे, लेकिन 79वां स्वतंत्रता दिवस क्यों?

==============================

कई लोग सोच रहे हैं कि 2025 से 1947 घटाने पर 78 आता है, इसलिए यह 78वां स्वतंत्रता दिवस होगा। लेकिन यह गणना पूरी हुई स्वतंत्रता के वर्षों की है, न कि स्वतंत्रता दिवसों की। 1947 में ही पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था, यानी गिनती 'एक' से शुरू होती है, 'शून्य' से नहीं। इसलिए 2025 में भारत 79वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है।

उत्सव और एकता का प्रतीक

==============================

स्वतंत्रता दिवस न केवल तिरंगा फहराने और देशभक्ति के गीतों का दिन है, बल्कि यह भारत की विविधता में एकता, समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय उपलब्धियों का जश्न है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है।

इस साल का आयोजन क्यों है खास

==============================

79वां स्वतंत्रता दिवस (79th Independence Day) ऐसे समय पर आ रहा है जब भारत सामाजिक और आर्थिक विकास के नए मापदंड स्थापित कर रहा है। यह अवसर हमें न केवल अतीत के गौरव को याद करने का मौका देता है, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का भी। हर साल का यह उत्सव हमें सिखाता है कि स्वतंत्रता की रक्षा निरंतर प्रयास और एकजुटता से ही संभव है।

स्वाधीनता का अर्थ है ऐसी आजादी जो व्यक्ति और राष्ट्र को सशक्त बनाए

-संदीप सृजन

हम भारतीय लोगों की स्वतंत्रता स्वच्छंदता में नहीं बदले, बल्कि स्वाधीनता में रुपांतरीत हो" यह वाक्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मूल सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है। यह महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित है, जहां उन्होंने स्वतंत्रता को मात्र राजनीतिक आजादी तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे आत्म-नियंत्रण, आत्म-निर्भरता और नैतिक जिम्मेदारी से जोड़ा। स्वतंत्रता का अर्थ है गुलामी से मुक्ति, लेकिन यदि यह स्वच्छंदता में बदल जाए, तो यह समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। इसके विपरीत, स्वाधीनता का अर्थ है ऐसी आजादी जो व्यक्ति और राष्ट्र को सशक्त बनाए, जहां स्वतंत्रता का उपयोग सामूहिक कल्याण के लिए हो। यह उद्धरण आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जहां हम 78 वर्षों से स्वतंत्र हैं, लेकिन क्या हमारी स्वतंत्रता स्वाधीनता में रूपांतरित हो पाई है?

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जड़ें गहरी हैं। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 की आजादी तक, लाखों भारतीयों ने बलिदान दिए। लेकिन महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता को मात्र ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं माना "हिंद स्वराज" में उन्होंने स्पष्ट किया कि सच्ची स्वतंत्रता आत्म-शासन है, जहां व्यक्ति अपने मन, शरीर और आत्मा पर नियंत्रण रखे। गांधीजी ने कहा था कि "स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि हम जो चाहें करें, बल्कि यह कि हम सही कार्य करें।" इसी क्रम में, स्वच्छंदता का खतरा उन्होंने चेतावनी के रूप में उठाया। स्वच्छंदता वह स्थिति है जहां व्यक्ति बिना किसी नैतिक बंधन के कार्य करता है, जो अराजकता को जन्म देती है।

1942 के क्विट इंडिया आंदोलन में गांधीजी ने कहा, "हम भारत को आजाद करेंगे या प्रयास में मर जाएंगे।" लेकिन उन्होंने यह भी जोड़ा कि आजादी के बाद भारतीयों को स्वच्छंद नहीं होना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, गांधीजी ने ग्राम स्वराज की अवधारणा दी, जहां गांव आत्म-निर्भर हों। यह स्वाधीनता का प्रतीक है, जहां स्वतंत्रता आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आत्म-निर्भरता में बदल जाए। नेहरू, पटेल और अन्य नेताओं ने भी इस विचार को अपनाया। नेहरू की "डिस्कवरी ऑफ इंडिया" में स्वतंत्रता को रचनात्मक ऊर्जा के रूप में देखा गया, न कि विनाशकारी स्वच्छंदता के रूप में।

ऐतिहासिक रूप से, कई राष्ट्रों में स्वतंत्रता स्वच्छंदता में बदल गई। फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने स्वतंत्रता दी, लेकिन स्वच्छंदता के कारण रक्तपात हुआ। रूसी क्रांति (1917) में भी यही हुआ। भारत ने इससे सीख ली। संविधान सभा में डॉ. आंबेडकर ने कहा कि "स्वतंत्रता का दुरुपयोग लोकतंत्र को नष्ट कर सकता है।" इसलिए, भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जोड़े गए, ताकि स्वतंत्रता स्वच्छंदता न बने।

स्वतंत्रता का अर्थ है बाहरी बंधनों से मुक्ति। भारत में यह ब्रिटिश उपनिवेशवाद से आजादी थी। लेकिन यदि यह स्वच्छंदता में बदल जाए, तो व्यक्ति समाज के नियमों को ताक पर रख देता है। स्वच्छंदता वह है जहां "मैं जो चाहूं, करूं" का सिद्धांत हावी हो। इसके विपरीत, स्वाधीनता आत्म-निर्भरता है। यह "आत्मनिर्भर भारत" अभियान की तरह है, जहां स्वतंत्रता उत्पादकता में बदलती है। स्वाधीनता में व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को समझता है। प्लेटो की "रिपब्लिक" में स्वतंत्रता को न्याय से जोड़ा गया, जहां बिना नियंत्रण की आजादी अराजकता है। भारतीय दर्शन में, गीता कहती है: "योगः कर्मसु कौशलम्" -कार्य में कुशलता, जो स्वाधीनता का आधार है।

आज का भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन क्या हमारी स्वतंत्रता स्वाधीनता में रूपांतरित हो रही है? एक ओर, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे अभियान स्वाधीनता की दिशा दिखाते हैं। स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को स्वतंत्र बनाया, लेकिन आत्म-निर्भर भी। उदाहरण: पेटीएम, ओला जैसी कंपनियां, जो विदेशी निर्भरता से मुक्ति देती हैं।

लेकिन स्वच्छंदता के खतरे भी हैं। सोशल मीडिया पर फेक न्यूज का प्रसार स्वतंत्रता का दुरुपयोग है। २०२० के दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया ने स्वच्छंदता दिखाई, जहां अभिव्यक्ति की आजादी हिंसा में बदली। पर्यावरण के क्षेत्र में, प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग स्वच्छंदता है, जबकि स्वच्छ भारत अभियान स्वाधीनता की ओर कदम है। गांधीजी ने स्वच्छता को स्वतंत्रता से ऊपर माना, जैसा की एक उद्धरण में कहा गया: "स्वच्छता राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है।"

शिक्षा में, स्वतंत्रता छात्रों को विचार करने की आजादी देती है, लेकिन स्वच्छंदता कॉपिंग और अनुशासनहीनता में बदलती है। नई शिक्षा नीति स्वाधीनता की दिशा है, जहां कौशल-आधारित शिक्षा आत्म-निर्भरता सिखाती है। राजनीतिक रूप से, चुनावी स्वतंत्रता लोकतंत्र की ताकत है, लेकिन वोट बैंक पॉलिटिक्स स्वच्छंदता है।

स्वतंत्रता एक यात्रा है, जो स्वाधीनता पर समाप्त होनी चाहिए। भारत ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन स्वाधीनता अभी अधर में है। हमें गांधीजी, नेहरू और आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेनी चाहिए। यदि हम स्वच्छंदता से बचें और आत्म-निर्भरता अपनाएं, तो भारत विश्व गुरु बन सकता है। यह रूपांतरण व्यक्तिगत स्तर से शुरू होता है, प्रत्येक भारतीय अपनी स्वतंत्रता को जिम्मेदारी से जोड़े। तभी हम सच्चे अर्थ में स्वाधीन होंगे।

हमे अब भारत के साथ आगे आना होगा

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

देश प्रेम की दिव्य ज्योति को जलना होगा
अपने देश के लिए हमें आगे आना होगा
तोड़ दो मज़हब की दीवार अपने देश के साथ आओ
देश के नवनिर्माण में हम सभी
हमे अब भारत के साथ आगे आयें।

कठिन संघर्षों के साथ बहुत मुश्किल परिस्थितियों में हम भारतीयों ने एकजुटता के साथ आजादी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया था। उसी सेवा व समर्पण भावना को वर्तमान समय में भी स्थापित करना है हम सभी को अपने भारत देश के लिए। आज स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हम और हमारी युवा पीढ़ी क्यों नहीं आजादी का आनंद पूर्ण रूप से ले पाए? वह इस लिए कि आजादी के बाद दो परिदृश्य सामने आये एक इंडिया दूसरा हिन्दुस्तान और इसी सब के बीच जनमानस की अपनी खाई बढ़ती गई ।एक और पूंजीपतियों की अमीरी दूसरी ओर गरीबी कमजोर तबके के मजदूरों का शोषण का खेल शुरू हुआ था ।इन सभी के कारण मातृभूमि बहुत दुखी थी। लेकिन बहुत संकटों और संघर्षों के साथ देश आगे बढ़ता रहा और वर्तमान समय में अपने खुद के विज़न पर काम कर रहा है। विकसित भारत की रफ्तार महेनतकाश लोगों की आत्मनिर्भरता के कारण 25 लाख लोग गरीबी के चक्रव्यूह से बहार निकल चुके हैं। आज स्वतंत्रता का सही रूप से मूल्यांकन का काम भारत में चल रहा है क्योंकि इंडिया और हिन्दुस्तान से हटकर वर्तमान समय ने अब भारत के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। भारतीय संस्कृति का झरण जिस प्रकार हो रहा है और फूहड़ता पश्चिमी सभ्यता के साथ नशें का गुलाम भारत का युवा राह भटक चुका है। बुराईयों व नाकारात्मक पहलू ने हमारे आधारभूत संरचना को हिला कर रख दिया है। धर्मांतरण लव-जिहाद से भारत का वर्तमान संकट में है ।आज भी विदेशी ताकतें हमें खरीदना चाहती है तभी तो विदेशों से पैसा आता है इन सब कामों के लिए और यहां बहुत सारे छांगुर साख साख पर बेठे है। कुल मिलाकर कर हम स्वतंत्रता के नशें में सुध-बुध खो बेठे थे और दुसरी तरफ इंडिया के आधुनिकता ने सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। आज समाजिक स्तर पर एकजुटता का अभाव समाने दिखाई देता है ।लोगों के दिलों में भारत है। लेकिन दिमाग बिगड़ चुका है वह आधुनिकता फैशन दिखावे के इंडिया की चकाचौंध में अपने देश अपने वतन यानि तिरंगे के स्वाभिमान भारत से दूर हो रहें हैं। दिमाग की फितरत से वैचारिकता का अभाव हो चूका है बुजुर्गो से नफ़रत गलत विचारधारा व नाकारात्मक पहलू के कारण घर-द्वार सुनें पढ़ें है और वृद्ध आश्रम सेवालय बुजुर्गो से भरें पढ़ें है? यह कैसी विडम्बना है समाजिक ताने बाने की क्योंकि पुराने हिन्दुस्तान में धर्म संस्कृति संस्कार सभ्यता थी नये इंडिया में यह विलुप्त हो चुके हैं। ऐसी कई बातें हैं लेकिन इसी कारण आज भी वर्तमान समय में मनुष्य परिवर्तन की बात कहें रहे हैं, और वह भारत की और बड़ी आशा से देख रहा है। क्योंकि अगर आजादी के इतने वर्षों बाद भारतीय जनमानस की सोच में आत्म-मंथन की ज्योति जल उठी है तो हम सभी को लोटना ही होगा भारत की और। हमे अपने भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। राष्ट्रीय संत समाधिस्थ आचार्य जन-जन के अपने गुरु विद्यासागर जी कहा करते थे नई पीढ़ी का खून सोया है

कविता ऐसी लिखों कि रक्त में संचार आ जाएं।

उनका इरादा इंडिया नहीं भारत के लिए बदल जाएं। भारत को याद करने से धर्म परम्परा हमेशा हमारे दिलों दिमाग पर सहजता से उपलब्ध रहेगी। उन आजादी के मतवालों ने भारत के भविष्य के बारे में क्या क्या सपने देखें थें। लेकिन उन सपने को हम सभी को मिलकर पूरा करना ही होगा। पश्चिमी सभ्यता के मोहपाश से निकाला ही होगा क्योंकि यहां समय बदलाव का है और हम सभी को इंडिया से भारत की और लोटना ही होगा। तभी समाजिक स्तर पर सकारात्मक ऊर्जा आयेंगी भारत के लिए उसकी उन्नति व खुशहाली के लिए मिलजुल देश की तरक्की को सुअवसरों को अवसरों में तब्दील करके विकासशील देशों में भारत की नींव हम मेड इन भारत के नाम से ही रखें। अपने देश के लिए भारत माता की आन बान और शान को शिखर पर पहुंचने के लिए अपने भारत के तिरंगे को झुकने नहीं दे। वह आसमान में यूंही लहराता रहे। हम सभी देशवासियों को अपने भारत के साथ अब आगे आना ही होगा।

ब्रजभूमि, ब्रजभाषा व ब्रज संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए पूर्णतः समर्पित रहे उड़िया बाबा महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। दावानल कुंड क्षेत्र स्थित श्रीकृष्णाश्रम (उड़िया बाबा आश्रम) में इन दिनों ब्रज के प्रख्यात संत स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज का सप्तदिवसीय सार्धशताब्द (150 वां) प्राकट्योत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है ।जिसके अंतर्गत नित्य गौरांग लीला, रासलीला, श्रीहरिनाम संकीर्तन व भजन संध्या आदि के कार्यक्रम हो रहे हैं ।महोत्सव के तीसरे दिन आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में

सुग्रीव किला पीठाधीश्वर अयोध्या/वृन्दावन श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी विश्वेशप्रपन्नाचार्य महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज अत्यंत निस्पृह व समन्वयवादी थे ।उनका जीवन चरित्र आज भी असंख्य व्यक्तियों के लिए प्रेरणा व ऊर्जा का स्रोत है।

भागवताचार्य पण्डित बिहारीलाल शास्त्री ने कहा कि ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज

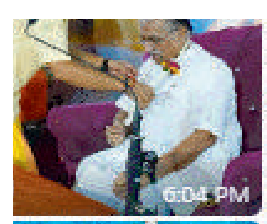

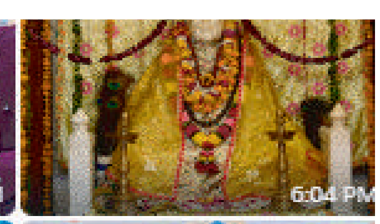

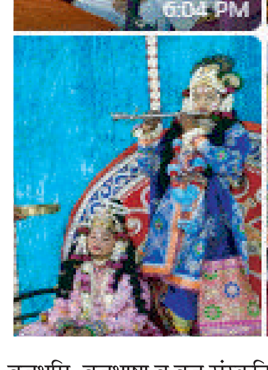

ब्रजभूमि, ब्रजभाषा व ब्रज संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए पूर्णतः समर्पित रहे ।उन्हीं की प्रेरणा से उनके परम कृपापात्र शिवकुमार शर्मा ने ₹ब्रजभूमि₹ नामक फिल्म का निर्माण किया ।जोकि ब्रज भाषा में थी ।साथ ही उसका फिल्मांकन भी ब्रज के प्राचीन स्थलों पर किया गया था।

गोविन्द शरण महाराज ने कहा कि पूज्य उड़िया बाबा महाराज अत्यन्त सहज, सरल, उदार व परोपकारी थे ।वे किसी से भी सहायता लिए बिना गौ, संत, रोगी और निर्धन-निराश्रितों की सेवा में संलग्न रहते थे।

इस अवसर पर स्वामी महेशानंद सरस्वती महाराज, आचार्य राजेश शास्त्री, आचार्य गोपाल भैया, पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ, संत रामदास महाराज, अंकित कृष्ण शास्त्री आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।संचालन संत सेवानंद ब्रह्मचारी ने किया ।कार्यक्रम संयोजक व उड़िया बाबा आश्रम के प्रभारी आचार्य पंडित कुलदीप दुबे ने सभी संतों व विद्वानों को शॉल ओढ़कर एवं ठाकुरजी का पटका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।

महोत्सव में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, सन्त प्रवर स्वामी आवेधानंद महाराज, रासाचार्य स्वामी ताराचंद ठाकुरजी, विष्णुकांत शर्मा (आगरा), राम स्वरूप जोशी (मुंबई), विनोद तायल (देहरादून), हरीश अग्रवाल,अश्वनी प्रताप सिंह (नोएडा), रामस्वरूप जोशी, डॉ. राधाकांत शर्मा, विष्णु शर्मा, विजय पांडे, गौरव शर्मा (दिल्ली) आदि उपस्थित रहे।

79 वाँ स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025-लाल किले की प्राचीर से पीएम द्वारा संबोधन देशवासियों सहित पूरे विश्व के लिए नीति घोषणा के रूप में देखा जाएगा

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के करीब-क़रीब हर देश में भारतीय स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025 की गूंज सुनाई दे रही है हर घर तिरंगा 13 से 15 अगस्त 2025 काफी धूम मचा रहा है ।अमेरिका लंदन नेपाल बांग्लादेश श्रीलंका यूएई जापान सहित करीब क़रीब हर देश में भारतीय स्वतंत्रता दिवस अति उत्साह के साथ मनाया जा रहा है, तो वही भारत में तो इस राष्ट्रीय महोत्सव महापर्व का नज़ारा ही अनोखा हैं। भारत के हर ग्राम पंचायत से लेकर जिलामुख्यालय व हर राज्य से लेकर लालकिले तक, हर जिले के पालक मंत्री से लेकर सीएम कार्यालय तक व हर केंद्रीयमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक ने स्वतंत्रता दिवस का झंडा अति उत्साह व भावपूर्ण गर्व से फहराया जा रहा है। पूरे भारत देश में ग़ज़ब का उत्साह देखने को मिल रहा है। सभी टीवी चैनलों व प्रिंट सोशल व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सुबह से लेकर देररात्रि तक केवल 15 अगस्त 2025 स्वतंत्रता दिवस के ही कार्यक्रम, डिबेट सांस्कृतिक कार्यक्रम व अनेक प्रकार की जानकारी से पूरे भारत ही नहीं अनेक देशों में लोग सराबोर हो रहे हैं। माननीय पीएम ने लाल किले की प्राचीर से लगातार 12 वीं बार तिरंगा फहराकर देश को संबोधित करेंगे जिसकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। चूंकि देश के लिए जीने की प्रतिबद्धता, साफ नीति और नियत विकास को तेज छलांग देती है, व लाल किले से पीएम का आगाज़, चुनौतियों को चुनौती देना भारत की फितरत है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारतीय स्वतंत्रता दिवस पूरी दुनियां में उत्साह से मनाया जा रहा है। कई देशों के नेताओं विदेश मंत्रियों की बधाईयों व शुभकामनाओं का तांता लगना भारत के लिए गौरवपूर्ण है।

साथियों बात अगर हम स्वतंत्रता दिवस पर्व 15 अगस्त 2025 की करें तो आज वो शुभ घड़ी है, जब हम देश के लिए मर-मिटने वाले, देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले,आजीवन संघर्ष करने वाले, फांसी के तख्ते पर चढ़ करके भारत माँ की जय के नारे लगाने वाले अनगिनत आजादी के दीवानों को नमन करने का यह पर्व है। उनका पुण्य स्मरण करने का पर्व है ।आजादी के दीवानों ने आज हमें आजादी के इस पर्व में स्वतंत्रता की सांस लेने का सौभाग्य दिया है। यह देश उनका ऋणी है। ऐसे हर महापुरूष के प्रति हम अपना श्रद्धाभाव व्यक्त करते हैं।

साथियों बात अगर हम पीएम के लाल किले की प्राचीन से संभावित सम्बोधन की करें तो आत्मनिर्भरता, वैश्विक रणनीति, वैश्विक एकता, पर बोलने की संभावना है। 79 वें स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025 को लाल किले से प्रधानमंत्री की संभावित बातों में यह मुद्दा अवश्य प्रमुख रहेगा, क्योंकि ट्रंप द्वारा हाल ही में लगाए गए टैरिफ और भारत के खिलाफ कुछ देशों की वैश्विक घेराबंदी जैसीकोशिशें सीधे-सीधे भारत की अर्थव्यवस्था निर्यात, और वैश्विक प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकती हैं ।इसपर पीएम का संदेश तीन स्पष्ट आयामों में सामने आ सकता है,आत्मनिर्भरता, वैश्विक रणनीति और राष्ट्रीय एकता। (1) आत्मनिर्भर भारत का संकल्प और विस्तार पीएम लाल किले से यह कह सकते हैं कि भारत बाहरी दबावों के आगे झुकेगा नहीं। टैरिफ, व्यापार अवरोध या राजनीतिक गठजोड़-ये सब भारत को रोकने में सक्षम नहीं हैं, क्योंकि अब देश ने आत्मनिर्भर भारत का मार्ग चुना है। वे यह भी बता सकते हैं कि भारत अब केवल कच्चा माल निर्यात करने वाला देश नहीं रहेगा, बल्कि अपने उद्योग, तकनीक और कृषि को इतना सशक्त बनाएगा कि वैश्विक बाज़ार भारत पर निर्भर रहें ।भारत आज यह घोषणा करता है कि हमारी तरक्की हमारे हाथों में है, ना किसी टैरिफ से डरेंगे, ना किसी घेराबंदी से घबराएंगे। (2) वैश्विक घेराबंदी का रणनीतिक जवाब- पीएम यह संकेत दे सकते हैं कि भारत के खिलाफ जो भी देश आर्थिक या कूटनीतिक घेराबंदी की कोशिश कर रहे हैं, भारत उनका सामना केवल बयानबाज़ी से नहीं, बल्कि ठोस नीतियों से करेगा। वे बहुपक्षीय व्यापार समझौतों, नए बाजारों के विस्तार और रूस, अफ्रीका,दक्षिण अमेरिका जैसे मित्र राष्ट्रों के साथ सहयोग का उल्लेख कर सकते हैं ।साथ ही, यह संदेश भी दे सकते हैं कि भारत का लक्ष्य आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ वैश्विक नेतृत्व बनना है। (3) जनता और उद्योग जगत से आह्वान- प्रधानमंत्री संभवतः लाल किले से जनता, किसानों, और उद्योगपतियों से यह आह्वान करेंगे कि इस आर्थिक चुनौती को अवसर में बदलें, घरेलू उत्पादन बढ़ाएं, 'मेक इन इंडिया' को नए स्तर पर ले जाएं, और विदेशी निर्भरता कम करें। वे छोटे-छोटे उत्पादों से लेकर बड़े-बड़े रक्षा उपकरण तक, हर चीज़ में भारतीय नवाचार और उत्पादन क्षमता को प्रोत्साहित करने की बात कह सकते हैं ।आज जब कुछ ताकतें हमें रोकने का प्रयास कर रही हैं, तब हर भारतीय को यह प्रण लेना है, जो भी खरीदें, जो भी बनाएं, वह अपने देश के लिए, अपने देश में बने ।₹

साथियों बात अगर हम नया भारत विकसित सुरक्षित और साहसी भारत की करें तो,'एक नया भारत" की दिशा में 2025 में भारत अपना 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहा है ।जिसमेंसरकार ने एक "विकसित, सुरक्षित और साहसी भारत" के रूप में परिभाषित किया है, जो 2047 तक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेता है ।ऐसे में 15 अगस्त 2025 की सुबह, लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रगान और तिरंगा फहराते हुए, पीएम क़ा यह 12 वाँ वार्षिक परंपरागत सम्बोधन देशवासियों के लिए केवल एक भाषण नहीं, बल्कि नए भारत की कल्पना को ज़मीनी तौर पर जगता करने का मंच होगा ।सरकार की तैयारियाँ: भव्यता, सुरक्षा और सक्रियता प्रमुख तैयारियाँ और आयोजन व्यवस्था (1) लाल किले की व्यवस्था पीएम की प्राचीर पर तिरंगा फहराना, 21 तोपों से सलामी, राष्ट्रीय गान और सम्बोधन, ये सभी आयोजन केंद्र सरकार की ओर से बड़े समारोह के तौर पर सुनिश्चित किए गए हैं ।(2) ग़ार्ड ऑफ ऑनर और सैन्य दस्ते समारोह में शामिल रक्षा और पुलिस बलों की विशेष व्यवस्थाः सेना, नौसेना, वायुसेना और दिल्ली पुलिस से मिलकर बने 96 सदस्यीय गार्ड ऑफ ऑनर, और झंडा सलामी दस्ते, ये पर्व की गरिमा और सुरक्षा के प्रतीक हैं। (3) बैंड प्रदर्शन पूरे देश में "ऑपरेशन सिंदूर" की विजय और "नया भारत" की भावना को प्रदर्शित करते हुए भारत के ट्राइ-सर्विसेज़ और अन्य सुरक्षा संगठनों के बैंड देश के 140 से अधिक स्थलों पर प्रदर्शन करेंगे ।(6) "हर घर तिरंगा" अभियान,जन सहभागिता की चिंगारी यह अभियान चौथा संस्करण है, जिसमें नागरिकों को अपने घरों पर तिरंगा फहराने, अपनी भागीदारी के फोटो साझा करने, और "हर घर तिरंगा अम्बस्साडोर" प्रमाणपत्र और बैच पाने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है ।

साथियों बात अगर हम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025 में मेहमानों की करें तो, पंचायती राज मंत्रालय नें नई दिल्ली के लाल किले में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान 28 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 210पंचायत प्रतिनिधियों को विशेष अतिथि के रूप में मेजबानीकरेगा ।अपने जीवन साथी और नोडल अधिकारियों के साथ, कुल 425 प्रतिभागी इस समारोह में शामिल होंगे ।इन विशिष्ट अतिथियों के लिए 14 अगस्त 2025 को नई दिल्ली में एक औपचारिक सम्मानसमारोह आयोजित किया गया हैं। इस वर्ष के कार्यक्रम का विषय ₹आत्मनिर्भर पंचायत,विकसित भारत की पहचान₹ है, जो विकसित भारत के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में आत्मनिर्भर पंचायतों के दृष्टिकोण को दर्शाता है ।इस सम्मान समारोह के दौरान एआई संचालित 'सभासार' एप्लिकेशन का शुभारंभ होगा और 'ग्रामोदय संकल्प पत्रिका' के 16 वें अंक का भी विमोचन हो रहा हैं ।इस वर्ष के विशेष अतिथियों में बड़ी संख्या में महिला पंचायत प्रतिनिधि शामिल हैं, जिन्होंने अपनी ग्राम पंचायतों में बेहतर बुनियादी ढांचा, बेहतर सार्वजनिक सेवाएं और समावेशी सामुदायिक पहल जैसे प्रत्यक्ष सुधार लाए हैं। पंचायती राज संस्थाओं की ये निर्वाचित महिला प्रतिनिधि ग्रामीण नेतृत्व की उभरती हुई शक्ति का उदाहरण हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी शासन संबंधीज़िम्मेदारियों को दूरदर्शी विकास दृष्टिकोणों के साथ सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं। इन्होंने हर घर जल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण, मिशन इंद्रधनुष जैसी प्रमुख सरकारी योजनाओं को साकार कराने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है और साथ ही जमीनी स्तरपर नवीन स्थानीय पहलों व समाधानों को प्रोत्साहित भी किया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2025-लाल किले की प्राचीर से पीएम द्वारा संबोधन देशवासियों सहित पूरे विश्व के लिए नीति घोषणा के रूप में देखा जाएगा15 अगस्त 2025 वैश्विक, राजनीतिक, आर्थिक व सुरक्षा परिदृश्य में भारत की स्थिति जिम्मेदारियों व चुनौतियों का प्रतीक बनेगा, लाल किले की प्राचीर से बहुपक्षीय संघर्ष, व्यापारिक टकरावों, जलवायु संकट, तकनीकी प्रतिस्पर्धा के बीच आत्मनिर्भर भारत का आगाज़ होगा।

महिंद्रा BE 6 का बैटमैन एडिशन लॉन्च, मैट ब्लैक रंग और खास फीचर्स से हुई लैस

Mahindra BE 6 Batman Edition launched महिंद्रा ने वार्नर ब्रदर्स के साथ मिलकर अपनी BE.6 का एक खास बैटमैन एडिशन लॉन्च किया है। यह स्पेशल एडिशन BE.6 को कस्टम साटन ब्लैक कलर में पेश करता है। इसमें मैट ब्लैक रंग कस्टम डिकल्स और प्रीमियम इंटीरियर थीम भी शामिल हैं। महिंद्रा ने BE.6 बैटमैन एडिशन को कई खास फीचर्स के साथ पेश किया है जो इसे और भी शानदार बनाते हैं।

नई दिल्ली। Mahindra ने Warner Bros के साथ मिलकर अपनी BE 6 का एक खास Batman Edition लॉन्च किया है। Mahindra BE 6 पहले से ही बेहतरीन लुक और कलर ऑप्शन के साथ आती थी, लेकिन इसे Batman एडिशन लाकर पहले से भी ज्यादा शानदार कर दिया गया है। इस स्पेशल एडिशन के जरिए BE 6 को कस्टम Satin Black कलर दिया गया है। इस खास एडिशन में एक मैट ब्लैक रंग, कस्टम डिकल्स, और प्रीमियम इंटीरियर थीम भी दिया गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Mahindra BE 6 Batman EditioN को किन खास फीचर्स के साथ लेकर आया गया है?

बाहरी डिजाइन और खासियत

Mahindra BE 6 Batman EditioN को दमदार और प्रभावशाली लुक देने के लिए इसे खास साटिन ब्लैक रंग में तैयार किया गया है। गाड़ी के फ्रंट दरवाजों पर कस्टम Batman डिकल, और पीछे की तरफ 'The Dark Knight' की बैजिंग दी गई है। इसके अलावा, हब कैप्स, फ्रंट फेंडर्स और रियर बंपर पर भी Batman का लोगो भी दिया गया है। इसमें 20 इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं।

इसके सस्पेंशन और ब्रेक कैलिपर्स पर एल्केमी गोल्ड कलर का पेंट है, जो साटिन ब्लैक बॉडी के साथ एक खास और बोल्ड कंट्रास्ट के रूप में दिखाता है। गाड़ी की छत पर द डार्क नाइट ट्रिलॉजी के बैट प्रतीक वाला इंफिनिटी रूफ भी दिया गया है। इसमें खास नाइट ट्रेल-कार्पेट लैंप्स भी दिया गया है, जिस पर द डार्क नाइट ट्रिलॉजी का बैट साइन बना हुआ है।

इंटीरियर और फीचर्स

Mahindra BE 6 Batman Edition के डैशबोर्ड पर नंबरिंग के साथ गोल्डन कलर की बैटमैन एडिशन प्लेट लगी हुई है, जो इसकी एक्सक्लूसिविटी को दिखाने का काम करता है। इसके इंटीरियर में सुनहरे सेपिया एक्सेंट स्टिचिंग के साथ साबर और लेदर की प्रीमियम अपहोल्स्ट्री दी गई है। साथ ही स्टीयरिंग व्हील, टच कंट्रोलर और इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक पर भी गोल्डन कलर के एक्सेंट दिए गए हैं। इसके अलावा डैशबोर्ड पर पिनस्ट्रिप ग्राफिक और बैटमैन ब्रांडिंग के साथ ड्राइवर कॉकपिट के चारों ओर सुनहरे हेलो के साथ चारकोल लेदर इंस्ट्रूमेंट पैनल दिया गया है।

बुकिंग, डिलीवरी और कीमत

Mahindra BE 6 Batman Edition को एक लिमिटेड एडिशन के रूप में लेकर आया गया है। इसकी केवल 300 यूनिट्स ही तैयार की गई है। Mahindra BE 6 बैटमैन एडिशन को 27.79 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इसकी बुकिंग 23 अगस्त से शुरू होगी और डिलीवरी 20 सितंबर को इंटरनेशनल Batman Day पर शुरू की जाएगी।

BMW की कारें 1 सितंबर से 3% तक हो जाएंगी महंगी, जानें कौन-से मॉडलों पर होगा असर?

BMW इंडिया अपनी कारों की कीमतों में 1 सितंबर 2025 से 3% तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। BMW Group India के अध्यक्ष एवं CEO श्री विक्रम पावाह ने विदेशी मुद्रा और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की गतिशीलता को लागत वृद्धि का कारण बताया है। कंपनी त्योहारी सीजन में नई गाड़ियां पेश करने के लिए तैयार है। भारत में BMW कई मॉडल्स का निर्माण करती है।

नई दिल्ली। BMW भारतीय बाजार में अपनी गाड़ियों की कीमत में बढ़ोतरी करने वाली है। कंपनी एक सितंबर 2025 से अपनी गाड़ियों की कीमत में 3 फीसद तक की बढ़ोतरी करेगी। कंपनी भारतीय बाजार में अपनी सबसे सस्ती कार BMW 2 Series Gran Coupe को 46.90 लाख रुपये की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत में पेश करती है और सबसे महंगी कार BMW XM को 2.60 करोड़ रुपये की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर करती है।

कीमत क्यों बढ़ाई गई?

BMW Group India के अध्यक्ष और CEO श्री विक्रम पावाह ने कहा कि वर्ष की पहली छमाही में BMW India की वृद्धि और बिक्री की गति उल्लेखनीय रही है। हालांकि, लगातार विदेशी मुद्रा का प्रभाव और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की गतिशीलता जैसे कारक सामग्री और लॉजिस्टिक्स लागत में वृद्धि का कारण बन रहे हैं।

इसके साथ ही उन्होंने आगे कहा कि ग्राहक यात्रा के दौरान सर्वोत्तम मूल्य और अनुभव प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता अटल है। त्योहारी सीजन में, हम अपनी कारों के कई नए पावर-पैक्ड प्रोफाइल पेश करने के लिए तैयार हैं। जैसा कि BMW की शानदार, अग्रणी कारों की मजबूत मांग जारी है, हम अपने मूल्यवान ग्राहकों को असाधारण प्रदर्शन और नवाचार प्रदान करेंगे।

भारत में ये गाड़ियां करती है ऑफर

BMW की स्थानीय रूप से उत्पादित कारों की रेंज में BMW 2 Series Gran Coupe, BMW 3 Series Long Wheelbase, BMW 5 Series Long Wheelbase, BMW 7 Series, BMW X1, BMW X3, BMW X5, BMW X7, BMW M340i, और BMW iX1 Long Wheelbase शामिल हैं। इसके साथ ही जर्मन कार निर्माता BMW i4, BMW i5, BMW i7, BMW i7 M70, BMW iX, BMW Z4 M40i, BMW M2 Coupe, BMW M4 Competition, BMW M4 CS, BMW M5, BMW M8 Competition Coupe, और BMW XM (प्लग-इन-हाइब्रिड) को पूरी तरह से निर्मित इकाइयों (CBU) के रूप में भी पेश करता है।

एथर इलेक्ट्रिक का धमाका, सब्सक्रिप्शन प्लान के साथ इलेक्ट्रिक स्कूटर लॉन्च

Ather इलेक्ट्रिक ने अपने दो इलेक्ट्रिक स्कूटर को BaaS सब्सक्रिप्शन के साथ पेश किया है जिससे शुरुआती कीमत कम हो गई है। एथर रिज़्टा की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 75999 रुपये और एथर 450 सीरीज की 84341 रुपये है। हीरो मोटोकॉर्प के बाद एथर दूसरी कंपनी है जो यह सुविधा दे रही है। कंपनी विस्तारित वारंटी भी दे रही है जो बैटरी और अन्य महत्वपूर्ण हिस्सों को कवर करती है।

नई दिल्ली। भारत के प्रमुख इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर निर्माताओं में से एक Ather Electric ने अपनो दो इलेक्ट्रिक स्कूटर को BaaS सब्सक्रिप्शन के साथ लॉन्च किया है। इसके साथ ही कंपनी विस्तारित व्यापक वारंटी (ECW) भी पेश की है। हीरो मोटोकॉर्प के बाद एथर दूसरी दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी बन गई है, जो अपने इलेक्ट्रिक स्कूटर को सब्सक्रिप्शन प्लान के तहत ऑफर कर रही है। आइए जानते हैं कि इसके तहत लोगों को क्या फायदा होगा?

BaaS के साथ कम शुरुआती कीमत

BaaS सब्सक्रिप्शन के साथ ग्राहक बैटरी के लिए शुरुआती भुगतान किए बिना Ather स्कूटर खरीद सकते हैं। इसके साथ ही वह मासिक बैटरी सब्सक्रिप्शन प्लान के ऑप्शन को चुन सकते है। इसकी कीमत एक रुपये प्रति किलोमीटर (1,000 किमी/माह के न्यूनतम के साथ 48 महीने के पैकेज पर आधारित) जितनी कम से शुरू होती है। इससे Ather Rizta की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 75,999 रुपये और Ather 450 सीरीज को एक्स-शोरूम कीमत 84,341 रुपये में खरीदा जा सकता है। BaaS सब्सक्रिप्शन प्लान की वजह से कीमत की तुलना में 30% तक की कमी है। ग्राहकों को भारत भर में Ather के 3,300 से ज्यादा फास्ट चार्जर पर एक साल की मुफ्त फास्ट चार्जिंग भी मिलेगी।

अस्योर्ड बायबैक और लंबी वारंटी

Ather ने इस साल की शुरुआत में एक पायलट के रूप में Assured Buyback Programme को लॉन्च किया था। इसके तहत तीन साल बाद स्कूटर के मूल्य का 60% तक और चार साल बाद 50% तक की पेशकश करता है, जो तय की गई किलोमीटर पर निर्भर करता है। नई ECW बैटरी और 11 जरूरी चीजों को कवर करती है, जिसमें मोटर, मोटर कंट्रोलर, डैशबोर्ड और चार्जर शामिल हैं। साथ ही पांच साल या 60,000 किमी (जो भी पहले हो) तक कवर करती है।

टाटा पंच ईवी दो नए कलर में लॉन्च, फास्ट चार्जिंग पहले से ज्यादा हुई अच्छी

टाटा मोटर्स ने अपनी सबसे किफायती इलेक्ट्रिक कार Tata Punch EV को नए रंग और बेहतर चार्जिंग स्पीड के साथ पेश किया है। अब यह प्योर ग्रे और सुपरनोवा कॉपर सहित सात रंगों में उपलब्ध है। DC फास्ट चार्जर से यह केवल 40 मिनट में 10-80% तक चार्ज हो जाती है और 15 मिनट की चार्जिंग में 90 किमी तक जा सकती है। इसमें 10 .25-इंच का डुअल-स्क्रीन सेटअप हैं।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स की सबसे किफायती इलेक्ट्रिक कारों में से एक Tata Punch EV अपने फ्यूचरिस्टिक डिजाइन से लोगों का ध्यान खींचती है। यह कई बेहतरीन फीचर्स और शानदार कलर के साथ आती है। अब इसे दो नए कलर और दे दिए गए हैं, जो Pure Grey और Supernova Copper है। यह दो नए कलर ऑप्शन मिलने के बाद अब यह सात कलर ऑप्शन में मिलेगी। नए कलर ऑप्शन के साथ ही कंपनी इसके लिए तेज DC चार्जिंग स्पीड भी दे रही है। आइए विस्तार में जानते हैं कि टाटा पंच ईवी को क्या नए अपडेट दिए गए हैं?

क्या है नया?

Tata Punch EV को दो नए बाहरी कलर ऑप्शन दिया गया है, जो Pure Grey और Supernova Copper है। इन कलर ऑप्शन के मिलने के बाद अब इसे कुल सात रंगों में ऑफर किया जाएगा, जो प्योर ग्रे (नया), सुपरनोवा कॉपर (नया), एम्पावर्ड ऑक्साइड, सीवीड, फीयरलेस रेड, डेटोना ग्रे और प्रिस्टाइन व्हाइट है। यह सभी कलर ऑप्शन ब्लैक रूफ के साथ डुअल-टोन शेड्स में ऑफर की जा रही है।

नया कलर ऑप्शन देने के साथ ही चार्जिंग स्पीड को भी पिछले मॉडल की तुलना में बेहतर किया गया है। अब इसमें एक DC फास्ट चार्जर को 10-80 प्रतिशत तक चार्ज होने में सिर्फ 40 मिनट लगते हैं, पहले इतना चार्ज होने में 56 मिनट लगते थे। इसके साथ ही अब इसे केवल 15 मिनट की चार्जिंग में 90 किमी तक का सफर किया जा सकता है।

Tata Punch EV के फीचर्स

इसमें 10.25-इंच के डुअल-स्क्रीन सेटअप (इंफोटेनमेंट और इंस्ट्रूमेंटेशन के लिए एक-एक) के साथ वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले जैसे फीचर्स दिया जाता है। इसमें रियर वेंट के साथ ऑटो AC, एक एयर प्यूरीफायर, दो ट्वीटर सहित 6-स्पीकर साउंड सिस्टम, एंबिएंट लाइटिंग, वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें और एक सिंगल-पेन सनरूफ भी मिलता है।

Punch EV में पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए छह एयरबैग, 60-डिग्री कैमरा, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC), और ऑटो होल्ड के साथ एक इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक के साथ ही ब्लाइंड स्पॉट व्यू मॉनिटर, हिल होल्ड कंट्रोल और हिल डिसेंट कंट्रोल जैसी सुरक्षा सुविधाएं दी जाती है।

Tata Punch EV की बैटरी और रेंज

ट्रिम	मीडियम रेंज (MR)	लॉन्ग रेंज (LR)
बैटरी पैक	25 kWh	35 kWh
इलेक्ट्रिक मोटर की संख्या	1	1
पावर	82 PS	122 PS
टॉर्क	114 Nm	190 Nm
दावा की गई रेंज	265 किमी	365 किमी
ड्राइवट्रेन	फ्रंट-व्हील-ड्राइव (FWD)	

Tata Punch EV की कीमत

वेरिएंट	कीमत (रुपये में)
Smart	9,99,000
Smart +	11,14,000
Adventure	11,84,000
Adventure LR	12,84,000
Adventure LR ACFC	13,34,000
Adventure S	12,14,000
Adventure S LR	13,14,000
Adventure S LR ACFC	13,64,000
Empowered	12,64,000
Empowered +	12,84,000
Empowered LR	13,44,000
Empowered LR ACFC	13,94,000
Empowered S	12,84,000
Empowered S LR	13,64,000
Empowered S LR ACFC	14,14,000
Empowered + LR	13,64,000
Empowered + LR ACFC	14,14,000
Empowered + S	13,14,000
Empowered + S LR ACFC	13,94,000

स्वतंत्रता के बाद से भारत के पुस्तकालय सुधार की महत्वपूर्ण यात्रा

विजय गर्ग

1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने पुस्तकालय सुधारों की एक महत्वपूर्ण यात्रा शुरू की है, जो औपनिवेशिक और रियासत के पुस्तकालयों के बिखरे हुए संग्रह को अधिक संरचित में बदल रही है, हालांकि अभी भी विकसित हो रही है, राष्ट्रीय प्रणाली। स्वतंत्रता के बाद से 78 वर्षों को प्रमुख कानून, प्रभावशाली संस्थानों की स्थापना और एक लोकतांत्रिक और साक्षर समाज में पुस्तकालयों की भूमिका की बढ़ती मान्यता द्वारा चिह्नित किया गया है। यहां स्वतंत्रता के बाद से भारत में पुस्तकालय सुधारों की यात्रा का अवलोकन किया गया है: प्रारंभिक स्वतंत्रता के बाद का युग (1947-1960)

राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापनाः स्वतंत्रता के बाद एक प्रमुख और तत्काल कदम कोलकाता में इंपीरियल लाइब्रेरी का नाम बदलकर 1948 में नेशनल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया कर दिया गया। इसने एक औपनिवेशिक संस्थान से राष्ट्रीय गौरव और ज्ञान के प्रतीक में बदलाव का संकेत दिया।

पुस्तकालय विधानः पुस्तकालय सुधार के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक राज्य-स्तरीय पुस्तकालय कानून के लिए धक्का रहा है। इनमें से पहला कार्य, मद्रास पब्लिक लाइब्रेरी एक्ट, 1948 में पारित किया गया था, मोटे तौर पर डॉ के प्रयासों के कारण। एसआर रंगनाथन, जिसे अक्सर ₹भारत में पुस्तकालय विज्ञान का जनक₹ कहा जाता है। इस अधिनियम, और बाद के अन्य राज्यों में, सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणालियों की स्थापना, रखरखाव और वित्तपोषण के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान किया।

द डिलीवरी ऑफ बुक्स (पब्लिक लाइब्रेरी) एक्ट, 1954: इस ऐतिहासिक कानून में कहा गया है कि भारत में प्रकाशकों को कोलकाता में नेशनल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया, चेन्नई में कोनमारा पब्लिक लाइब्रेरी, एशियाटिक सोसाइटी में प्रकाशित होने वाली हर किताब की एक प्रति जमा करनी होगी। बॉम्बे, और दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी। इस अधिनियम ने देश के साहित्यिक उत्पादन के संरक्षण को सुनिश्चित किया।

** दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (1951): यूनेस्को की मदद से स्थापित, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी एक आधुनिक, मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के लिए एक मॉडल थी। इसने मोबाइल पुस्तकालयों जैसी सेवाओं का बीड़ा उठाया और दूसरों का अनुसरण करने का एक खाका बन गया।

पंचवर्षीय योजनाएंः भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाओं ने पुस्तकालयों के महत्व को मान्यता दी। पहली योजना (1951-1956) का उद्देश्य राष्ट्रीय केंद्रीय पुस्तकालय और राज्य केंद्रीय पुस्तकालय स्थापित करना था। दूसरी योजना (1956-1961) ने सार्वजनिक पुस्तकालय विकास के लिए महत्वपूर्ण धन आवंटित किया। मध्य अवधि (1970s-1990s

राजा राममोहन रॉय लाइब्रेरी फाउंडेशन (आरआरआरएलएफ): भारतीय पुस्तकालय आंदोलन में एक वाटरशेड पल 1972 में आरआरआरएलएफ की स्थापना थी। संस्कृति मंत्रालय के तहत यह नींव सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली का समर्थन और प्रचार करने के लिए नोडल एजेंसी बन गई। यह पुस्तकालयों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करता है, नए पुस्तकालयों के गठन को प्रोत्साहित करता है, और पुस्तकालय सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकारों के साथ काम करता है।

अधिक राज्य-स्तरीय विधानः पुस्तकालय कानून के लिए धक्का जारी रहा। आंध्र प्रदेश (1960), कर्नाटक (1965), महाराष्ट्र (1967), और पश्चिम बंगाल (1979) जैसे राज्यों ने अपने स्वयं के पुस्तकालय अधिनियम बनाए, जिससे देश भर में सार्वजनिक पुस्तकालयों का अधिक व्यापक नेटवर्क बन गया।

पुस्तकालय और सूचना प्रणाली (NAPLIS) पर राष्ट्रीय नीतिः 1980 के दशक में, पुस्तकालयों के लिए एक राष्ट्रीय नीति तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया गया था। परिणामी दस्तावेज, जबकि कानूनी रूप से बाध्यकारी अधिनियम नहीं है, एक समन्वित राष्ट्रीय पुस्तकालय प्रणाली के लिए एक दृष्टि प्रदान की और धन, मानव संसाधन, और प्रौद्योगिकी के उपयोग जैसे मुद्दों को संबोधित किया । आधुनिक युग और चुनौतियां (2000-वर्तमान)

डिजिटलीकरण और आधुनिकीकरणः इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के आगमन के साथ, पुस्तकालय सुधारों का ध्यान स्थानांतरित हो गया है। पुस्तकालय संग्रह को डिजिटल बनाने, डिजिटल रिपॉजिटरी बनाने और संसाधनों तक ऑनलाइन पहुंच प्रदान करने के लिए पहल चल रही है। आरआरआरएलएफ इसमें एक प्रमुख खिलाड़ी रहा है, जो डिजिटल पुस्तकालयों और रिपॉजिटरी के निर्माण का समर्थन करता है।

चुनौतियां और अंतरालः महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, भारतीय पुस्तकालय प्रणाली अभी भी चुनौतियों का सामना कर रही है। एक प्रमुख मुद्दा कई राज्यों में पुस्तकालय कानून की कमी है, जो असंगत धन और एक संरचित पुस्तकालय नेटवर्क की कमी की ओर जाता है। कई स्थानों पर, मौजूदा पुस्तकालय अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी और पुराने संग्रह से पीड़ित हैं।

पुस्तकालयों की बदलती भूमिकाः आधुनिक पुस्तकालय अब केवल पुस्तकों का भंडार नहीं है। यह एक सामुदायिक केंद्र, सूचना, शिक्षा और सामाजिक संपर्क के लिए एक केंद्र में विकसित हो रहा है। इस नई भूमिका के लिए निरंतर सुधार की आवश्यकता होती है, जो इंटरनेट एक्सेस, व्यावसायिक प्रशिक्षण और अन्य समुदाय-आधारित सेवाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। अंत में, भारत में 78 साल के पुस्तकालय सुधार निर्माण और विकसित होने की एक सतत प्रक्रिया रही है। राष्ट्रीय पहचान और सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए एक कानूनी ढांचा स्थापित करने पर प्रारंभिक ध्यान देने से, यात्रा अब प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने और पुस्तकालयों को ज्ञान और सामुदायिक जुड़ाव के गतिशील केंद्रों में बदलने की ओर बढ़ गई है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब –

द फ्यूचर ऑफ द ब्रेन-इंस्पायर्ड कंप्यूटिंग

विजय गर्ग

मस्तिष्क से प्रेरित कंप्यूटिंग, जिसे न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग के रूप में भी जाना जाता है, एक क्रांतिकारी क्षेत्र है जो अधिक कुशल और बुद्धिमान कंप्यूटिंग सिस्टम बनाने के लिए मानव मस्तिष्क की संरचना और कार्य को दोहराने का प्रयास करता है। पारंपरिक कंप्यूटरों के विपरीत जो स्मृति और प्रसंस्करण (वॉन न्यूमन आर्किटेक्चर) को अलग करते हैं, न्यूरोमॉर्फिक सिस्टम इन कार्यों को एकीकृत करते हैं, बहुत कुछ मस्तिष्क के न्यूरॉन्स और सिनेप्स की तरह। यह प्रतिमान बदलाव प्रौद्योगिकी के भविष्य के लिए अपार वादा रखता है, विशेष रूप से पारंपरिक एआई की बढ़ती ऊर्जा मांगों के सामने। यहां मस्तिष्क से प्रेरित कंप्यूटिंग के भविष्य को आकार देने वाले प्रमुख पहलुओं का टूटना हैः प्रमुख ड्राइवर और अवसर

ऊर्जा दक्षताः मानव मस्तिष्क एक उल्लेखनीय कम बिजली बजट (लगभग 20 वाट) पर संचालित होता है। आधुनिक एआई में ऊर्जा की खपत की महत्वपूर्ण चिंता को संबोधित करते हुए न्यूरोमॉर्फिक चिप्स को इस दक्षता की नकल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह उन्हें एज एआई में अनुप्रयोगों के लिए आदर्श बनाता है, जहां स्मार्ट सेंसर और वियरेबल जैसे उपकरणों को निरंतर बिजली स्रोत के बिना स्थानीय रूप से डेटा को संसाधित करने की आवश्यकता होती है।

वास्तविक समय प्रसंस्करण और कम विलंबताः मस्तिष्क की समानांतर प्रसंस्करण क्षमताएं इसे तुरंत जटिल जानकारी को संभालने की अनुमति देती हैं। न्यूरोमॉर्फिक सिस्टम का उद्देश्य एक समान कम विलंबता प्रदर्शन को प्राप्त करना है, जो स्वायत्त वाहनों, रोबोटिक्स और औद्योगिक स्वचालन जैसे अनुप्रयोगों के लिए महत्वपूर्ण है जहां त्वरित, वास्तविक समय का निर्णय लेना आवश्यक है।

अनुकूलनशीलता और स्व-शिक्षणः अनुभव से सीखने और अनुकूलन करने की मस्तिष्क की क्षमता न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग के लिए एक मुख्य प्रेरणा है। स्पाइकिंग न्यूरल नेटवर्क (एसएनएन) और मस्तिष्क से प्रेरित अन्य एल्गोरिदम का उपयोग करने वाले सिस्टम लगातार अपने मॉडल का अनुकूलन कर सकते हैं और अस्पष्ट या खराब परिभाषित डेटा के साथ भी समय के साथ अपनी सटीकता में सुधार कर सकते हैं।

उपन्यास कम्प्यूटिंग प्रतिमानः मस्तिष्क से प्रेरित कंप्यूटिंग नए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के विकास को बढ़ावा दे रहा है। इसमें शामिल हैः

एनालॉग बनाम डिजिटल न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंगः शोधकर्ता दोनों एनालॉग सिस्टम की खोज कर रहे हैं जो निरंतर सिग्नल प्रोसेसिंग और डिजिटल सिस्टम का उपयोग करते हैं जो पारंपरिक बाइनरी सर्किट के माध्यम से एसएनएन को लागू करते हैं।

मेमोरिस्टर्सः ये उभरते हुए मेमोरी डिवाइस हैं जो न्यूरॉन्स के सिनेप्टिक प्लास्टिसिटी की नकल कर सकते हैं, जिससे इन-सीटू प्रोसेसिंग और मेमोरी की अनुमति मिल सकती है।

अनुप्रयोग ड्राइविंग विकासः न्यूरोमॉर्फिक बाजार में महत्वपूर्ण विकास देखने का अनुमान है, जिसमें प्रमुख अनुप्रयोग शामिल हैंः

एज एआई और आईओटीः स्थानीय स्तर पर डेटा को संसाधित करने के लिए स्मार्ट सेंसर और पहनने योग्य जैसे उपकरणों को डालना, क्लाउड पर निर्भरता को कम करना।

रोबोटिक्सः स्वायत्त रोबोट के लिए कम विलंबता नेविगेशन और नियंत्रण को सक्षम करना।

हेल्थकेयरः चिकित्सा इमेजिंग, निदान और व्यक्तिगत उपचार योजनाओं में सहायता करना।

ब्रेन साइंस रिसर्चः वैज्ञानिकों को तंत्रिका प्रक्रियाओं का अधिक सटीक अध्ययन करने में मदद करने के लिए जानवरों के दिमाग (₹डार्विन बंदर₹ प्रणाली की तरह) के बड़े पैमाने पर सिमुलेशन बनाना। चुनौतियां और भविष्य के निर्देश जबकि क्षमता विशाल है, मस्तिष्क से प्रेरित कंप्यूटिंग कई चुनौतियों का सामना करता हैः

मानकों और टूलचेन की कमीः क्षेत्र अभी भी अपने शुरुआती चरणों में है, और न्यूरोमॉर्फिक तकनीक को मौजूदा प्रणालियों में एकीकृत करने के लिए अधिक सुलभ और आसान बनाने के लिए मानकीकृत हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर टूलचेन की आवश्यकता है।

हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर सह-डिजाइनः न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग के लाभों को पूरी तरह से महसूस करने के लिए, शोधकर्ताओं को एक सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है जो अग्रानुक्रम में काम करने के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर परतों को सह-डिजाइन करता है, जैसे मस्तिष्क की परस्पर प्रणाली न्यूरॉन्स और सूचना प्रसंस्करण।

स्केलिंग और जटिलताः जबकि अरबों न्यूरॉन्स के साथ न्यूरोमॉर्फिक सिस्टम बनाने में प्रभावशाली प्रगति की गई है, वे अभी भी मानव मस्तिष्क के 100 ट्रिलियन सिनेप्टिक कनेक्शन से एक लंबा रास्ता तय कर रहे हैं। इन प्रणालियों को कुशलतापूर्वक और लागत प्रभावी ढंग से स्केल करना एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

सामग्री विज्ञानः नई सामग्रियों का विकास, जैसे दो आयामी वैनवाला सामग्री और स्मृति उपकरणों, ऊर्जा कुशल और कॉम्पैक्ट न्यूरोमॉर्फिक चिप्स की अगली पीढ़ी के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। अंत में, मस्तिष्क से प्रेरित कंप्यूटिंग का भविष्य पारंपरिक वॉन न्यूमन वास्तुकला की सीमाओं से परे जाने के लिए तैयार है। मस्तिष्क की अविश्वसनीय दक्षता और अनुकूलनशीलता के सिद्धांतों का उपयोग करके, यह क्षेत्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता को फिर से परिभाषित करने और रोबोटिक्स और एज कंप्यूटिंग से लेकर चिकित्सा और वैज्ञानिक अनुसंधान तक हर चीज में नवाचार की अगली लहर को चलाने के लिए तैयार है।

आनंद के सूत्र : विजय गर्ग

मानव जीवन प्रकृति द्वारा दिया गया एक अमूल्य वरदान है, लेकिन यह जीवन भी अलग-अलग तरह की इच्छाओं, सुखों और कष्टों से जुड़ा हुआ है। मनुष्य का स्वाभाविक गुण है कि वह जीवनपर्यंत सुख और आनंद को भोगना चाहता है, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो पाता, क्योंकि जिस आनंद की उसे चाह है, वह सच्चा आनंद है ही नहीं । आनंद तो एक ऐसा भाव है जो आत्मा की अनंत गहराइयों से उपजता है। इसका बाह्य वातावरण और परिवेश से लेशमात्र भी लेना-देना नहीं होता है। भौतिकता कभी आनंद का स्रोत नहीं हो सकती। बाहरी जगत की वस्तुएं, व्यक्ति और परिस्थितियां सच्चे आनंद का आधार निर्मित करने में कभी समर्थ नहीं हो सकती हैं। कबीरदास ने कहा है, 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढ़े बन माहि। ऐसे घट घट राम हैं, दुनिया देखत नाहि।' ठीक यही स्थिति आज मनुष्य की है। सही मायने में देखा जाए तो सच्चे आनंद के सूत्र स्वयं मनुष्य के पास ही होते हैं, लेकिन बुद्धि और विवेक पर अज्ञानता का आवरण होने के कारण वह उसे पहचानने में असमर्थ एवं असफल रहता है। आनंद का प्रथम और सबसे अहम सूत्र है- आत्मबोध या आत्मचिंतन । मगर बाह्य विषयों के मायाजाल में बुरी तरह जकड़ा होने के कारण मनुष्य इस अमूल्य सूत्र को ढूंढ़ने के लिए समय नहीं निकाल पाता। उसकी दशा कहीं न कहीं उस हिरन जैसी हो जाती है जो अपनी ही नाभि में स्थित कस्तूरी को नहीं ढूंढ़ पाता और यहां वहां मारा-मारा फिरता है। आत्मचिंतन हमें भले ही कुछ समय के लिए बाह्य जगत की चकाचौंध से दूर लिए जाता है, लेकिन जिस मनुष्य ने एक बार भली-भांति आत्मचिंतन, आत्मनिरीक्षण और आत्मावलोकन की प्रक्रिया को साध लिया, वह आनंद की एक ऐसी अवस्था को प्राप्त कर लेता है जो दिव्य और अनुपम होती है। आत्मचिंतन और आत्मबोध रूपी कुंजी जिसके हाथ लग गई, वह अनेक व्यर्थ के

बंधनों से मुक्ति पाकर स्वयं के आंतरिक जगत में ही अपार प्रसन्नता को प्राप्त कर लेता है। आत्मबोध हो जाने पर बाहरी सुख नितांत निम्न कोटि के प्रतीत होने लगते हैं। लेकिन आनंद की इस दुर्लभ कुंजी को प्राप्त कर पाना भी बेहद दुष्कर कार्य है। इसके लिए हमें बाह्य विषयों से विमुख होते हुए 'स्व' पर केंद्रित होकर अपने आप को जानने के लिए कठिन साधना में रत होना पड़ेगा।

आनंद का दूसरा महत्त्वपूर्ण सूत्र है स्वीकृति । अगर हम सच्चे अर्थों में आनंद के सागर में डूबना चाहते हैं, तो हमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को स्वीकार करना पड़ेगा। परिस्थितियां हमारे अनुकूल भी होंगी और प्रतिकूल भी । मगर जहां हमें अनुकूल परिस्थितियों में उत्साह के भाव से ओतप्रोत रहना होगा, वहीं प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना होगा। घड़ी घड़ी परिवर्तनशील जीवन की नौका सदैव हमारी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं चल सकती। इस सत्य को स्वीकारते हुए जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में संतुलित मानसिक अवस्था को बनाए रखना आनंद का दूसरा प्रमुख सूत्र है । आनंद के तीसरे सूत्र के रूप में हम कृतज्ञता पर गौर कर सकते हैं। जब हम छोटे-छोटे अवसरों पर भी दूसरों के प्रति कृतज्ञता का भाव रखेंगे तो निश्चित रूप से हम अहम के भाव से पूर्णतया मुक्त हो जाएंगे। यह अहम का भाव ही है जोकि हमें सच्चे आनंद से दूर ले जाता है। जिस दिन हमारे अंतर्मन से अहं का अंधकार समाप्त हो जाएगा, उसी दिन हमारा अंतर्मन एक दिव्य आनंद के आलोक से जगमगा उठेगा। प्राणियों के प्रति सेवाभाव भी आनंद का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है। जब हम दूसरों के कष्ट में स्वयं अपने कष्ट को अनुभव करने लगेंगे, तब हमारे अंदर दूसरों के प्रति दया, करुणा और सेवा की भावना जागृत होगी। ऐसा करके हम आत्मतृप्ति के अद्भुत भाव से पूरित हो जाएंगे और आनंद की सरिता हमारे अंतर्मन को पूरी तरह से सिक्त कर देगी।

आनंद कोई क्षणिक भाव नहीं है जो एक बार मन में उत्पन्न हुआ और कुछ ही देर में समाप्त हो गया, बल्कि यह एक गहरा और

शाश्वत भाव जो अगर एक बार

अंतर्मन में समा गया, तो फिर हृदय और मन हमेशा के लिए एक अद्भुत दिव्यता के भाव से सराबोर हो जाते हैं। बाह्य जगत और बाहरी साधनों में आनंद को ढूंढ़ना पूरी तरह से बेमानी कृत्य होगा । सच्चा आनंद तभी उत्पन्न हो सकता है, जब हम अपने अंतर्मन में कृतज्ञता, करुणा, सहयोग और निस्वार्थ सेवा के भावों को समेटते हुए जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को स्वीकारना सीख जाते हैं। सच्चा आनंद तो वास्तव में हमारी अंतरात्मा में ही छिपा हुआ है। सिर्फ आवश्यकता अज्ञानता, स्वार्थ और अहंकार के आवरण को हटाने की है। जिस दिन और क्षण हम इन सभी दुर्गुणों से दूर हो जाते हैं, उसी दिन हम सच्चे आनंद तक पहुंचने का मार्ग भी प्राप्त कर लेते हैं।

आनंद एक ऐसा स्थायी भाव है जो मानसिक शांति, आत्मस्वीकृति और आत्मबोध के माध्यम से हृदय की गहराइयों में उत्पन्न होता है। यह निश्चित है कि एक बार सच्चे आनंद का स्वाद मिल जाने पर अन्य सभी छद्म आनंद मूल्यहीन प्रतीत होने लगेंगे। सच्चे आनंद को आत्मसात करने के लिए हमें प्रकृति और उसके सभी अंगों, जैसे साहित्य, संगीत, कला, ध्यान, योग और प्रार्थना से गहरा जुड़ाव रखना होगा, क्योंकि प्रकृति से जुड़कर ही हम सभी कठिनाइयों से मुक्त हो सकते हैं। जीवन की प्रत्येक मुश्किल का समाधान प्रकृति है । जब मुश्किलें ही नहीं रहेंगी तो फिर निस्संदेह जीवन में आनंद ही आनंद होगा। यह कहा जा सकता है कि सच्चे आनंद के सूत्र खुद हमारे अंदर ही निहित हैं । उन्हें कहीं भी बाहर जाकर खोजने की आवश्यकता नहीं है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी : अनेक साथी

विजय गर्ग

सुरेखा ने घड़ी में समय देखा। रात के नौ बज रहे थे। वह जानती कि आज छुट्टी का दिन है और बड़ा बेटा विकास घर पर होगा। वहां डलास शहर (अमेरिका) में इस समय दिन के ग्यारह बज रहे होंगे। उसने विकास को फोन मिलाया।

'नमस्ते मम्मी कैसी हो?' उधर से विकास की आवाज सुनाई दी।

'मैं ठीक हूं। तू सुना, कैसा है? रीमा और दोनों बच्चे टिंकू-पिंकू कैसे हैं?'

'सब ठीक है मम्मी।'

'विकास तेरे पापा का स्वर्गवास हुए छह महीने हो चुके हैं। इन छह महीनों में मैंने तुझे कई बार फोन किये हैं। अब यह मेरा अन्तिम फोन है। तू भी अच्छी तरह जानता है कि मैं यह फोन क्यों कर रही हूं।'

'जानता हूं मम्मी

'देख बेटे, जब तक तेरे पापा थे तो मुझे कोई चिन्ता न थी। दुर्घटना के कारण उनकी बहुत दर्दनाक मृत्यु हुई। वह सरकारी अफसर रहे। रिटायरमेंट के बाद उनको बीमारियों ने घेर लिया था। बहुत कष्ट सहे उन्होंने। उनके चले जाने के बाद मैं बिल्कुल अकेली हो गई हूं। इतने बड़े घर में अकेलापन सहा नहीं जाता। मैं आज तुझसे आखिरी बार पूछ रही हूं कि तू यहां आयेगा या नहीं?'

'मम्मी मैं नहीं आ पाऊंगा। मैं यहां अच्छी तरह सैटल हो गया हूं। बच्चों को भी यहां की नागरिकता मिल चुकी है। इतनी अच्छी नौकरी है। हर सुविधा मिल रही है। इतने साल हो चुके हैं यहां रहते-रहते। रुपये-पैसे की कोई कमी नहीं है। वहां पापा सरकारी अफसर रहे। खूब रुपया, जायदाद बनाई। मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। आप छोटे भाई विपुल को वहां बुला लो न। वह भी तो परिवार के साथ ह्यूस्टन शहर (अमेरिका) में रह रहा है।'

'मैं उसे भी कई बार कह चुकी हूं। वह भी यही सब कहता है जो तू कह रहा है।'

'मम्मी वहां उस छोटे से शहर में क्या करेंगे आकर? इतने साल हो गये वह शहर पहले जैसा ही है। हर ओर भीड़-भाड़, टूटी-फूटी सड़कें, बिजली-पानी की कमी व बढ़ता प्रदूषण।'

'इस छोटे से शहर की हवा, मिट्टी और पानी से ही तू पलकर बड़ा हुआ। देश में पढ़ाई-लिखाई कर किसी योग्य बना और जब देश की सेवा करने का मौका मिला तो विदेश में जाकर बस गया। भूल गया कि यहां तेरी मम्मी भी है।'

'ठीक है मम्मी! तुम वहां रहो। करोड़ों की जायदाद तुम्हारे पास है, तुम चाहो तो इस आयु में अपना कोई नया जीवनसाथी ढूंढ़ सकती हो। हमें कोई एतराज नहीं होगा। इतना धन देखकर तो बहुत रिश्तेदार तुम्हारे पास रहने को तैयार हो जायेंगे। तुम अपना अकेलापन किस तरह दूर करोगी, यह तुम्हारी इच्छा है।' उधर से विकास का स्वर सुनाई पड़ा।

सुरेखा ने फोन का स्विच ऑफ कर दिया। वह बिस्तर पर लेट गई। उसके हृदय पर भारी बोझ-सा बढ़ता चला गया। यह बोझ उसके अपने बेटों ने ही दिया था।

सुरेखा की दृष्टि दीवार पर लगे पति शोभित के फोटो पर चली गई। वह एकटक देखती रही। समझ नहीं पा रही थी कि क्या करें? मन ही मन कहने लगी आप तो चले गये मुझे अकेली छोड़कर। मायके दोनों बेटों ने भी मुझे बिल्कुल अकेला कर दिया। अब इस अकेलेपन से कैसे उबर पाऊंगी?'

सुरेखा पुरानी यादों में पहुंचने लगी। उसे याद आ रही थी बीते जीवन की एक-एक घटना... एक कस्बे में उसका परिवार रहता था। मां-पापा और एक छोटा भाई। कस्बे में पापा की परचून की दुकान थी। वह बी.ए. तक पढ़ी थी। वह तो एम.एम. करना चाहती थी, परंतु एक अच्छा रिश्ता आया तो पापा मना नहीं कर सके क्योंकि लड़का एक सरकारी अफसर था। उसका गौरा रंग, तीखे नयन-नक्श, छरहरा शरीर देखकर शोभित ने उसे एकदम पसंद कर लिया था। चट मंगनी और पट शादी हो गई।

शोभित का परिवार चन्दनपुर में रहता था। शोभित अपने मम्मी-पापा का इकलौता बेटा था। वह शुरू से ही पढ़ाई में बहुत होशियार रहा। उसके पापा की कपड़े की एक छोटी-सी दुकान थी। शोभित एक सरकारी विभाग में अफसर बन गया।

शादी के बाद वह ससुराल आ गई। उसने घर का पूरा काम-काज संभाल लिया था।

उसने सारा जीवन कम खर्चा करते हुए सादगी पूर्ण जीवन जिया। वह सदा दिखावे की दुनिया से दूर रही।

पति शोभित का विभिन्न नगरों में तबादला होता रहता था। शादी के बाद पांच वर्षों में वह दो बेटों की मां बन गई। बड़े का नाम रखा गया विकास और छोटे का विपुल। अपने पापा की तरह दोनों बच्चे पढ़ाई में बहुत तेज थे।

अधिकारी बनने के बाद शोभित के पास धन की कमी न रही। उसने गांधी रोड पर एक हजार मीटर का प्लॉट खरीद कर पांच छह कमरों का मकान बनवा लिया था। उस मकान में शोभित के मम्मी व पापा रहने लगे। कभी मन करता तो वह भी कुछ दिन के लिये रहने आ जाती थी।

एक रात शोभित के मम्मी-पापा की ट्रेन दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। वे दोनों तीर्थयात्रा से लौट रहे थे। अब दुकान कौन देखेगा? क्योंकि दोनों बेटे विकास और विपुल अभी पढ़ रहे थे। शोभित भी चाहते थे कि दोनों बेटे पढ़-लिखकर कुछ बन जायें। इसलिये दुकान व पुराने मकान को बेच दिया गया।

कुछ वर्षों में ही दोनों बेटों ने इंजीनियरिंग कर ली और एक बड़ी कम्पनी में बंगलुरू में नौकरी मिल गई। दोनों की शादी कर दी गई। शादी के बाद दोनों अपनी पत्नी के साथ बंगलुरू में रहने लगे।

कुछ समय बाद कम्पनी ने दोनों को अमेरिका भेज दिया। विकास को डलास व विपुल को ह्यूस्टन में भेजा। अमेरिका में ही दोनों के परिवार बढ़े। विकास के यहां दो बेटों ने जन्म लिया और विपुल के यहां दो बेटियों ने। इतने वर्षों में वह और शोभित केवल दो बार ही अमेरिका अपने बेटों से मिलने गये। उनके परिवार के बीच रहकर बहुत अच्छा लगा था।

तब शोभित ने विकास से कहा था, 'भारत कब आ रहे हो?'

'पापा वहां आकर क्या करेंगे? जितने रुपये यहां मिल रहे हैं, इतने तो कोई कम्पनी वहां नहीं देगी और फिर यहां हमें कोई परेशानी नहीं है। हर तरह से मौज ही मौज है। दोनों बच्चों को भी यहां की नागरिकता मिल चुकी है।'

'मेरे रिटायरमेंट के बाद जब मैं और तुम्हारी मम्मी रह जायेंगे, तब लगेगा कि अपने बच्चों का परिवार भी अपने साथ होना चाहिए।'

'यह सोच पहले जमाने में हुआ करती थी। अरे हां मैं तो भूल ही गया कि आप भी पुराने जमाने के हो। अब तो यहां से छोड़ कर कभी आया नहीं जायेगा।'

यही उत्तर विपुल का था। वह भी अमेरिका छोड़कर भारत नहीं आना चाहता था।

शोभित साहित्य प्रेमी थे। घर पर पुस्तकों की लाइब्रेरी बना रखी थी। शोभित ने नौकरी करते समय तीन प्लॉट ले लिये थे। अच्छा-खासा बैंक बैलेंस भी हो गया था।

शोभित का रिटायरमेंट हो गया और वह घर पर ही रहने लगे।

एक दिन शोभित सोफे पर पसरे हुए आंखें बंद करके कुछ सोच रहे थे। उसने शोभित के पास आकर कहा था, 'क्या सोच रहे हो?'

'सोच रहा हूं कि जीवन में बच्चों के लिये बड़ा मकान बनाना बेकार है। हम यह सोचकर बड़ा मकान बनाते हैं कि इसमें हमारे बच्चे हमारे साथ रहेंगे। हमारे बुढ़ापे का सहारा बनेंगे, परंतु ऐसा नहीं हो पाता। मां-पापा से दूर रहना चाहते हैं। वे भूल जाते हैं कि कल उनको सहारे की जरूरत थी, जो मां-बाप से मिला और आज मां-बाप को जरूरत है जिसकी ओर से आंखें बन्द कर ली जाती हैं।'

'हां यही तो हो रहा है आजकल। सबसे ज्यादा दुख तो मां-बाप को उस समय होता है जब कोई बेटा यह कह देता है कि आप अपनी जिंदगी जियो और हमें अपनी जिंदगी जीने दो।'

'सुरेखा मैं जानता हूं कि हमारे दोनों बेटों में से कोई यहां नहीं आयेगा। अब हमें उनको यहां आने के लिये कहना भी नहीं है। अब तो हमें हंसी-खुशी बाकी का जीवन कहना होगा। हमें अपनी दिनचर्या में कुछ बदलाव लाने होंगे।'

'हां ठीक कहते हो आप।' उसने कहा था।

इसके बाद दोनों ने ही जीवन में कुछ नये बदलाव कर लिये थे। सुबह जल्दी उठकर पार्क में पहुंचना। भाग-दौड़, योग व्यायाम आदि करना। दोनों ही तीन-चार सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ गये। पुस्तकें पढ़ने का शौक तो शोभित को बहुत पहले से था। पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते। दोनों ने स्वयं को व्यस्त कर दिया था।

एक दिन अचानक ही एक कार दुर्घटना में शोभित की मृत्यु हो गई।

उसने कभी सपने में भी न सोचा था कि दो बेटों के होते हुए भी उसे ही अपने पति का अन्तिम संस्कार कराना पड़ेगा।

शोक सभा में पांच दिन पहले विकास, विपुल अपनी पत्नी व बच्चों के साथ आ गये थे। उन दोनों के चेहरे पर अपने पापा के चले जाने का जरा भी दुख नहीं था। ब्रह्म भोज व शोकसभा के बाद रिश्तेदार मेहमान आदि चले गये।

एक रात उसने विकास व विपुल को अपने कमरे में बुलाकर कहा था, 'बेटे, तुम्हारे पापा के जाने के बाद अब मैं बिल्कुल अकेली हो गई हूं। अकेले यह जीवन कैसे काट पाऊंगी। अकेले इतने बड़े घर में कैसे रहूंगी? मैं चाहती हूं तुम दोनों में से कोई भी एक मेरे पास रहे।'

'बहुत कठिन है मम्मी। फिर भी हम इस बारे में विचार कर बता देंगे।' विकास ने बात को टालते हुए कहा।

एक सप्ताह बाद विकास व विपुल अपने परिवारों के साथ अमेरिका लौट गये।

बार-बार शोभित का चेहरा आंखों के आगे आ रहा था। शोभित के बिताये गये जीवन की अनेक घटनाएं सामने आ रही थीं। सारी रात बिना नींद के ही व्यतीत हो गई। सुबह के पांच बज रहे थे। सुरेखा ने एक अटूट निर्णय लिया। नेत्र नींद से बोझिल होने लगे और वह निश्चिंत होकर सो गई। डोर बेल बज रही थी। सुरेखा की आंख खुली। उसने दीवार घड़ी में समय देखा-दस बज रहे थे। गोमती कामवाली आ गई होगी।

उसने उठकर दरवाजा खोला। सामने गोमती ही खड़ी थी।

'नमस्ते मेम साहब, अभी तक सो रही थी। लगता है रात भी नींद नहीं आई।' गोमती ने कहा। वह जानती थी कि प्रायः ऐसा होता रहता है।

दोपहर खाने के बाद सुरेखा ने अपनी तीन महिला मित्रों को फोन मिलाये और शाम पांच बजे अपने घर आने के लिये कहा कि कुछ जरूरी बात करनी है।

उसकी तीनों महिला मित्र बिमला, सुनयना व रजनी थी। इन सभी से उसका खूब मेलजोल था। सभी उसकी बहुत विश्वसनीय थीं। उन सभी की स्थिति भी सुरेखा की तरह थी। सभी अपने-अपने घरों में एकाकी जीवन जी रही थी। इनके बच्चे भी विदेशों में नौकरी कर रहे थे। वे भी भारत लौटने को तैयार नहीं थे। बिमला के पति थे जबकि सुनयना व रजनी के पति की कुछ साल पहले मौत हो चुकी थी। तीनों के पास रुपये-पैसे की कमी न थी। रहने को बड़ी-बड़ी कोठी थी। तीनों के दुख सुरेखा की तरह थे।

पांच बजे बिमला, सुनयना व रजनी सुरेखा के घर जा पहुंची।

बिमला ने एकदम पूछा, 'कहो सुरेखा क्या बात है?'

'पहले आप चाय-वाय तो पी लो उसके बाद बात करते हैं।' सुरेखा ने कहा।

वे तीनों बार-बार सुरेखा के चेहरे की ओर देख रही थी।

चाय पीते हुए सुरेखा ने कहा, 'रात मैंने विकास को अमेरिका फोन किया था यह जानने के लिये कि वह यहां आ रहा है या नहीं, परंतु उसने साफ मना कर दिया। मैंने भी उसे कह दिया कि वह मेरा अन्तिम फोन है। उसके बाद कभी यहां आने के लिये नहीं कहूंगी।

वे तीनों बहुत ध्यान से सुन रही थीं।

सुरेखा ने जो भी बातें हुई थीं, सारी बता दीं।

रजनी बोल उठी, 'यही तो हमारी समस्या है कि अब हम क्या करें? बच्चे अपने परिवार के साथ विदेशों में मस्त हैं और यहां हम एक-एक दिन किस तरह अकेले काट रहे है, बस हमें ही मालूम है। दिन तो किसी तरह व्यतीत हो जाता है, परंतु रात बहुत लम्बी होती चली जाती है।'

'मैंने कुछ सोचा है।' सुरेखा ने कहा।

वे तीनों उसके चेहरे को पढ़ने का प्रयत्न करने लगीं।

सुरेखा बोली, 'मैंने सोचा है कि यह मकान व प्लॉट आदि बेचकर एक सीनियर सिटीजन होम का निर्माण कराऊं। जिसमें बीस-तीस कमरे होंगे। भोजन आदि की पूरी व्यवस्था रहेगी। मैं भी उसी में रहूंगी। हम तो अकेलेपन की पीड़ा इसलिये भुगत रहे हैं कि विदेशों में रह रहे हमारे बच्चों ने हमको अकेला कर दिया है। लेकिन हर नगर में ऐसे बुजुर्गों की कमी नहीं है जिनके बेटे-बहुएं साथ रहते हुए भी उनको बहुत दुखी करते हैं।'

यह सब तो हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। बहुत नेक व परोपकारी विचार हैं। इसमें हमारी जो भी मदद होगी, मैं करने को तैयार हूं। विमला ने कहा।

'और हम भी।' सुनयना व रजनी एक साथ बोल उठीं।

इस काम में विमला के पति महेन्द्र प्रकाश ने बहुत मदद की। एक बिल्डर उसका जानकार था उससे पूरा प्रोजेक्ट बनाया। सुरेखा का उनका घर बनाने का सपना पूरा होने में एक साल लग गया।

सुरेखा अपनी दो मित्रों रजनी व सुनयना के साथ वहीं रहने लगी। कुछ माह में ही उनका घर में पांच वृद्ध तथा सात वृद्धायें आ गईं जिनको ऐसे ही आश्रय की जरूरत थी।

उसने एक दिन विशाल को फोन मिलाया तो सुनाई दिया। 'मम्मी कैसी हैं आप? मैंने कई बार आपको फोन मिलाया पर आपने फोन ही नहीं उठाया। आपकी तबीयत तो ठीक है न?'

'हां, मैं बिल्कुल ठीक हूं। मैं तो अपना अकेलापन दूर करने का प्रबन्ध कर रही थी।'

'क्या कोई जीवन साथी मिल गया है?'

'जीवन साथी नहीं पर अनेक साथी मिल गये हैं। अब मेरा बहुत बड़ा परिवार हो गया है।'

'क्या मतलब? मैं समझा नहीं?'

'मैंने अपना ही नहीं अनेक लोगों का अकेलापन दूर करने का प्रबन्ध कर दिया है। उनका घर बनाकर।' कहते हुए सुरेखा ने सब कुछ बता दिया।

'चलो ठीक है मम्मी जैसा आपने किया आपकी इच्छा।' विकास का उदास स्वर सुनाई दिया।

सुरेखा ने फोन काट दिया। उसके चेहरे पर अकेलेपन की पीड़ा नहीं अपितु भरपूर परिवार मिलने की प्रसन्नता थी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

भारत@79: अटूट शक्ति की ओर

"79 वर्षों की यात्रा से विश्व-नेतृत्व की दहलीज़ तक — भारत का समय अब है।" 79 वर्ष पहले मिली स्वतंत्रता केवल एक तारीख या घटना नहीं, बल्कि करोड़ों सपनों की जीत थी। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। पर अब सवाल है — क्या हम विश्व की सबसे मज़बूत, सम्मानित और मार्गदर्शक शक्ति बन सकते हैं? इसके लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता, तकनीकी नेतृत्व, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, सामाजिक एकता और नैतिक वैश्विक भूमिका अनिवार्य है। भारत की सभ्यतागत बुद्धि और युवा ऊर्जा मिलकर 21वीं सदी को आकार दे सकती है। तिरंगे की हर लहर हमें याद दिलाती है — प्रगति एक सतत यात्रा है, ठहराव नहीं।

डॉ. सत्यवान सौरभ

आज से उनहत्तर वर्ष पहले जब आधी रात का समय आया, इतिहास ने करवट ली। अंधकार के गर्भ से एक नए युग का जन्म हुआ। गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा यह देश अचानक स्वतंत्रता की धूप में नहा गया। तिरंगा केवल लाल किले की प्राचीर पर ही नहीं, बल्कि करोड़ों दिलों में लहराया। वह दिन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का उद्घोष नहीं था, बल्कि आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की पुनर्स्थापना का भी आरंभ था। परंतु आज, जब भारत अपनी स्वतंत्रता के उनहत्तरवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, हमें यह प्रश्न करना होगा — क्या हमने उस स्वतंत्रता को केवल स्मृति के रूप में सहेजा है या उसे विश्व की सबसे मज़बूत शक्ति में बदलने का संकल्प लिया है?

स्वतंत्रता का मूल्य केवल इतिहास की किताबों में नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन में मापा जाता है। जब कोई किसान अपने खेत में बीज बोते समय यह विश्वास रखता है कि उसकी मेहनत का फल उसे मिलेगा, जब कोई छात्र अपने विद्यालय में यह सपना देखता है कि वह विज्ञान, साहित्य, कला या खेल में नयी ऊँचाइयाँ छू सकता है, जब कोई महिला निर्भय होकर अपने घर से बाहर कदम रखती है — तभी स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ साकार होता है।

भारत आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसकी जनसंख्या एक सौ चालीस करोड़ से अधिक है। यह संख्या केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि एक जीवंत ऊर्जा है। यह ऊर्जा, यदि सही दिशा और दृष्टि मिले, तो हमें विश्व का सबसे मज़बूत और सम्मानित राष्ट्र बना सकती है। हम पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं, और हमारे पास विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान और सांस्कृतिक विरासत में अद्वितीय सामर्थ्य है। फिर भी, यह मान लेना कि हम पहले ही विश्व-नेतृत्व की स्थिति पर पहुँच चुके हैं, हमारी प्रगति के लिए सबसे बड़ा अवरोध होगा।

आज की शक्ति का अर्थ केवल युद्धक्षेत्र में जीतना नहीं है। सच्ची शक्ति उस राष्ट्र की होती है, जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो, तकनीकी नवाचार में अग्रणी हो, पर्यावरण संरक्षण में उदाहरण बने और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर विश्व को नई दिशा दे। भारत को आने वाले वर्षों में यह सिद्ध करना होगा कि वह केवल अपनी सीमाओं की रक्षा ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए संतुलन और शांति का केंद्र बन सकता है।

हमारी प्राथमिकताओं में सबसे पहले शिक्षा आनी चाहिए। केवल साक्षरता से आगे बढ़कर हमें ज्ञान, कौशल और शोध का ऐसा तंत्र बनाना होगा जो हमारे युवाओं को विश्व के किसी भी कोने में प्रतिस्पर्धा के योग्य बना सके। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नवाचार और अनुसंधान की संस्कृति को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

दूसरा, हमें कृषि और उद्योग दोनों में आत्मनिर्भरता को नई परिभाषा देनी होगी। 'आत्मनिर्भर भारत' केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक ठोस नीति होनी चाहिए जिसमें ग्रामीण विकास, शहरी तकनीक और पर्यावरणीय संतुलन एक साथ शामिल हों। हमारे किसान को आधुनिक उपकरण, वैज्ञानिक खेती के तरीके और बाजार में उचित मूल्य की गारंटी मिले, तभी देश का आधार मज़बूत होगा।

तीसरा, रक्षा क्षेत्र में हमें विदेशी तकनीक के आयातक से आगे बढ़कर स्वदेशी हथियारों और प्रणालियों के निर्माण में अग्रणी बनना होगा। इससे न केवल हमारी सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि हमें रक्षा उद्योग में निर्यातक राष्ट्र के रूप में पहचान मिलेगी।

चौथा, ऊर्जा के क्षेत्र में हमें जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घटाकर सौर, पवन और जैव ऊर्जा में अग्रणी बनना होगा। स्वच्छ ऊर्जा में नेतृत्व न केवल हमारे पर्यावरण को बचाएगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित भविष्य देगा।

पाँचवाँ और सबसे महत्वपूर्ण, हमें सामाजिक एकता को अक्षुण्ण रखना होगा। धर्म, भाषा, जाति या क्षेत्र के आधार पर होने वाले विभाजन हमारी सबसे बड़ी कमजोरी बन सकते हैं। एक राष्ट्र तभी मज़बूत बनता है, जब उसके नागरिक विविधता में एकता की भावना को केवल पुस्तकों में नहीं, बल्कि अपने व्यवहार और निर्णयों में जीते हैं।

भारत के पास एक विशिष्ट सभ्यतागत पूँजी है — सहिष्णुता, करुणा और सहयोग की भावना। यदि हम इन मूल्यों को अपनी नीतियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में केंद्र में रखें, तो हम एक ऐसे वैश्विक नेतृत्व की स्थापना कर सकते हैं जो बल से नहीं, बल्कि विश्वास और प्रेरणा से संचालित हो।

79 वर्षों की यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि प्रगति कोई क्षणिक उपलब्धि नहीं, बल्कि सतत प्रयास है। अशोक चक्र के 24 आरे हमें यह याद दिलाते हैं कि राष्ट्र की गति कभी रुकनी नहीं चाहिए। आज का भारत विज्ञान में मंगल और चंद्रमा को छू रहा है, खेलों में विश्व मंच पर झंडा बुलंद कर रहा है, और कला-संस्कृति में दुनिया को अपनी ओर खींच रहा है। लेकिन इन सफलताओं को स्थायी और व्यापक बनाने के लिए हमें दीर्घकालिक दृष्टि और अटूट इच्छाशक्ति चाहिए।

79वें स्वतंत्रता दिवस पर हमें अपने पूर्वजों के बलिदानों को केवल श्रद्धांजलि देने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उस बलिदान को अपने कर्म और संकल्प से सार्थक करना होगा। हमें यह तय करना होगा कि आने वाले 21वीं सदी के शेष वर्षों में भारत केवल विश्व का एक हिस्सा नहीं रहेगा, बल्कि वह शक्ति बनेगा जो इस सदी की दिशा तय करेगी। जब हम तिरंगे को लहराते हैं, तो उसका केसरिया रंग हमें साहस का संदेश देता है — साहस केवल युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि सही निर्णय लेने, कठिन सुधार लागू करने और अन्याय के खिलाफ खड़े होने में भी चाहिए। सफ़ेद रंग हमें सत्य और पारदर्शिता की याद दिलाता है, जो लोकतंत्र की आत्मा है। हरा रंग हमें सतत विकास की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है, और अशोक चक्र हमें सतत गतिशील बने रहने का संदेश देता है।

यह समय है जब भारत अपने अतीत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकारते हुए, भविष्य को आकार देने का संकल्प ले। हमें यह विश्वास रखना होगा कि यह केवल एक राष्ट्र का विकास नहीं, बल्कि मानवता के लिए एक नई दिशा का निर्माण है। 79 वर्षों की इस यात्रा से हम विश्व-नेतृत्व की दहलीज़ पर पहुँच चुके हैं — अब हमें केवल उस कदम को आगे बढ़ाना है। भारत का समय अब है।

भारत @79 — अटूट शक्ति की ओर

सत्तर बरस की कठिन कहानी,
मेहनत, संघर्ष और बलिदानी,
अब सवाल है — क्यों रुक जाएँ?
जब नेतृत्व का समय बुलाए।

शक्ति है खेतों की लहराती बयार,
शक्ति है विज्ञान का ऊँचा आधार,
शक्ति है उद्योग, रक्षा, सेवा,
शक्ति है एकता का अमिट मेवा।

शिक्षा की ज्योति जलाए हर द्वार,
ज्ञान बने जन-जन का आधार,
किसान का पसीना मोती बने,
हर गाँव में विकास की ज्योति जले।

तकनीक में स्वदेशी झंडा लहराए,
रक्षा में अपना हुनर चमकाए,
ऊर्जा हो स्वच्छ, हरित, सुहानी,
आने वाली पीढ़ी की रौशन कहानी।

धर्म-भाषा का अंतर मिटाएँ,
विविधता का उत्सव हम मनाएँ,
विश्व सुने भारत का संदेश,
सत्य, साहस, सेवा विशेष।

अशोक चक्र की गति न थमे,
हर पीढ़ी का संकल्प जगे,
बस एक कदम और बढ़ाना है,
भारत को विश्व का दीप बनाना है।
सशक्त भारत — नेतृत्वकारी भारत,
मानवता का उजियारा भारत,
उन्नीस सौ सैंतालीस से आज तलक,
भारत का समय अब है — अब और अब!

--- डॉ. सत्यवान सौरभ

राज्य में बिजली कटौती पर कांग्रेस का हमला: कहा, बिजली काटी तो कंपनियों पर लगेगा जुर्माना

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : ओडिशा में बिजली की समस्या और शोषण पर कांग्रेस की प्रेस कॉन्फ्रेंस। राज्य में हर दिन कुछ समय के लिए बिजली की लाइनें कट जाती हैं। तीस दिनों में एक दिन बिजली कटौती होती है। इन अघोषित बिजली कटौती के कारण उपभोक्ताओं पर जुर्माना लगाने का प्रावधान है। यह जुर्माना वितरण कंपनी द्वारा भरा जाएगा। ओडिशा को बिजली अधिशेष वाला राज्य कहा जाता है।बिजली हमारे कोयले, हमारे पानी से पैदा होती है।82 प्रतिशत कोयला, 11 प्रतिशत जल विद्युत, 4 प्रतिशत सौर और 3 प्रतिशत पवन व अन्य विद्युत स्रोतों से। बिजली उत्पादन क्षमता 9,000 मेगावाट तक पहुँच गई है। 5,500 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता है। तमाम उत्पादन लागतों के बावजूद, बिजली 2.70 पैसे प्रति यूनिट खरीदी जाती है। लेकिन इसे उपभोक्ता को 7 रुपये 40 पैसे में बेचा जाता है। जिस पर कांग्रेस ने कड़ा प्रहार किया है।

उपभोक्ताओं पर न्यूनतम ऊर्जा शुल्क लगाया जाता है। केवल 36 लाख ऐसे उपभोक्ताओं को 2 किलोवाट तक की छूट मिल रही है। लेकिन 3 किलोवाट से अधिक लेने वालों से 100 रुपये तक लिए जा रहे हैं। यह शोषण सरकार की नज़र में दिख रहा है। कांग्रेस ने पूछा, स्मार्ट मीटर का उद्देश्य क्या है? इससे उपभोक्ता को कोई लाभ नहीं है। इसका विरोध होने पर एक साजिश रची गई। स्मार्ट मीटर क्यों लगाए जाएँगे? वितरण कंपनी इन स्मार्ट मीटरों का भुगतान करती है। राज्य सरकार सब कुछ जानते हुए भी चुप है। शोषण बड़े पैमाने पर हो रहा है। गाँवों में पानी पहुँचाने के लिए नल लगाए जा रहे हैं। लेकिन बिजली का पैसा लोगों से लिया जा रहा है। दूसरे राज्यों में सरकार यह पैसा देती है। लेकिन यहाँ सरकार नहीं दे रही है। सरकार को सभी पंचायतों को पानी और स्ट्रीट लाइट के लिए पैसा देना चाहिए। सरकार को रिवॉल्विंग फंड देकर पैसे का इंतजाम करना चाहिए। दूसरे राज्यों में सरकार लाइन लेने वाले को 50 प्रतिशत पैसा देती है। लेकिन यहाँ लोगों को बेवकूफ बनाकर पैसे लिए जा रहे हैं। कांग्रेस रोज़ पूछती है कि क्या सरकार को इसकी जानकारी नहीं है? पैसा न देने पर स्कूलों की लाइनें काट दी जाती हैं। स्कूलों और आँगनबाड़ियों को व्यावसायिक दरों पर बिजली दी जा रही है। यहाँ सरकार मुश्किल में है। बिजली कम दामों पर खरीदकर ऊँचे दामों पर बेची जा रही है।

बिजली कटौती को लेकर कांग्रेस की चार माँगें।1. अघोषित बिजली कटौती का भुगतान वितरण कंपनी करेगी 2. स्मार्ट मीटर लगाने का खर्च भी वितरण कंपनी वहन करेगी 3. निर्धारित दर के बजाय प्रति किलोवाट न्यूनतम बिजली शुल्क बंद किया जाए 4. बिजली के नुकसान में कमी के कारण बिजली दरों में कमी की जाए। अगर ये माँगें पूरी नहीं हुईं, तो जनआंदोलन होगा। कांग्रेस जनता के साथ है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता पंचानन कानूनगो ने चेतावनी दी कि कांग्रेस जनता के साथ मिलकर आंदोलन करेगी।

नेहरू का वह मध्यरात्रि भाषण जिसकी गूँज आज भी कायम

-जयसिंह रावत-

जवाहरलाल नेहरू का ₹ट्रिस्ट विद डेस्टिनी₹ (नियति से संनाद) भाषण, जो 14-15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को संविधान सभा में दिया गया, भारत के स्वतंत्रता संग्राम की परिणति और एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है। यह भाषण न केवल भारत के लिए, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक प्रेरणादायक दस्तावेज है, जिसमें स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, सामाजिक न्याय, और वैश्विक एकता जैसे विषयों पर जोर दिया गया। आज, 14 अगस्त 2025 को, जब भारत अपनी स्वतंत्रता की 78वीं वर्षगांठ मना रहा है, और विश्व नई भू-राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, इस भाषण की प्रासंगिकता और भी गहरी हो जाती है। नेहरू का ₹नियति से संनाद₹ वाक्यांश भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक रोमांटिक और दार्शनिक रूप देता है। यह संकेत करता है कि भारत का स्वतंत्रता प्राप्त करना केवल औपनिवेशिक शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि एक लंबे समय से प्रतीक्षित नियति के साथ मुलाकात है, जो भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यात्रा का हिस्सा है। यह एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति है, जो राष्ट्र की आत्मा और उसके भविष्य के प्रति गहरे समर्पण को दर्शाती है।

ऐतिहासिक संदर्भ

1947 में, भारत ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्ति प्राप्त की, लेकिन यह स्वतंत्रता विभाजन की त्रासदी के साथ आई, जिसमें लाखों लोग विस्थापित हुए और सांप्रदायिक हिंसा भड़की। नेहरू ने इस भाषण में अतीत के दुखों को स्वीकार किया, लेकिन भविष्य की ओर देखने का आह्वान किया। उनका दृष्टिकोण एक समावेशी, धर्मनिरपेक्ष, और प्रगतिशील भारत का था, जो सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, और वैश्विक शांति के लिए प्रतिबद्ध हो। आज, भारत एक उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति है, लेकिन सामाजिक-आर्थिक असमानता, सांप्रदायिक तनाव, और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, और प्रौद्योगिकी क्रांति से जूझ रहा है। इस संदर्भ में, नेहरू का भाषण एक दार्शनिक और व्यावहारिक मार्गदर्शक के रूप में प्रासंगिक है।

स्वतंत्रता और जिम्मेदारी

नेहरू ने कहा, ₹स्वतंत्रता और शक्ति के साथ जिम्मेदारी आती है।₹ यह विचार आज के भारत में गहरा महत्व रखता है। भारत अब विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसका सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 2024 में लगभग 3.9 ट्रिलियन डॉलर था (अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के अनुसार)। लेकिन इसके साथ ही, भारत सामाजिक-आर्थिक असमानता से जूझ रहा है। 2025 में, ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की शीर्ष 1% आबादी के पास देश की 40% से अधिक संपत्ति है। नेहरू का ₹हर आँख से हर आंसू पोंछने₹ का सपना अधूरा है, क्योंकि ग्रामीण भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर अभी भी सीमित हैं।

आज, भारत सरकार की योजनाएं जैसे ₹आयुष्मान भारत₹ और ₹स्किल इंडिया₹ नेहरू के सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में कदम हैं, लेकिन इनकी पहुंच और प्रभावशीलता को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

“थोड़ा-सा अपने लिए”

हर सुबह किसी और के लिए जगते हैं,
हर शाम किसी और के लिए थकते हैं।
अपनी चाहतों को टालते-टालते,
कब उम्र की धूप ढलने लगे,
पता ही नहीं चलता

जरा-सा ठहरो,
अपने दिल की भी सुनो।
खुद से भी कोई वादा करो,
कि एक दिन नहीं,
हर दिन में कुछ पल
अपने लिए ज़रूर रखोगे।

दुनिया के पीछे भागते-भागते,
हम खुद से ही दूर हो जाते हैं।
जो हंसना चाहते थे,
वो हंसी किसी को दिखाने में खो देते हैं।

ये ज़िंदगी —
किस मोड़ पर सांस थमा दे,
कोई नहीं जानता।
तो क्यों न जी लिया जाए
वो सपना,
जिसे कल पर टाल रखा है?

लोग कहते हैं —
"समय नहीं मिलता"
पर सच तो ये है कि
हम खुद को समय देना भूल जाते हैं।

आज से,
थोड़ा-सा अपने लिए भी जीना शुरू करो।
क्योंकि जब परदा गिरेगा,
तालियाँ तो बहुत मिलेंगी
पर अफ़सोस भी होगा
कि मंच पर अपनी कहानी अधूरी छोड़ दी।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

झारखंड के आईएएस विनय चौबे खास महल जमीन घोटाला में आरोपी बनाए गए

जमीन पर सेवायत शब्द को हटा कर 23 निजी लोगों को आवंटित की गयी थी भूखंड

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, अगर सही तरीके से जांच हो तो झारखंड के जमीन घोटाले में अनेकों का नाम आना तय है चाहे वे आईएएस अधिकारी हो या जेपीएस या राजस्व कर्मचारी। मलाईदार विभाग ऊंचे ओहदे हेतु पोस्टिंग लेकर आने वाले अधिकारी किस प्रवृत्ति के होते हैं यह जग जाहिर है। नतीजा यह है कि आज एक और आईएएस अधिकारी विनय चौबे पर जमीन का अवैध कका डंडा पड़ा है।

एसीबी ने जेल में बंद निलंबित आईएएस अधिकारी विनय चौबे को अब हजारीबाग के खास महाल जमीन घोटाले में आरोपी बनाया है। इस मामले में बुधवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए विनय चौबे की हजारीबाग एसीबी की विशेष कोर्ट में पेशी हुई।

जांच अधिकारी ने कोर्ट को बताया कि इस मामले में विनय चौबे को भी आरोपी बनाया गया है। एसीबी ने 8 अगस्त को यह केस दर्ज किया था। हालांकि उसमें तत्कालीन खास महाल पदाधिकारी विनोद चंद्र झा, बसंती सेठी, उमा सेठी, इंद्रजीत सेठी, राजेश सेठी, विजय प्रताप सिंह और सुजीत कुमार सिंह को ही आरोपी बनाया गया है। अब इस मामले में विनय चौबे को भी आरोपी बनाए जाने के बाद उनकी मुश्किलें और बढ़ गई है। विनय चौबे को एसीबी ने 20 मई को शराब घोटाला मामले में गिरफ्तार किया था। जिसके बाद से वे न्यायिक हिरासत में हैं।

खास महाल जमीन घोटाला मामले में पूर्व में एसीबी ने प्रीलिमिनरी इंक्वायरी (पीई) दर्ज किया था। इसी के आधार पर एसीबी ने मामले में

आरंभिक जांच पूरी कर मंत्रिमंडल निगरानी विभाग के माध्यम से सरकार को प्रस्ताव भेजकर प्राथमिकी दर्ज करने की अनुमति मांगी थी। सरकार से अनुमति मिलने के बाद एसीबी ने प्राथमिकी दर्ज किया था।

इस मामले की जांच में पाया कि हजारीबाग की करीब 2.75 एकड़ खास महाल जमीन वर्ष 1948 में एक ट्रस्ट को 30 वर्षों के लिए लीज पर दी गई थी। लीज की अवधि वर्ष 1978 में समाप्त होने के बाद इसका नवीकरण वर्ष 2008 तक के लिए किया गया था। लेकिन वर्ष 2008 से 2010 के बीच सुनियोजित तरीके से इस जमीन को सरकारी घोषित कर 23 निजी व्यक्तियों को आवंटित कर दिया गया। जांच के दौरान पाया गया कि लीज नवीकरण के दौरान ट्रस्ट सेवायत शब्द को तत्कालीन खास महाल पदाधिकारी ने जान-बूझकर हटाया था, ताकि ट्रस्ट की भूमि को सरकारी दिखाया जा सके। उसका अवैध रूप से हस्तांतरण किया जा सके। जांच के दौरान यह भी पाया गया था ट्रस्ट की भूमि को किसी और को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता था। इसके बाद भी ऐसा किया गया।

स्वतंत्रता का अर्थ (काव्यांजलि)

हर साल तिरंगा लहराता है,
स्वतंत्रता दिवस चला आता है,
पर मन में एक सवाल जगाता है—
क्या हम सच में स्वतंत्र हैं आज भी ?

बेड़ियों में जकड़े हुए सपने,
अधूरे अरमान, टूटे अपने,
नारी सम्मान अब भी सवालों में,
अशिक्षा के अंधेरे गलियारों में।

बेरोज़गारी की चुभती पीड़ा,
नक्सलवाद, आतंक का चीरा,
सांप्रदायिकता का ज़हरीला घाव,
भाई को भाई से कराए अलगाव।

भारत मां खड़ी है मौन,
आँखों में सवालों का कोलाहल,
'क्या यही थी मेरी चाहत ?
क्या यही है मेरा संकल्प-फल ?'

हमारे दिल में है प्रेम का दीप,
पर आँधियों से जूझ रहे हैं हम चहुंओर,
जब तक इन नासूरों का इलाज न होगा,
स्वतंत्रता का अर्थ अधूरा ही रहेगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

स्वतंत्रता के 78 वर्षों की गौरवगाथा और भविष्य की दिशा (15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस विशेष आलेख)

15 अगस्त 1947 केवल एक तारीख मात्र नहीं है, बल्कि यह करोड़ों भारतीयों के सपनों, बलिदानों और संघर्षों का परिणाम है।अंग्रेज़ी शासन की बेड़ियों से मुक्त होकर भारत ने लोकतंत्र, समानता और प्रगति की राह पकड़ी।इस क्रम में हम भारतीय इस बार 79 वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। पिछले 78 वर्षों के दौरान हमारे देश ने आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और हरेक क्षेत्र जैसे कि कृषि, अंतरिक्ष, व्यापार जगत, सेना, चिकित्सा, शिक्षा, तकनीक, इंफ्रास्ट्रक्चर- जैसे कि सड़क, बिजली, पानी सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह दिन हमें यह याद दिलाने का अवसर देता है कि बीते 78 वर्षों में हमने कितना लंबा सफर तय किया है और आने वाले वर्षों के लिए हमें किस दिशा में और कैसे आगे बढ़ना है। पिछले कुछ सालों में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति:-

स्वतंत्रता के समय भारत की अर्थव्यवस्था कृषि-प्रधान और संसाधनों के अभाव में थी। आज भारत विश्व की एक बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बेंगुलुरु में परिवहन से जुड़ी विभिन्न परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए यह बात कही है कि बीते 11 सालों में भारतीय अर्थव्यवस्था 10वें से पांचवें नंबर पर पहुंच गई है और अब दुनिया ने नए भारत का चेहरा देखा है।भारत आज विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।पाठक जानते होंगे कि कुछ समय पहले ही भारत जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।उस समय नीति आयोग के सीईओ बी.वी.आर. सुब्रह्मण्यम ने यह बात कही थी कि भारत अगले ढाई से तीन वर्षों में जर्मनी को तीसरे स्थान से हटा देगा। गौरतलब है कि दिल्ली में नीति आयोग की दसवीं गवर्निंग कांउसिल की बैठक के बाद मीडिया को जानकारी देते हुए उन्होंने कहा था कि आईएमएफ के आंकड़ों के अनुसार भारत 'चार ट्रिलियन डॉलर' की अर्थव्यवस्था है। उन्होंने उस समय यह कहा था कि केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और जर्मनी की अर्थव्यवस्थाएँ ही भारत से बड़ी हैं।आईएमएफ ने अपनी कुछ समय पहले जारी एक रिपोर्ट में यह कहा था कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा।आईएमएफ ने कुछ समय पहले ही वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट में यह कहा था कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है और अगले दो वर्षों में 6 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर हासिल करने वाला एकमात्र देश है। आईएमएफ के अनुसार, भारत का सकल घरेलू उत्पाद वर्तमान में 4.3 ट्रिलियन डॉलर है। २०15 में भारत की जीडीपी २.1 ट्रिलियन डॉलर थी, तब से अब तक देश की अर्थव्यवस्था दोगुनी से भी ज़्यादा हो गई है। रिपोर्ट के अनुसार, तेज़ विकास दर के कारण भारत की जीडीपी २०28 तक बढ़कर 5.5 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी और जर्मनी को पीछे छोड़कर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी।

औद्योगिक विकास: आज हमारे देश में ऑटोमोबाइल, इस्पात, सीमेंट, रसायन, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और विनिर्माण उद्योग में विश्वस्तरीय उत्पादन हो रहा है। आंकड़े बताते हैं कि साल 1994 से २०२५ तक, औद्योगिक उत्पादन में औसत वृद्धि 5.94% रही है तथा जून २०२५ में, औद्योगिक उत्पादन पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 1.50% बढ़ा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि २०२५ में भारत में कई उद्योगों जैसे कि फार्मास्यूटिकल्स, स्वास्थ्य सेवा, नवीकरणीय ऊर्जा, बुनियादी ढांचा, उपभोक्ता वस्तुएँ, और प्रौद्योगिकी और आईटी में अभूतपूर्व प्रगति हुई है।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत का दवा बाजार २०30 तक 130 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। आज भारत में सौर, पवन और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश लगातार बढ़ रहा है। सरकार बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जिससे सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के निर्माण में तेजी आई है। शहरी उपभोग में वृद्धि के कारण उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं (जैसे टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन) की मांग बढ़ी है। देश में सॉफ्टवेयर, आईटी सेवाओं और डिजिटल भुगतान जैसे क्षेत्रों में वृद्धि हो रही है।खनन, विनिर्माण, बिजली जैसे उद्योगों में वृद्धि दर्ज की जा रही है। इतना ही नहीं, सीमेंट, इस्पात, मशीनरी और उपकरण,मोटर वाहन तथा कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक और ऑप्टिकल उत्पादों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

कृषि क्षेत्र: हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और हाल के वर्षों में डिजिटल कृषि ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। गौरतलब है कि भारत में कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें २०२२-२३ में 330.5 मिलियन मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ तथा इस साल यानी कि २०२५ तक भारतीय कृषि क्षेत्र का बाजार आकार २४ बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। यह महत्वपूर्ण और अहम है कि साल २००० से २०२४ तक कृषि सेवा क्षेत्र ने ३.08 बिलियन अमेरिकी डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित किया है,जो भारत की एक बड़ी उपलब्धि है। गौरतलब है कि साल २०२४-२५ (अप्रैल-मई) में कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों का निर्यात 4.34 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। पाठकों को बताता चलूं कि भारत में 179.8 मिलियन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है, जो दुनिया में सबसे बड़ी है। भारत में 11% विश्व की कृषि योग्य भूमि है, लेकिन यह विश्व की 18% आबादी को भोजन प्रदान कर रहा है।कृषि क्षेत्र में निवेश और निर्यात दोनों में वृद्धि हो रही है। आज भारत में चावल, गेहूं, मक्का, और दालों का बड़े पैमाने पर उत्पादन हो रहा है।

व्यापार एवं निर्यात: आज भारत सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का अग्रणी निर्यातक है। हमारे सॉफ्टवेयर इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ विश्वभर में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं।

अंतरिक्ष और विज्ञान:-

स्वतंत्रता के शुरुआती दशकों में जब भारत अंतरिक्ष विज्ञान में शून्य पर था, तब 1969 में इसरो की स्थापना हुई। आज चंद्रयान, मंगलयान, गगनयान जैसे अभियानों ने हमें विश्व पटल पर सम्मान दिलाया है। चंद्रयान-३ की सफलता ने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश बना दिया। कुछ समय पहले ही भारत और अमेरिका ने संयुक्त रूप से विकसित 'निसार' उपग्रह का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है। यह प्रक्षेपण भारत-अमेरिका अंतरिक्ष सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है. निसार उपग्रह पृथ्वी की भूमि, बर्फ और जल की सतहों में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों का पता लगाने में सक्षम होगा, जिससे प्राकृतिक और मानव-जनित खतरों की भविष्यवाणी करने में मदद मिलेगी। इतना ही नहीं, उपग्रह प्रक्षेपण, मौसम पूर्वानुमान, दूरसंचार और रक्षा तकनीक में हमारी क्षमताएं कई विकसित देशों के बराबर हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि अगले कुछ महीनों में, एक ऐसा देश, जिसे अमेरिका से छोटा रॉकेट मिला था, वह अपने रॉकेट से करके भारत से अमेरिका द्वारा निर्मित 6,500 किलोग्राम का संचार उपग्रह लॉंच करने जा रहा है। यह हमारे देश की एक महत्वपूर्ण प्रगति है। 50 वर्ष पहले जिस देश के पास उपग्रह प्रौद्योगिकी नहीं थी, उसी इसरो ने आज तक अपने रॉकेटों से 34 देशों के 433 उपग्रहों को लॉंच किया है।

सैन्य शक्ति और सुरक्षा:-स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपनी सैन्य ताकत को लगातार बढ़ाया। आज भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना विश्व की सबसे सशक्त सेनाओं में शामिल हैं।इसी वर्ष भारत ने पाकिस्तान पर 'आपरेशन सिंदूर' को अंजाम दिया। पाठकों को बताता चलूं कि ऑपरेशन सिंदूर 7 मई, २०२५ को शुरू किया गया था, यह पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत द्वारा की गई एक सैन्य प्रतिक्रिया थी।इस हमले में २६ निर्दोष नागरिकों की जान चली गई थी। ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य सीमा पार आतंकवाद को रोकना और आतंकवादी ठिकानों पर सटीक हमले करना था।ऑपरेशन सिंदूर भारत की एक सामरिक सफलता थी ।इसने भूमि, वायु और समुद्र में उच्च परिशुद्धता, समन्वित सैन्य कार्रवाई कर भारत की क्षमता का प्रदर्शन किया। इतना ही नहीं, आजआत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत हथियार, मिसाइल, लड़ाकू विमान और नौसैनिक जहाज का निर्माण देश में ही किया जा रहा है। इतना ही नहीं, शांति स्थापना मिशनों में भी भारत की भूमिका सराहनीय रही है।

चिकित्सा और स्वास्थ्य क्षेत्र:- स्वतंत्रता के समय चिकित्सा सुविधाएं सीमित थीं, लेकिन आज भारत चिकित्सा पर्यटन का केंद्र बन चुका है। टीका उत्पादन में भारत विश्व अग्रणी है। कोविड-19 महामारी के दौरान 'वैक्सीन मैत्री' अभियान ने हमारे वैश्विक योगदान को दर्शाया। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं, आयुष्मान भारत योजना और डिजिटल हेल्थ मिशन जैसे प्रयासों ने आम नागरिक तक स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाई है।आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन ने देशभर में 79.91 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट्स बनाकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

शिक्षा और अनुसंधान:-

आज भारत में आईआईटी, आईआईएम, एम्स, इसरो, डीआरडीओ, सीएसआईआर जैसे संस्थान विश्वस्तरीय अनुसंधान और शिक्षा में योगदान दे रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० ने शिक्षा को आधुनिक, बहुभाषी और तकनीकी रूप से उन्नत बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। आज देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२५, लागू की गई है,जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में सुधार करना, २1वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार इसे ढालना और छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और सुविधाएं:-

आजादी के समय जहां सड़कों और बिजली की भारी कमी थी, वहीं आज भारत में हजारों किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग, मेट्रो रेल नेटवर्क, पुल और स्मार्ट सिटीज़ का विकास हो चुका है। बिजली उत्पादन और वितरण में बड़े सुधार हुए हैं। जल जीवन मिशन के तहत हर घर तक पाइप से पानी पहुंचाने का लक्ष्य तेजी से पूरा हो रहा है।सच तो यह है कि आज भारत में इंफ्रास्ट्रक्चर
जैसे कि डिजिटल, परिवहन, ऊर्जा और ग्रामीण विकास पर लगातार जोर दिया जा रहा है।

डिजिटल क्षेत्र में, यूपीआई लेनदेन में तेजी से वृद्धि हुई है, २016 में 707.93 करोड़ से बढ़कर दिसंबर २०२४ में २३,२४,६99.91 करोड़ हो गया है। ग्रामीण कनेक्टिविटी में भी सुधार हुआ है, जल जीवन मिशन ने 79.74% ग्रामीण घरों को नल के पानी के कनेक्शन प्रदान किए हैं। इसके अतिरिक्त, २014 से २०२४ तक मेट्रो रेल नेटवर्क २48 किमी से बढ़कर 993 किमी हो गया है।

सामाजिक बदलाव:- बीते दशकों में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण, सामाजिक न्याय और समान अवसर की दिशा में अहम कदम रहा।डिजिटल क्रांति ने गांव-गांव तक इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग पहुंचाकर नई संभावनाएं खोली हैं।

चुनौतियां और भविष्य की दिशा:-

प्रगति के साथ-साथ बेरोजगारी, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रामीण-शहरी असमानता और सामाजिक विभाजन जैसी चुनौतियां भी सामने हैं।

आने वाले वर्षों में हमें ये सब करना होगा:—आज हम 79 वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। वर्ष २047 तक हमें हमारे देश को विकसित देश बनाना है। इसके लिए हमें देश में हरित ऊर्जा को अपनाना होगा।कौशल विकास पर जोर देना होगा।साथ ही साथ, शिक्षा और स्वास्थ्य को और मजबूत करना होगा तथा सामाजिक सद्भाव बनाए रखना होगा।

निष्कर्ष:- अंत में यही कहूंगा कि 78 वर्षों की यात्रा भारत की संघर्ष, संकल्प और सफलता की कहानी है। यह केवल आंकड़ों या योजनाओं का सार नहीं, बल्कि 140 करोड़ नागरिकों की मेहनत, नवाचार और सपनों का परिणाम है। इस 79वें स्वतंत्रता दिवस पर हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम देश की प्रगति को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में अपना योगदान देंगे, ताकि आने वाली पीढ़ियां एक सशक्त, समृद्ध और सुखी भारत में सांस लें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

एनसीपी की रणनीतियाँ: ओडिशा और राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान परिदृश्य में

गठबंधन या सभी चुनावों में सभी सीटों पर सीधे मुकाबले के लिए भी तैयार

ओड़िशा- राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) मुख्य रूप से महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि पुर्वोत्तर की कई राज्यों, ओड़िशा, उत्तरप्रदेश, केरल,बिहार, गोवा, दिल्ली व अन्य में संगठनात्मक जड़ें प्रभावी रूप से जमा चुकी है व इसका आधार तेजी से लगातार उभर रहा है 1 वहीं इसकी ओडिशा इकाई स्थानीय मुद्दों पर गंभीरता से जमीनी स्तर पर सक्रियता सह कार्यरत है। अजित पवार के सफल व सुदृढ़ नेतृत्व व प्रफुल पटेल के संगठनात्मक व सार्थक दिशानिर्देश पर 2025 तक, पार्टी की रणनीतियाँ गठबंधन राजनीति ही नहीं अपितु निजबल पर चुनावी राजनीती को तवज्जो देने की है 1 एनडीए के घटक दल के रूप में स्थानीय मुद्दों पर सरकार को समर्थन, बीते बीजद सरकार के घोटालों को उजागर करना, समयानुरूप गलत नीतियों पर बेझिझक विरोध और विकासकार्यों में सहयोग एंव नीतिगत सुधारों पर केंद्रित हैं। ओडिशा-केंद्रित और राष्ट्रीय रणनीतियों का गहनता से अध्ययन व क्रियान्वयन पर मजबूती से बल दिया जा रहा है 1 ओडिशा में एनसीपी का प्रभाव असीमित व जमीनी स्तर पर है मजबूत जड़ें जमा चुकी है लेकिन वहीं सत्तारूढ़ गठबंधन एनडीए (NDA) का हिस्सा होने के बावजूद माझी सरकार की लगातार अनदेखी से असंतुष्ट है व केंद्रीय नेतृत्व को इसकी विस्तृत जानकारी दे चुकी है व जवाब के इंतजार में है1 ओड़िशा सरकार में अपने नेताओं की बोर्ड/निगमों में नियुक्ति के द्वारा सरकार में अपनी सहभागिता का दावा करती है 1

ओडिशा में एनसीपी की रणनीतियाँ

ओडिशा में एनसीपी (अजित पवार गुट) की रणनीतियाँ स्थानीय विकास/रोजगार, भ्रष्टाचार विरोध, महिला न्याय और औद्योगिक मुद्दों पर केंद्रित हैं। पार्टी ने 2024 चुनावों में एनडीए गठबंधन में निश्चल सहयोगिता निभाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी व चुनावी सुर्खियां भी बटोरी एंव असीमित सफलता पाई, और कई नेता जैसे डॉ. राजकुमार यादव व अन्य ने सफलतापूर्वक दायित्व निर्वहन किया 1 हालाँकि, पार्टी सत्तादल की भूमिका निभा रही एनडीए की सहयोगी है, विशेष रूप से भाजपा सरकार के सह अपने राजनैतिक दायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक निभा रही है।

मुख्य रणनीतियाँ:

सत्ता गठबंधन (NDA एलायंस) के माध्यम से एकजुटताः एनसीपी ओडिशा में बीजद सरकार के खनन, परिवहन, कालिया, स्वास्थ्य, शिक्षा, जमीन, जंगल, रॉयल्टी,चिटफण्ड घोटाले को प्रदर्शन व विरोध कर उजागर करने की प्रक्रिया में प्रगतिशील है 1 मोहन सरकार के नेतृत्व में सरकार की सुभद्रा का सफल विमोचन, स्वास्थ्य व्यवस्था, ग्रामीण व शहरी परिवहन,जनवितरण प्रणाली में सुधार जैसी सफल नीतियों व उसके क्रियान्वयन को घर घर तक पहुंचाने का कार्य सतत व सार्थक रूप से जारी रखे है 1

राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) जैसे क्षेत्रों में सक्रियता। अगस्त 2025 में, एनसीपी ओडिशा ने स्लैग बिक्री में भ्रष्टाचार, स्थानीय रोजगार और सीमेंट प्लांट स्थापना की मांग की।पार्टी ने 1200 एकड़ के बजाय 1400 एकड़ भूमि अधिग्रहण की मांग की, और केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी को ज्ञापन सौंपा व न्यायमूर्ति शाह कमीशन से भी बड़े खनन घोटाले का उजागर किया।रणनीतिः सोशल मीडिया व ज्ञापनों सह धरना प्रदर्शन के माध्यम से केंद्रीय और राज्य सरकारों पर गलत नीतियों पर दबाव एंव सही नीतियों व कार्य प्रणाली पर निस्वार्थ व बिना शर्त समर्थन जारी है 1

भ्रष्टाचार और प्रशासनिक मुद्दों पर हमलाः पूर्व बीजेडी सरकार के घोटालों पर जांच की मांग। जुलाई 2025 में, एनसीपी ने हाईटेक अस्पताल में पश्चिम ओडिशा विकास परिषद के फंड के दुरुपयोग और रियायती जमीन के उपयोग में उल्लंघन पर जांचोपरान्त कड़े कार्रवाई की मांग की।पार्टी ने महीनों से लंबित जन शिकायतों पर ध्यान दिलाया, और सरकार से कार्रवाई की अपेक्षा की।फाइलों के दबाव और पुरानी सरकार की कारस्तानियों को उजागर कर पारदर्शिता सह कार्रवाई की मांग।वहीं बीजद काल में सरकारी दुलारे बाबुओं के काले कारनामों की जाँच व बीजद प्रेम का मोहभंग ओड़िशा विजीलेन्श को प्राथमिकता में लेनी चाहिए1 अधिकतम सरकारी बाबुओं ने अब तक जननेता व लोकप्रिय मुख्यमंत्री मोहन माझी के बजाए नवीन बाबू के तस्वीरों को प्राथमिकता दी जा रही है 1 उदाहरण स्वरूप सुंदरगढ़ के तीन कर्मचारियों ने जिले में ट्रांसफर पोस्टिंग व मिठाई का जिम्मा संभाल रखा है व प्रतिपल बीजद नेताओं के आदेश निर्गत करने में व्यस्त हैं-तत्काल प्रभाव इनके सम्पत्ति की जाँच हों व पारदर्शिता पूर्ण जांचोपरान्त बाध्यतामूलक सेवा निवृत के आदेश निर्गत किये जाएं 1

ओडिशा में एनसीपी की स्थिति मजबूत थी व मजबूत है - (2009 में 4 विधायक व लोकसभा सीट में मामूली वोट से हार) चुनावी रणनीति में सीधा मुकाबला या गठबंधन दोनों ही स्थिति पर पूरी तैयारी से रोडमेप प्रस्तुत है है। राष्ट्रीय अध्यक्ष व उपमुख्यमंत्री महाराष्ट्र अजित पवार, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रफुल पटेल, राष्ट्रीय महासचिव अविनाश आदिक एंव बृजमोहन श्रीवास्तव एंव राष्ट्रीय युवा नेता पार्थ पवार के सफल नेतृत्व व दिशानिर्देश में पार्टी ओड़िशा को राष्ट्रीय पटल पर विकसित एंव अग्रिम राज्यों की सूची में लाने पर पूर्णतः प्रतिबद्ध है 1 पार्टी सुंदरगढ़, जाजपुर, बालासोर, केन्द्रापड़ा,पाराद्वीप, अंगुल जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर और आदिवासी मुद्दों पर विशेष रूप से फोकस कर रही है।

संगम विश्वविद्यालय में हर घर तिरंगा में निकाली तिरंगा रैली

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। स्थानीय संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा में भारत सरकार द्वारा आयोजित हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत एनसीसी ,एनएसएस ,फैकल्टी स्टाफ द्वारा देश प्रेम से और ओतप्रोत एवं तिरंगा के प्रति देश भावना को बढ़ाने के लिए हर घर तिरंगा रैली विश्वविद्यालय परिसर में निकाली गई। कार्यक्रम संयोजक लेफ्टिनेंट राजकुमार जैन ने बताया कि हर घर तिरंगा रैली के अंतर्गत सभी को तिरंगा दिया गया तथा स्वतंत्रता दिवस पर अपने-अपने घरों में तिरंगा फहराने को प्रेरित किया गया इस अवसर पर विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ,उप कुलपति प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही

,रजिस्ट्रारआलोक कुमार, प्रोफेसर प्रीती मेहता सहित एनसीसी कैडेट एनएसएस वालंटियर छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

यासीन रोड और टेलर रोड पर नए ट्यूबवेल का चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने किया उद्घाटन – अब स्वच्छ पानी की कमी होगी दूर

अमृतसर 14अगस्त (साहिल बेरी)

आम आदमी पार्टी के अमृतसर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के इंचार्ज एवं इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने आज शहर के प्रमुख क्षेत्रों यासीन रोड और टेलर रोड पर नए पानी के ट्यूबवेल का भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर वरिष्ठ डिप्टी मेयर प्रियांका शर्मा, स्थानीय समाजसेवी, क्षेत्रवासी और पार्टी कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पिछले कई वर्षों से इन इलाकों के निवासी स्वच्छ एवं पीने योग्य पानी की कमी के कारण गंभीर परेशानियों का सामना कर रहे थे। पानी की सीमित आपूर्ति के चलते लोगों को दूर-दराज़ से पानी लाना पड़ता था और पानी की गुणवत्ता ठीक न होने के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी बढ़ रही थीं। विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों को जलजनित बीमारियों का खतरा अधिक हो गया था। चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू ने इस अवसर पर कहा, "अमृतसर के हर नागरिक को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है। स्वच्छ और सुरक्षित पानी प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, और इस अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए मैं पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा हूँ। इस ट्यूबवेल के शुरू होने से न केवल पीने के पानी की कमी से राहत मिलेगी, बल्कि पानी की गुणवत्ता से फैलने वाली बीमारियों से भी बचाव होगा।" उन्होंने बताया कि ट्यूबवेल का पूरा कार्य कुछ ही दिनों में पूरा कर लिया जाएगा, जिसके बाद क्षेत्र में निरंतर और पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। रिंटू ने यह भी कहा कि शहर के अन्य इलाकों में भी, जहां स्वच्छ पानी की कमी है, वहां नए ट्यूबवेल लगाकर यह सुविधा दी जाएगी।

वरिष्ठ डिप्टी मेयर प्रियांका शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि नगर निगम और इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की टीम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा तत्पर है। उन्होंने कहा कि जनता की जरूरतों को समझकर और उनसे सीधा संवाद करके, त्वरित कार्रवाई करना प्रशासन की प्राथमिकता है।

क्षेत्र के प्रमुख समाजसेवियों, व्यापारियों और निवासियों ने चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होंने जनता की समस्याओं को समझकर तत्काल कदम उठाए हैं, जिससे जनता का विश्वास मजबूत हुआ है। उन्होंने इस प्रयास को जनहित में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम बताया।

इस मौके पर उपस्थितः

वरिष्ठ डिप्टी मेयर प्रियांका शर्मा, रितेश शर्मा, मोना पलवान, प्रदीप शर्मा, साहिल सग्गर, बंटी पलवान, सुमित सिंघानिया, अमन और अनिल जी सहित अनेक पार्टी कार्यकर्ता एवं स्थानीय निवासी।

झारखंड के 17 पुलिस विभिन्न मेडल से नवाजे जायेंगे स्वतंत्रता दिवस के मौके पर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड पुलिस के कुल 17 पुलिसकर्मियों को अलग-अलग श्रेणियों में मेडल दिए जाएंगे. इनमें 5 पुलिसकर्मियों को गैलेंट्री (वीरता) मेडल, 1 पुलिसकर्मी को राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक और 11 पुलिसकर्मियों को सराहनीय सेवा पदक से नवाजा जाएगा. झारखंड पुलिस के 17 जवान सम्मानित, 5 को गैलेंट्री और 1 को राष्ट्रपति पदक

जो पुलिसकर्मी कठिन हालात में भी अदम्य साहस और बहादुरी दिखाते हैं, उन्हें गैलेंट्री अवार्ड दिया जाता है. इस साल झारखंड से सब-इंस्पेक्टर विनय कुमार, हेड कांस्टेबल प्रमोद कुमार राय, कांस्टेबल वेद प्रकाश महतो, कांस्टेबल रामचंद्र कुमार महतो और कांस्टेबल कृष्णा मुर्मू को यह सम्मान मिलेगा. इन सभी ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में बहादुरी और पेशेवराना कौशल का बेहतरीन प्रदर्शन किया है.

बेहद उत्कृष्ट और लंबे समय तक ईमानदारी से सेवा करने वालों को यह सम्मान दिया जाता है. इस साल झारखंड पुलिस के हवलदार कैलाश कुमार श्रेष्ठ को राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया जाएगा. उनकी सेवा अवधि में बेहतरीन अनुशासन, जिम्मेदारी और समर्पण की मिसाल देखने को मिली है।

झारखंड हाईकोर्ट ने जेपीएससी रिजल्ट पर दिव्यांगों के लिये ठहराव डाला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड हाई कोर्ट ने राज्य पब्लिक सर्विस कमीशन के रिजल्ट पर कुछ समय के लाए एक पूर्ण विराम डाला है .अब संसोधन ही एकमात्र रास्ता रह गया है जिसके कारण कुछ परिवर्तन होगा .एक दिव्यांग अभ्यर्थी की याचिका पर जेपीएससी 11वीं से 13वीं तक की 342 पोस्ट के लिए हुई परीक्षा के रिजल्ट पर एक तरह से रोक लगा दी गयी है. कोर्ट ने पूरा रिजल्ट मेरिट लिस्ट के साथ मांगा है. कहा है कि जेपीएससी कास्ट और कैटेगरीवाइज कोर्ट के सामने रिजल्ट पेश करे. इस मामले पर अगली सुनवाई 10 नवंबर 2025 को होगी.

हाईकोर्ट में दिव्यांग कोटे के अभ्यर्थी राहुल वर्धन ने हाईकोर्ट में एक याचिका दाखिल की थी. उनकी याचिका पर जस्टिस आनंद सेन की अदालत में सुनवाई हुई. कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद उपरोक्त निर्णय दिये. याचिका में दिव्यांग कोटे की 5 सीट पर अन्य लोगों की बहाली पर सवाल उठाये गये थे।

झारखंड हाईकोर्ट ने क्रस करते हुए बहस पर देखा याचिकाकर्ता की शिकायत सही है. 13 सीटें दिव्यांगों के लिए आरक्षित थीं. इनमें से 8 सीट पर दिव्यांगों को पास किया गया है और 5 सीट पर अन्य लोगों को पास घोषित कर दिया गया है. यह गलत है. कोर्ट ने जेपीएससी से कहा कि दिव्यांग कोटे की 5 सीटों को उनके लिए रिजर्व करें.

इस तरह जेपीएससी की मुश्किलें अब बढ़ गयीं हैं और अपरोक्ष रूप से जेपीएससी 11वीं से 13वीं तक 342 पोस्ट पर हुई परीक्षा के परिणाम पर रोक लग गयी है. जेपीएससी के लिए मुश्किल यह होगी कि जिन 5 लोगों को पास घोषित कर दिया गया है, उनका क्या होगा ? किस तरह 5 सीटें दिव्यांगों के लिए आरक्षित की जायेंगी.

हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान बताया गया कि अगर आरक्षित कोटा में सीटें खाली रह जाती हैं, तो उसे अगले साल के लिए कैरी फॉरवर्ड कर दिया जाता है. इस बार ऐसा नहीं हुआ. इसलिए अब जेपीएससी को इस रिजल्ट को संशोधित करना होगा

शहर में अमन-शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष सुरक्षा प्रबंध – पुलिस की सख्त निगरानी और अपील

अमृतसर 14 अगस्त (साहिल बेरी)

आगामी स्वतंत्रता दिवस के मद्देनज़र, आज दिनांक 14-08-2025 को श्रीमती शशि प्रभा द्विवेदी, आई.पी.एस, विशेष डी.जी.पी रेलवे, पंजाब तथा श्री गुरप्रीत सिंह भुल्लर, आई.पी.एस, पुलिस आयुक्त, अमृतसर द्वारा रेलवे स्टेशन पर चल रहे सर्च ऑपरेशन और सुरक्षा इंतज़ामों का जायज़ा लिया गया।

इस अभियान के दौरान डीसीपी (कानून एवं व्यवस्था) अमृतसर, श्री आलम विजय सिंह की निगरानी में, श्रीमती परविंदर कौर (एडीसीपी स्थानीय), श्री हरपाल सिंह (एडीसीपी सिटी-2), श्री जगबिंदर सिंह (एडीसीपी इन्वेस्टिगेशन) के नेतृत्व में श्री ऋषभ भोला (एसीपी नॉर्थ), श्री नीरज कुमार (एसीपी), श्री सुखबीर सिंह (एसीपी), थाना सिविल लाइन, अमृतसर के प्रभारी अधिकारी, जीआरपी, आरपीएफ, एआरपी समेत पुलिस बल की विभिन्न टीमों ने रेलवे स्टेशन को घेरकर सभी रास्तों पर नाकाबंदी कर सघन चेकिंग की।

सर्च के दौरान स्निफर डॉग और एंटी-सबोटेज टीमों द्वारा स्टेशन के कोने-कोने की तलाशी ली गई, यात्रियों के बैग चेक किए गए और जनता से बातचीत कर सुरक्षा प्रबंधों के प्रति सहयोग की सराहना की गई। संदिग्ध व्यक्तियों की आईडी जांचकर पूछताछ की गई और आसपास खड़े वाहनों की वाहन ऐप से मालिकाना जानकारी चेक की गई।

कमीशनरेट पुलिस, अमृतसर ने शहर को तीन जोनों में बांटकर सख्त सुरक्षा इंतज़ाम किए हैं। डीसीपी द्वारा निगरानी, एडीसीपी व एसीपी की अगुवाई में शहर के विभिन्न प्वाइंट्स पर नाकाबंदी, गश्त, होटल, गेस्ट हाउस, सराय, पीजी, भीड़-भाड़ वाले और संवेदनशील इलाकों की चेकिंग की जा रही है। जमानत पर बाहर आए अपराधियों पर भी पैनी नज़र रखी जा रही है।

शहर में 24 घंटे शिफ्टिंग के साथ 64 नाकाबंदी प्वाइंट लगाए गए हैं, रात की डोमिनेशन बढ़ाकर आने-जाने वाले वाहनों की बारीकी से जांच हो रही है। चारदीवारी के भीतर भीड़भाड़ वाले बाज़ारों में पैदल गश्त, PCT वाहन, QRT और SWAT टीमों को आधुनिक हथियारों के साथ संवेदनशील स्थानों पर तैनात किया गया है।

पुलिस ने जनता से अपील की है कि अफवाहों पर विश्वास न करें, किसी भी वीडियो को बिना पुष्टि के आगे न भेजें। यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति या वस्तु दिखे तो तुरंत नजदीकी पुलिस या 112 पर संपर्क करें।

शहर के विभिन्न नाका प्वाइंट्स पर काले शीशे / काली जालियां, हूटर/सायरन लगे वाहनों की जांच कर चालान किए गए। टू-व्हीलर पर साइलेंसर में बदलाव कर तेज़ आवाज करने वाले, ट्रिपल राइडिंग करने वाले और बिना हेलमेट चलाने वालों के भी चालान किए गए। होटल, गेस्ट हाउस, सराय के चेक-इन/चेक-आउट रजिस्टर की जांच और पीजी में रहने वालों का रिकॉर्ड नोट किया जा रहा है ।ट्रैफिक डाइवर्जन सूचना — 15 अगस्त को गुरु नानक स्टेडियम, गांधी ग्राउंड, अमृतसर में होने वाले जिला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान नरूला चौक से दुआबा चौक (टेलर रोड) और नॉवल्टी चौक से क्रिस्टल चौक (एम.एम. मालवीया रोड) के मार्ग कुछ समय के लिए बंद रहेंगे। इन मार्गों की जगह वैकल्पिक रास्तों का उपयोग करें ।कमीशनरेट पुलिस, अमृतसर अमन-शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिन-रात मेहनत कर जनता की सुरक्षा में तत्पर है।

राज्य अल्पसंख्यक आयोग के नए अध्यक्ष डीओए, सीएनआई ने राज्य अल्पसंख्यक आयोग के नए अध्यक्ष का स्वागत किया

अमृतसर, 14 अगस्त (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार को श्री जतिंदर मसीह गौरव को राज्य अल्पसंख्यक आयोग का नया अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए धन्यवाद करते हुए, डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया के पदाधिकारियों ने अमृतसर के गोल्डन गेट पर उनके आगमन पर श्री गौरव का गर्मजोशी से स्वागत किया। यह अवसर उनकी नियुक्ति के उपलक्ष्य में आयोजित एक रोड शो का था। जालंधर से शुरू होकर यह रैली अमृतसर के कोर्ट रोड स्थित सेंट पॉल चर्च में समाप्त हुई, जहाँ इस अवसर पर एक समारोह आयोजित किया गया था ।डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, के वित्त सचिव श्री ओम प्रकाश ने डायोसिस की ओर से श्री गौरव का स्वागत किया। "हम पंजाब सरकार के प्रति अत्यंत आभारी हैं कि उन्होंने राज्य अल्पसंख्यक आयोग का कार्यभार श्री जतिंदर मसीह गौरव जैसे विवेकशील व्यक्ति को सौंपा। हम उनसे आग्रह करते हैं कि वे संप्रदायगत मतभेदों से ऊपर उठें, सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करें, तथा ईसाइयों सहित सभी अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए काम करें। हमें उम्मीद है कि वह उन्हें प्रभावित करने वाले सामान्य मुद्दों की पहचान करेंगे और उनका समाधान करेंगे, विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच गलतफहमियों को दूर करेंगे और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करेंगे,₹ श्री डैनियल बी दास, सचिव, अमृतसर डायोसेसन ट्रस्ट एसोसिएशन (एडीटीए), ने कहा।

नए राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री जतिंदर मसीह गौरव ने कहा, ₹मैं पंजाब में सभी अल्पसंख्यक समुदायों के कल्याण और सशक्तिकरण के लिए काम करने तथा सभी धर्मों के बीच आपसी सम्मान, समझ और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माहौल को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हूं ।₹डायोसिस ऑफ़ अमृतसर, चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, के प्रशासक रेवरेंड अयूब डैनियल , जिन्होंने नव नियुक्त अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष को आशीर्वाद दिया, के नेतृत्व में डायोसिस के पादरीगण, जिनमें रेवरेंड रजनी बाला, रेवरेंड स्टीफन मसीह और रेवरेंड जीवन मसीह शामिल थे, ने उनके भविष्य के प्रयासों की सफलता के लिए प्रार्थना की। सेंट पॉल चर्च, अमृतसर के प्रेस्बिटर इंचार्ज, रैव विनय सनी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डायोसिस के सभी पादरी, ग्लोबल क्रिश्चियन एक्शन कमेटी के संयोजक वलायत मसीह बंटी अजनाला, पंजाब अध्यक्ष लुकास मसीह, अध्यक्ष जस मसीह शुभ, अध्यक्ष जीवन मसीह, अध्यक्ष गुरनाम मसीह, अध्यक्ष जीवन मसीह, अध्यक्ष मुनीर मसीह, अध्यक्ष रोहित मसीह भी उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023